लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–11

काश्मीर की लोक कथाऐं–2

जेम्स हिन्टन नोलिस

1887

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-11
Book Title: Kashmir Ki Lok Kathayen- (Folk-tales of Kashmir-2)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Kashmir

विंडसर¸ कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5
काश्मीर की लोक कथाऐं–2 7
16 परेशान करने वाला दोस्त 9
17 नीच सौतेली माँ 14
18 सच्ची दोस्ती 20
19 तीन अन्धे 35
20 एक पैसे में सब 45
21 घमंडी का सिर नीचा 64
22 दो भाई 85
23 नीच दोस्त 99
24 हायबन्द और ज़ोहरा ख़ातून 105
25 होशियार गीदड़ 123
26 बेवकूफ लड़का 130
27 चार राजकुमार जो पत्थर बन गये 133
28 बहादुर राजकुमारी 144
29 तीन राजकुमार 155
30 मेहनती राजा 165
31 हाथी दाँत का शहर और उसकी सुन्दर राजकुमारी 170
32 अजीब माँग 202
33 अन्यायी राजा और नीच सुनार 205
34 दार्शनिक का पत्थर 212

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र करके 2000 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोऩ नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

काश्मीर की लोक कथाऐं–2

“लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें” नाम की सीरीज़ की यह एक और पुस्तक अब आपके हाथ में प्रस्तुत है भारत के काश्मीर प्रान्त की लोक कथाओं की। यह काश्मीर की लोक कथाओं की पहली पुस्तक थी जिसे जेम्स हिन्टन नोलिस ने पहली बार **1887** में प्रकाशित किया था। उन्होंने इसमें **64** लोक कथाऐं लिखी थीं।[2] उस पुस्तक का दूसरा संस्करण **1893** में प्रकाशित किया गया था। उसी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

भारत में बहुत सारे प्रान्त हैं जिनमें बहुत सारी भाषाऐं बोली जाती हैं। एक दूसरे की भाषा पढ़ना समझना बहुत कठिन काम है इसलिये एक पान्त की भाषा दूसरे प्रान्तों के लोगों के लिये विदेशी भाषा जैसी ही हो जाती है। अपने अपने प्रान्तों की अपनी अपनी लोक कथाऐं हैं। उन दूसरे भाषा वाले प्रान्तों की लोक कथाओं को हिन्दी भाषा भाषी लोगों के पढ़ने के लिये यह प्रयास किया गया है।

तो लीजिये पढ़िये ये लोक कथाऐं भारत के काश्मीर प्रान्त की अब हिन्दी में। लोक कथाओं की अधिकता के कारण यह पुस्तक चार भागों में बॉट दी गयी है। यह है इसका दूसरा भाग।

मूल पुस्तक के बारे में

लोक कथाओं की यह पुस्तक जेम्स हिन्टन नोलिस की लिखी हुई है जिसमें उन्होंने अपने चार साल के काश्मीर के निवास काल में एकत्र की थीं। इसका दूसरा संस्करण **1893** में प्रकाशित किया था। जेम्स एक मिशनरी थे जो यहाँ इतने समय रहे। उन्होंने इस पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि मिशनरी होने के नाते वह बहुत सारे लोगों के सम्पर्क में आये और उन्होंने उन लोगों से बहुत सारी बातें सीखीं। उनके इन कथाओं के संग्रह का मुख्य उद्देश्य काश्मीरी भाषा को जानना था जो वहाँ की स्थानीय भाषा है और दूसरा उद्देश्य वहाँ के लोगों के विचारों और तौर तरीकों को जानना था।

इस संग्रह की कुछ कहानियाँ उन्होंने भारतीय पत्रिकाओं में भी प्रकाशित करवायीं और उन्हीं की सलाह पर यह संग्रह प्रकाशित किया गया। इस संग्रह में से बहुत सारी कथाऐं केवल काश्मीरी हैं जबकि बाकी की कथाऐं भारत में प्रचलित कथाऐं हैं। इसमें की कुछ कथाऐं यूरोप के कई देशों की कथाओं से मिलती जुलती हैं।

वह लिखते हैं कि इन कथाओं के उद्गम स्थान को ढूँढना मेरा उद्देश्य नहीं है पर उन्हें इस बात का यकीन है कि बहुत सारी पूर्वी कहानियाँ चंगेज़ खान के समय में हैन्स ऐन्डरसन[3] के द्वारा यूरोप में ले जायी गयीं। बहुत सारी कहानियों का फारसी भाषा में भी अनुवाद किया गया और उसके बाद सीरिया की भाषा और अरबी भाषा में भी। और शायद ये फिर वहाँ से यूरोप गयीं।

हिन्दी भाषा में इसका यह पहला अनुवाद है।

---

[2] “Folk-Tales of Kashmir”, by James Hinton Knowles. 2nd edition. London, Kegan Paul. 1893. 64 Tales. This book is available in English at the Web Site : https://books.google.ca/books?id=ChaBAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false

[3] Hans Andersen

16 परेशान करने वाला दोस्त[4]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार काश्मीर में एक मुकद्दम[5] अपने गॉव के एक आदमी का दोस्त बन गया। यह गॉव का आदमी आगे चल कर इतना बुरा साबित हुआ कि वह उससे छुटकारा पाने की सोचने लगा।

पर इसे कहना जितना आसान था करना उतना ही मुश्किल था क्योंकि उनके बीच इतनी पक्की दोस्ती हो गयी थी कि वह यह भी नहीं चाहता था कि उसको बुरा लगे। इसके अलावा उसने उस आदमी को अपने कुछ भेद भी बता दिये थे।

आखिर एक तरकीब उसके दिमाग में आयी। वह अपनी पत्नी से बोला — "प्रिये जैसे ही हम लोग शाम का खाना खाने बैठेंगे तुम देखोगी कि वह आदमी इस आशा में यहॉ आयेगा कि उसको भी कुछ खाना मिल जायेगा।

इसलिये मैं अभी बाहर जाता हूॅ और फिर अपना खाना खाने के लिये बाद में घर वापस आता हूॅ। तुम थोड़ा सा खाना खा लेना और बाकी बचा हुआ खाना उठा कर रख देना। जब वह घर आये तो उससे कहना कि हम लोगों ने खाना खा लिया है।

---

[4] The Troublesome Friend (Tale No 16)

[5] Chief man of a village

और अगर वह यह कहे "कोई बात नहीं तुम मेरे लिये कुछ खाना बना दो।" तो तुम उससे कह देना कि ऐसा शर्मनाक काम तुम अपने पति की गैरहाजिरी में नहीं कर सकतीं। उसके साथ तमीज से पेश आना पर उसको खाना नहीं देना।"

ऐसा कह कर मुकद्दम चला गया। कुछ देर में ही वह आदमी आया। जब वह आया तो पत्नी ने वैसा ही किया जैसा कि उसके पति ने उससे करने के लिये कहा था।

उसने उससे कहा — "मुझे अफसोस है कि मुकद्दम तो बाहर गये हैं। अगर वह यहॉ होते तो यकीनन आपके लिये एक मुर्गा मार देते।"

वह आदमी बोला — "इसमें अफसोस की क्या बात है। मैं तो हूॅ यहॉ। खाने के लिये मुर्गा मैं मारे देता हूॅ।"

पत्नी बोली — "नहीं नहीं। अगर मेरे पति को यह पता चल गया तो वह मुझसे बहुत नाराज होंगे। आप परेशान न हों और अभी यहॉ से चले जायें और तब आयें जब मुकद्दम घर पर हों।"

पर वह आदमी भी आसानी से जाने वाला नहीं था। वह बोला — "अरे इसमें परेशानी की क्या बात है। आप मेरा यकीन करें मैं भी थोड़ा सा काम करना चाहता हूॅ। मैं जब तक एक मुर्गा मारता हूॅ तब तक आप उसको पकाने के लिये आग जलाइये। जब मुकद्दम आयेगा तो मैं उसको सब कुछ समझा दूॅगा।" ऐसा कहते हुए वह

बाहर मैदान में निकल गया जहॉ मुकद्दम अपने मुर्गे मुर्गियॉ रखता था।

वहॉ से उसने सबसे अच्छा एक मुर्गा पकड़ा और उसको मारने ही वाला था कि मुकद्दम की पत्नी बोली — “ओह उसे मत मारो। मेरे पति खाना ले कर अभी आते ही होंगे।”

पर वह आदमी तो मानने वाला था नहीं। उसने मुर्गा लिया और उसे खटाक से मार दिया। मुर्गा उसने मुकद्दम की पत्नी को देते हुए कहा कि वह उसको उसके लिये पका दे। इस मुश्किल से बचने का कोई और तरीका न देख कर पत्नी उसको पकाने के लिये चली गयी। खाना तैयार होने से पहले पहले ही मुकद्दम घर लौट आया।

आते ही उसने अपने दोस्त को सलाम किया और कुछ सामान्य बातें पूछने के बाद वह तुरन्त ही रसोईघर की तरफ दौड़ा। उसने अपनी पत्नी से पूछा कि उसने क्या किया तो पत्नी ने उसे सब कुछ बता दिया।

वह बोला — “चलो इसमें कोई ज़्यादा नुकसान नहीं हुआ। हमें इसको अच्छी तरह से देखना है। सुनो जब मुर्गा तैयार हो जाये तो तुम इसे उसे थोड़ा सा ही देना और तॉबे के बर्तन में देना। और बाकी बचा मुझे दे देना और मिट्टी के बर्तन में देना।”

सो जब खाना तैयार हो गया तो पत्नी ने वैसा ही किया। पर वह दोस्त तो बहुत चालाक था। उसने देखा कि उसको बहुत थोड़ा

सा मुर्गा परोसा गया है और मुकद्दम के सामने तो बहुत सारा मुर्गा रखा है।

वह बोला — "नहीं नहीं यह नहीं हो सकता कि मैं तॉबे के बर्तन में खाऊॅ और तुम मिट्टी के बर्तन में खाओ। नहीं नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता।"

कहते हुए उसने मुकद्दम के सामने रखा मिट्टी का बर्तन अपने सामने खिसका लिया और अपने आगे का तॉबे का बर्तन मुकद्दम के आगे खिसका दिया। इस तरह मुकद्दम की सारी कोशिश बेकार गयी। उसकी तो जैसे सॉस ही रुक गयी।

यह मामला इस तरह हाथ से जाते देख कर वह अपनी पत्नी से बोला — "कई दिनों से एक देव[6] हमारे घर को डरा रहा है। एक दो बार वह इस समय भी आया है और उसने घर की सारी रोशनी बुझा दी है।"

आदमी बोला — "क्या सचमुच?"

पत्नी ने पति का इशारा समझा और तुरन्त ही लैम्प बुझा दिया। लैम्प बुझते ही घर में चारों तरफ ॲधेरा छा गया। ॲधेरे में ही मुकद्दम ने अपने दोस्त के सामने से मिट्टी का बर्तन उठाने की कोशिश की पर दोस्त ने भी मुकद्दम के हाथों की हलचल को भॉप लिया। उसने अपने बर्तन को अपने बॉये तरफ रख लिया और दूसरे हाथ में

---

[6] Synonym for Rakshas

लैम्प पकड़ लिया और उससे मुकद्दम को बड़ी बेरहमी से पीटना शुरू कर दिया।

बेचारा मुकद्दम चिल्लाया "ओह ओह।" उधर मुकद्दम की पत्नी चिल्लायी — "तुम मेरे पति के साथ क्या कर रहे हो?"

दोस्त बोला — "कुछ नहीं। यह देव मेरा खाना चुराने की कोशिश कर रहा है। सावधान रहना।" कह कर वह लैम्प से मुकद्दम को जितनी जोर से मार सकता था मारता रहा।

आखिर वह लैम्प टूट गया तो वह दोस्त अपना मिट्टी का बर्तन उठा कर वहाँ से भाग लिया। मुकद्दम बेचारा कुछ न कर सका बल्कि और बस पिट कर रह गया।

17 नीच सौतेली माँ[7]

एक दिन एक ब्राह्मण ने अपनी पत्नी को अपने बिना खाना खाने से मना किया ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह बकरी बन जाये। इसके जवाब में उसकी पत्नी ने भी उससे यही कहा कि वह भी उसके बिना खाना नहीं खायेगा ताकि वह कहीं चीता न बन जाये। दोनों राजी हो गये।

इस तरह काफी दिन निकल गये और दोनों में से किसी ने अपना वायदा नहीं तोड़ा। दोनों एक दूसरे के साथ ही खाना खाते थे पर एक दिन उस ब्राह्मण की पत्नी ने अपने बच्चों को खाना देते समय उस खाने में से चखने के लिये एक कौर खुद खा कर देख लिया।

उस समय क्योंकि उसका पति वहाँ था नहीं सो उसकी पत्नी तुरन्त ही एक बकरी बन गयी। जब वह ब्राह्मण घर आया तो उसने देखा कि एक बकरी उसके घर के चारों तरफ घूम रही है।

यह देख कर वह बहुत दुखी हुआ क्योंकि वह तुरन्त ही जान गया कि वह बकरी और कोई नहीं बल्कि उसकी अपनी प्यारी पत्नी थी। उसने उसको अपने घर के आँगन में बाँध दिया और उसकी बड़ी सावधानी से सेवा करने लगा।

---

[7] The Wicked Stepmother (Tale No 17)

कुछ साल बाद उसने दूसरी शादी कर ली पर उसकी दूसरी पत्नी उसकी पहली पत्नी के बच्चों के साथ बिल्कुल भी अच्छा व्यवहार नहीं करती थी। वह तो उनको खाना भी बहुत कम देती थी। वे बच्चे बेचारे बहुत परेशान रहते थे।

उनकी बकरी माँ उनकी शिकायतों को सुनती रहती पर वह बेचारी भी कुछ नहीं कर सकती थी।

उन बच्चों की माँ ने यह भी देखा कि उसके बच्चे दुबले होते जा रहे हैं। इसलिये एक दिन उसने अपने बच्चों में से एक बच्चे को अपने पास बुलाया और उससे दूसरों को भी यह बात चुपचाप बताने के लिये कहा कि जब भी उनको भूख लगे तो वे एक डंडी से उसके सीगों को मारें। ऐसा करने से उसके सीगों में से कुछ खाना निकल आयेगा जिसे वे खा सकते थे।

बच्चों ने ऐसा ही किया। अब जब भी उनको भूख लगती तो वे अपनी बकरी माँ के सींगों में डंडी मारते, इससे उनमें से कुछ खाना निकल आता और वे उसको खा कर अपना पेट भर लेते। इससे धीरे धीरे उनकी तन्दुरुस्ती अच्छी होने लगी।

पर यह तो उस सौतेली माँ की उम्मीदों के खिलाफ हो रहा था। उसके सौतेले बच्चे तो बजाय दुबले होने के और ज़्यादा तन्दुरुस्त होते जा रहे थे जबकि वह खुद उनको बहुत कम खाना देती थी। वह उनको इतना तन्दुरुस्त देख कर बहुत ही ताज्जुब में पड़ गयी कि यह सब कैसे हो रहा था।

कुछ समय बाद उस ब्राह्मण की दूसरी पत्नी ने एक एक आँख की बेटी को जन्म दिया। वह अपनी उस कानी बेटी को बहुत प्यार करती थी और उसकी किसी भी जरूरत को तुरन्त ही पूरा करने को तैयार रहती थी जिसको वह समझती थी कि वह उसको चाहिये।

कुछ दिनों बाद जब वह लड़की काफी बड़ी हो गयी, चलने फिरने लगी, बोलने चालने लगी, अच्छी तरह बात करने लगी तो उसकी माँ उसको दूसरे बच्चों के साथ बाहर खेलने के लिये भेजने लगी।

उसने उसको यह भी कहा कि वह अपने बड़े भाई बहिनों पर निगाह रखे कि वे कब और कैसे खाते पीते हैं। लड़की ने कहा "ठीक है।"

वह लड़की उनके साथ सारे दिन रही और उसने वह सब कुछ देखा जो उनके साथ हुआ।

यह सुन कर कि बकरी उसके सौतेले बच्चों को खाना दे रही थी वह दूसरी पत्नी बहुत गुस्सा हुई। उसने तय कर लिया कि वह उस बकरी को जल्दी से जल्दी मरवा देगी।

एक दिन उसने बहाना किया कि वह बहुत बीमार है और अपने इलाज के लिये एक हकीम[8] को बुलवाया। उसने उस हकीम को रिश्वत दी और कहा कि वह उसके लिये दवा के तौर पर बकरी का माँस खाने के लिये बताये। उस हकीम ने ऐसा ही किया।

[8] Hakeem (or Hakim) – a traditional doctor using Greek medical system

ब्राह्मण अपनी पत्नी की बीमारी के लिये बहुत चिन्तित था और हालाँकि वह बकरी को बिल्कुल मारना नहीं चाहता था फिर भी वह अपनी दूसरी पत्नी को ठीक करने के लिये उस बकरी को मारने को लिये तैयार हो गया।

पर यह सुन कर उसकी पहली पत्नी के छोटे छोटे बच्चे बहुत रोये। वे बहुत दुखी हो कर अपनी बकरी माँ के पास गये और उसको जा कर सब बताया।

उनकी माँ ने कहा — “मेरे प्यारे बच्चों रोओ नहीं। जो ज़िन्दगी मैं जी रही हूँ ऐसी ज़िन्दगी से तो मर जाना अच्छा है। रोओ नहीं। मुझे तुम्हारे खाने को ले कर कोई दुख नहीं है क्योंकि अगर तुम मेरा कहा करोगे तो खाना तो तुमको उसके बाद भी मिलता रहेगा।

मेरे मरने के बाद तुम लोग मेरी हड्डियाँ इकट्ठी कर लेना और उनको किसी ऐसी जगह दबा देना जहाँ उनको कोई ढूँढ न सके। फिर जब भी तुमको भूख लगे तो तुम वहाँ आ जाना तुमको वहाँ खाना मिल जायेगा।”

उस बकरी ने उनको यह सलाह बड़े समय से दे दी थी क्योंकि जैसे ही उसने अपनी बात खत्म की और उसके बच्चे वहाँ से गये कि तभी एक कसाई अपना बड़ा सा चाकू ले कर वहाँ आ पहुँचा और उसने उस बकरी को मार दिया।

उस बकरी के शरीर को टुकड़ों में काट कर पका दिया गया। ब्राह्मण की पत्नी ने उस बकरी के माँस को खाया पर बच्चों को केवल हड्डियाँ ही मिलीं।

बच्चों ने उन हड्डियों का वही किया जो उनकी बकरी माँ ने उनसे करने के लिये कहा था। उन्होंने उसकी हड्डियाँ एक ऐसी जगह दबा दीं जहाँ उन्हें कोई ढूँढ नहीं सकता था।

जब उनको खाने की जरूरत होती तो वे वहाँ जाते और उन हड्डियों से खाना माँग लेते और उनको खाना मिल जाता। सो अब उनको फिर से खाना रोज और खूब मिल रहा था। अब वे भूखे भी नहीं रहते थे। उनकी तन्दुरुस्ती फिर से ठीक होती जा रही थी।

उस बकरी के मर जाने के कुछ समय बाद ब्राह्मण की पहली पत्नी की एक बेटी पानी के नाले में अपना चेहरा धो रही थी कि उसकी नाक की लौंग[9] खुल गयी और पानी में गिर गयी। एक मछली पानी के साथ साथ उसको भी पी गयी।

अब हुआ यह कि एक मछियारे ने वह मछली पकड़ ली और राजा के रसोइये को बेच दी।

रसोइये ने जब उस मछली को पकाने के लिये काटा तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके अन्दर तो नाक की एक

[9] Translated for the words "Nose Ring". Nose ring is very common to wear for Indian girls and women. It can be of several types and shapes. Two of their shapes are shown here. See their pictures above.

लौंग थी। वह उसको ले कर राजा के पास गया तो राजा को भी उसमें रुचि हो गयी।

राजा ने अपने राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि जिस किसी की भी नाक की लौंग खो गयी हो वह उसको राजा से आ कर ले जाये।

कुछ ही दिनों में उस लड़की का भाई राजा के पास आया और बोला कि वह नाक की लौंग उसकी बहिन की थी। उसकी यह नाक की लौंग उसका चेहरा धोते समय नाले में गिर पड़ी थी।

राजा ने उस लड़की को बुलाया तो वह उसकी सुन्दरता और अच्छा व्यवहार देख कर इतना प्रभावित हुआ कि उसने उससे शादी कर ली और उसके परिवार की भी खूब सहायता की।

18 सच्ची दोस्ती[10]

एक बार की बात है कि एक राजा और उसका वज़ीर दोनों बहुत मुश्किल में थे क्योंकि दोनों के कोई बेटा नहीं था। दोनों की यह एक सी मुश्किल उन दोनों को एक दूसरे के और करीब ले आयी थी।

वे एक दूसरे के साथ ही में खुश रहते। दोनों अलग अलग तो बस कभी कभार ही दिखायी पड़ते। जहाँ राजा रहता वहीं उसका वज़ीर भी रहता और जहाँ वज़ीर रहता राजा भी वहीं मिलता।

एक सुबह वे दोनों जंगल में शिकार करने गये। वहाँ उनको एक साधु मिल गया जो आग के सामने उकड़ूँ बैठा हुआ था। लगता था कि वह पूजा कर रहा था क्योंकि उसने आने वालों की तरफ देखा ही नहीं।

राजा बोला — "चलो चल कर इससे बात करते हैं। हो सकता है कि यह भला आदमी हमारा कुछ काम कर दे।"

सो दोनों ने उसके सामने लेट कर उसको प्रणाम किया और अपना दुखड़ा रोया।

सिर नीचे झुकाये झुकाये ही साधु बोला — "तुम दुखी मत हो। तुम लोग दुखी बिल्कुल मत हो। लो ये दो आम ले जाओ एक आम

---

[10] The True Friendship (Tale No 18)

तुम अपनी पत्नी को खिला देना और यह दूसरा आम दूसरे की पत्नी को खिला देना। तुम दोनों की पत्नियों के बच्चे हो जायेंगे।"

साधु को बहुत बहुत धन्यवाद दे कर राजा और उसका मन्त्री दोनों अपने अपने घर लौट गये और आम अपनी अपनी पत्नियों को खिला दिये। ठीक समय पर दोनों ने एक एक लड़के को जन्म दिया।

जब ये दोनों लड़के पैदा हुए तो राजा के घर में और वज़ीर के घर में ही नहीं बल्कि सारे राज्य में खुशियाँ मनायी गयीं। ब्राह्मणों को बिना नाप तौल के बहुत सारी भेंटें दी गयीं। गरीब लोगों को खाना खिलाया गया। सारे कैदी छोड़ दिये गये। देश में ऐसा समय पहले कभी किसी ने नहीं देखा था।

जैसा कि सोचा जा सकता है दोनों घरों में दोनों बच्चों की खास देखभाल की गयी। जब वे बहुत छोटे थे तो उनकी देखभाल के लिये कई दाइयाँ रखी गयीं और जब वे कुछ बड़े हो गये तब उनको कई टीचर पढ़ाने के लिये रखे गये। उनको सब तरह की शिक्षा दिलवाने के लिये किसी पैसे या कोशिशों किसी तरह की कोई कमी नहीं बरती गयी। इससे वे दोनों शिक्षा और कला दोनों में बहुत अच्छे निकले।

अपने पिताओं की तरह वे भी आपस में एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे और दोनों अक्सर साथ साथ ही रहते।

एक दिन वे दोनों शिकार खेलने के लिये एक साथ जंगल में गये। वहाँ वे दोनों घंटों तक शिकार की खोज में घूमते रहे। काफी देर बाद राजकुमार बहुत थक गया और उसे प्यास भी लग आयी। वे अपने घोड़ों से उतर गये और उन्होंने अपने अपने घोड़े एक पेड़ से बाँध दिये।

राजकुमार वहीं घोड़ों के पास बैठ गया और वज़ीर का बेटा पानी की खोज में चल दिया। उसको जल्दी ही एक छोटी सी नदी मिल गयी। वह राजकुमार की प्यास को तो भूल गया और उस नदी के स्रोत को ढूँढने चल दिया।

वह एक दो मील ही गया होगा कि उसको उसका स्रोत मिल गया। वहाँ उसने एक बहुत सुन्दर परी को एक शेर के सहारे बैठा देखा। उसने यह भी देखा कि वह शेर उस परी से डरा हुआ था।

यह दृश्य देख कर तो वह आश्चर्य से चौंक गया और इसे बताने के लिये राजकुमार के पास दौड़ गया। साथ में उसने राजकुमार को पिलाने के लिये थोड़ा सा पानी भी ले लिया।

जब वजीर का बेटा राजकुमार के पास पहुँचा तो राजकुमार ने पूछा — "अरे इतनी देर तक तुम कहाँ रह गये थे? और तुम ऐसे डरे डरे से क्यों दिखायी दे रहे हो तुम्हें क्या हुआ है?"

वजीर के बेटे ने जवाब दिया — "कुछ नहीं। कुछ नहीं।"

राजकुमार बोला — "कुछ तो हुआ है। तुम्हारा चेहरा बता रहा है कि तुम्हारे साथ जरूर ही कुछ हुआ है।"

तब वज़ीर के बेटे ने उसे बताया कि उसने एक बहुत सुन्दर लड़की को देखा है। वह शेर के सहारे बैठी हुई थी और वह शेर उससे बहुत डरा हुआ लग रहा था – ऐसा था उसकी सुन्दरता का जादू।

राजकुमार बोला — "मैं भी ऐसी लड़की को देखना चाहूँगा। तुम मुझे उसके पास ले चलो।"

वज़ीर का बेटा राजी हो गया और दोनों उस लड़की की तरफ चल दिये। वहाँ जा कर उन्होंने देखा कि शेर तो उस परी की गोद में सिर रखे सो रहा है।

वज़ीर का बेटा बोला — "डरो मत। हम उतनी देर में उस लड़की को पकड़ लेते हैं जबकि शेर सोया हुआ है।"

वे दोनों उस लड़की के और करीब चले गये। वज़ीर के बेटे ने शेर का सिर उठाया और उसको जमीन पर लिटा दिया। जबकि राजकुमार ने लड़की को पकड़ा और उसको साथ ले कर वहाँ से चल दिया। वज़ीर का बेटा वहीं रह गया।

जब शेर जागा तो वहाँ वज़ीर के बेटे के अलावा किसी और को न देख कर बोला — "अरे वह परी कहाँ गयी?"

वज़ीर का बेटा बोला — "मेरा दोस्त उसको ले गया है।"

शेर बोला — "तुम्हारा दोस्त? तुम उसको अपना दोस्त कहते हो जो तुमको मरने के लिये यहाँ छोड़ गया है। वह तुम्हारा दोस्त नहीं वह तो तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन है। कोई सच्चा दोस्त इस

तरीके से अपने दोस्त के साथ नहीं करेगा जैसा उसने तुम्हारे साथ किया है। अब मैं तुम्हें सच्चे दोस्तों की एक कहानी सुनाता हूँ।

एक बार की बात है कि तीन दोस्त थे। एक राजकुमार था एक ब्राह्मण था और एक बढ़ई था। इन तीनों के पास अपनी अपनी खास चतुराई थी। राजकुमार मुश्किल से मुश्किल और पेचीदा से पेचीदा मामलों को बहुत जल्दी सुलझा देता था। ब्राह्मण मरे हुए आदमी को ज़िन्दा कर सकता था। और बढ़ई चन्दन की लकड़ी का एक ऐसा घर बना सकता था जो उसके मालिक के कहने पर कहीं भी जा सकता था।

एक दिन ब्राह्मण और उसके माता पिता में कुछ कहा सुनी हो गयी तो उसके माता पिता ने उसे घर से निकाल दिया। इस परेशानी के समय में वह अपने दोनों दोस्तों के पास पहुँचा और जा कर उन्हें सब हाल बताया।

उसने उनसे कहा कि वे उसके साथ किसी दूर देश चलें। राजकुमार और बढ़ई दोनों राजी हो गये और तीनों वह देश छोड़ कर वहाँ से कहीं और चल दिये। वे लोग बहुत दूर नहीं गये थे कि राजकुमार किसी वजह से रुक गया। पर बढ़ई और ब्राह्मण आगे चलते रहे।

कुछ देर बाद राजकुमार जल्दी जल्दी आगे चला ताकि वह अपने दोस्तों को पकड़ सके पर बदनसीबी से वह दूसरे रास्ते पर चला गया और उनको न पा सका।

वह इस आशा में चलता रहा चलता रहा कि वह अपने दोस्तों को ढूँढ लेगा पर जब काफी दूर जाने पर भी वे उसको नहीं मिले तो उसको लगा कि वे इतनी तेज़ क्यों जा रहे थे कि वह उनको पकड़ ही नहीं पा रहा था।

पर इस बीच ब्राह्मण और बढ़ई दोनों बहुत ही धीरे चल रहे थे और सोच रहे थे कि राजकुमार अब तक उनको पकड़ क्यों नहीं पाया वे लोग तो बहुत धीरे धीरे जा रहे थे।

आखिर यह सोच कर उन्होंने उसके आने की आशा छोड़ दी कि शायद उसको घर की याद आ रही होगी तो वह घर वापस चला गया होगा।

चलते चलते राजकुमार एक बहुत बड़े मैदान में आ निकला जिसके बीच में एक बहुत बड़ी और शानदार बिल्डिंग खड़ी थी। उसने सोचा यहाँ कौन रहता है। यकीनन कोई ताकतवर आदमी ही रहता होगा। मैं जा कर मालूम करता हूँ।

सोचते हुए वह उस बिल्डिंग के दरवाजे तक गया और दरवाजा खटखटाया तो एक बहुत ही सुन्दर लड़की ने दरवाजा खोला और बड़ी मीठी आवाज में उसको अन्दर आने के लिये कहा। जब वह अन्दर आ गया तो वह रो पड़ी।

राजकुमार ने उससे उसके रोने की वजह पूछी तो वह बोली — “तुम्हारी सुन्दरता और तुम्हारी जवानी देख कर मुझे तुम पर दया आती है। अनजाने में ही तुम अपनी मौत के मुँह में आ फँसे हो।

तुमने यहाँ आने से पहले यहाँ के बारे में जानने की कोशिश क्यों नहीं की कि तुम कहाँ जा रहे हो।

क्या तुमको पता नहीं कि यहाँ एक राक्षस रहता है जिसने कई मीलों दूर तक के सारे आदमियों को खा लिया है। अफसोस अब तुम्हें मैं क्या बताऊँ। मुझे डर है कि वह तुम्हें भी खा जायेगा।"

राजकुमार बोला — "नहीं नहीं। तुम इतनी नाउम्मीद न हो। धीरज रखो। मुझे उसके बारे में कुछ बताओ तो शायद मेरी जान बच जाये।"

वह लड़की सिसकते हुए बोली — "पर मुझे पता नहीं कि मैं तुम्हारी सुरक्षा के लिये क्या करूँ।"

फिर वह उसको मकान के पीछे वाले कमरे की तरफ ले गयी और उसमे रखे एक बड़े बक्से में उसको बन्द कर दिया और उससे बोली — "अब तुम यहाँ तब तक चुपचाप रहो जब तक मैं यहाँ दोबारा आती हूँ। भगवान तुम्हारी रक्षा करें।"

शाम को राक्षस लौटा तो उसकी तेज़ सूँघने की ताकत ने उसे बता दिया कि वहीं कहीं कोई आदमी मौजूद था।

उसने लड़की से पूछा कि क्या तुम्हारे अलावा यहाँ कोई और भी आदमी है। कौन है वह कहाँ है वह जल्दी बताओ मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है

लड़की बोली — "लगता है आज तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। यहाँ कोई आदमी नहीं आया। तुम क्या समझते हो कि कोई

तुम्हारे यहाँ आने की हिम्मत करेगा जो सारी दुनियाँ के लिये भयानक है।"

यह सुन कर राक्षस चुप हो गया। स्त्री ने देखा कि उसके शब्दों का असर उस पर हो गया है तो उसकी हिम्मत और बढ़ गयी। उसको उससे मजाक सूझा तो उसने उससे उसकी ज़िन्दगी के बारे में कुछ और जानना चाहा।

वह बोली — "तुम मुझे रोज इस घर में अकेला छोड़ जाते हो। और जब तुम चले जाते हो तो मुझे यही पता नहीं होता कि तुम कब वापस लौटोगे। कभी कभी मुझे लगता है कि शायद तुम कभी वापस नहीं लौटोगे। और तब मैं सोचती हूँ कि मैं किधर जाऊँगी क्या करूँगी।

तुम्हारी वजह से लोग मुझसे नफरत करते हैं तो मुझे लगता है कि किसी दिन वे मुझे मार देंगे। तुम ही मुझे बताओ कि क्या मुझे डरने की कोई जरूरत नहीं है?"

राक्षस बोला — "प्रिये रो मत। तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है। क्योंकि मैं कभी नहीं मरूँगा।" फिर उस बिल्डिंग के एक बहुत बड़े खम्भे की तरफ इशारा करते हुए वह बोला — "जब तक यह खम्भा न टूट जाये मैं नहीं मर सकता। पर यहाँ कौन है जो यह बात जाने।"

अगली सुबह जैसे ही राक्षस बाहर गया वह लड़की अन्दर गयी और उसने राजकुमार को आजाद कर दिया और उसको रात वाली

सारी बातें बता दीं। राजकुमार यह सब सुन कर बहुत खुश हुआ। वह बोला — "बस यही समय है। मैं इस खम्भे को तोड़ देता हूँ और उस राक्षस को मार देता हूँ।"

ऐसा कह कर उसने खम्भे को मार मार कर तोड़ दिया जब तक उसके सैकड़ों टुकड़े न हो गये। ऐसा लग रहा था कि राजकुमार की हर चोट सीधी राक्षस पर पड़ रही थी क्योंकि जैसे ही वह खम्भे को मारता था राक्षस बहुत ज़ोर से चिल्लाता था। जब खम्भा टूट कर गिर गया तो वह राक्षस भी मर गया।

अब राजकुमार उस सुन्दर लड़की के साथ उस घर में रहने लगा। आस पास के लोग उसका राक्षस को मारने के लिये धन्यवाद करने के लिये आये।

उसके बाद उस देश में शान्ति और खुशहाली छा गयी। आस पास की जमीन में फिर से खेती होने लगी। गाँव बसने लगे। वातावरण में लोगों की हँसी और संगीत गूँजने लगा।

पर सच्ची खुशी हमेशा के लिये तो नहीं रहती। एक दिन वह लड़की अपने घर की एक खिड़की के सामने अपने बाल सँवार रही थी। बाल सँवार कर कंघी उसने खिड़की की दीवार पर रख दी कि एक कौआ वहाँ आया और उस कंघी को ले कर उड़ गया। वह उसको बहुत दूर समुद्र के पास ले कर उड़ गया और वहाँ जा कर उसको पानी में गिरा दिया।

वहाँ उसको एक बड़ी सी मछली ने निगल लिया और इस मछली को इत्तफाक से एक मछियारे ने पकड़ लिया। उसने देखा कि मछली बहुत बढ़िया थी सो उसे वह राजा के महल में राजा के खाने के लिये दे आया।

जब रसोइया मछली साफ कर रहा था तो उसको उसके पेट में एक कंघी मिली। उसको यह बड़ा अजीब सा लगा सो वह उसको राजा के पास ले गया। राजा ने जब वह कंघी देखी तो उसने उसके मालिक से मिलने की इच्छा प्रगट की।

उसने चारों तरफ अपने आदमी भेजे कि वह उस कंघी वाली का पता लगा कर लायें। और उसको बहुत बड़ा इनाम देने का वायदा किया जो उसे उसके पास लायेगा।

कुछ समय बाद एक स्त्री मिली जिसने कहा कि वह उस कंघी को पहचानती है और उसने यह वायदा भी किया कि वह उस कंघी की मालकिन से राजा को मिलवा देगी।

वह राजकुमार की पत्नी से मिली और बहुत जल्दी ही उनके परिवार में घुलमिल गयी। इतना ही नहीं बल्कि उसको घर में रहने के लिये भी बुला लिया गया जो उसने तुरन्त ही स्वीकार कर लिया।

उसने देखा कि जब तक राजकुमार ज़िन्दा है तब तक वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकती तो उसने राजकुमार को जहर दे दिया और हकीम को रिश्वत दे कर उसकी पत्नी से यह कहलवा दिया कि वह अपनी मौत ही मरा है।

उफ़ राजकुमार की पत्नी तो राजकुमार की मौत पर बहुत दुखी हुई और बहुत रोयी। उसके इतना दुखी होने पर तो लोगों को लगा कि वह तो मर ही जायेगी। पर उसने उसकी लाश को नहीं छोड़ा। उसने उसको एक मजबूत बक्से में बन्द कर के अपने प्राइवेट कमरे में रख लिया।

उसने अपने पति से उसके दो दोस्तों के बारे में अक्सर सुना था कि वे क्या कर सकते थे। उसको यह आशा थी कि एक दिन वह उनसे जरूर मिलेगी और अपने पति को ज़िन्दा करवा लेगी।

जैसे ही उस स्त्री को मौका लगा उसने उस लड़की को उसका घर छोड़ने के लिये और अपने साथ रहने के लिये कहा। कहा कि वहाँ तो वह काफी परेशान थी कुछ दिन वह वहाँ से कहीं दूर रह लेगी तो उसको थोड़ी शान्ति मिल जायेगी। लड़की राजी हो गयी और उसके साथ चली गयी।

अपने घर आते ही उस स्त्री ने राजा को खबर की कि वह अपने उद्देश्य में सफल हो गयी है। राजा वहाँ आया और उस लड़की को जबरदस्ती अपने महल ले गया और उससे प्रार्थना की कि वह उसके साथ उसकी रानी बन कर रहे।

लड़की बोली कि वह उससे शादी तो कर लेगी पर उसको छह महीने का समय दिया जाये क्योंकि उसके पंडित ने उससे ऐसा करने के लिये ही कहा था।

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और उस दिन का इन्तजार करने लगा जब वह दिन आयेगा जब वह उस लड़की से शादी कर पायेगा।

उसके लिये उसने एक छोटा सा महल सड़क के किनारे बनवा दिया था। वह उसी में अकेली रहती थी। इस बीच वह लड़की भगवान से यह मनाती रही कि उसके पति के दोनों दोस्त कहीं से उसे मिल जायें तो वह इस राजा से शादी करने से बच जाये।

वह हर जगह पूछताछ करती रही। वह हमेशा अपनी खिड़की पर ही बैठी रहती और इस आशा में बाहर की तरफ देखती रहती कि शायद वे दोनों वहाँ से कभी गुजरें।

एक दिन उसने दो आदमी अपने घर की तरफ आते देखे तो उसने उनसे पूछा — "आप लोग कौन हैं और कहाँ से आये हैं।"

वे बोले — "हम लोग यात्री हैं और काफी यात्रा करने के बाद यहाँ तक पहुँचे हैं। हमारो साथ हमारा एक दोस्त राजकुमार भी था पर अब वह खो गया है हम उसी को ढूँढते हैं।"

लड़की बोली — "आप अन्दर आइये और थोड़ा आराम कीजिये फिर मुझे अपने खोये हुए दोस्त के बारे में कुछ बताइये। शायद मैं आपके खोये हुए दोस्त को ढूँढने में आपकी कुछ सहायता कर सकूँ।"

सो वे दोनों महल में चले गये और उस लड़की के पास बैठ कर उन्होंने उसको अपनी सारी कहानी बतायी। लड़की बोली —

"भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि आप लोग यहाँ हैं पर मुझे अफसोस है कि राजकुमार तो मर चुका है।"

ब्राह्मण बोला — "उसकी आप चिन्ता न करें मैं उसको ज़िन्दा कर लूँगा। भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि हम ठीक जगह पर पहुँच गये। भगवान आपकी हर इच्छा पूरी करे आप हमें राजकुमार का शरीर दिखा दीजिये।"

लड़की बोली — "पर ज़रा ठहरिये। हमको बड़ी सावधानी से काम लेना है। इस देश के राजा को मुझसे बहुत प्यार हो गया है। मेरी प्रार्थना पर वह शादी के लिये छह महीने तक मेरा इन्तजार करेगा। छह महीने पूरे होने वाले हैं और छह महीने पूरे होते ही वह मुझको यहाँ से ले जायेगा।

हम लोगों को बहुत ही सावधानी से काम करना है क्योंकि राजा ने मेरे चारों तरफ बहुत सारा पहरा लगा रखा है। जो कुछ भी यहाँ होता रहता है ये पहरेदार जा कर राजा को सब बताते रहते हैं। मुझे यकीन है कि आपका यहाँ होना भी राजा को पता चल गया होगा। अब देखना यह है कि हम यहाँ से निकलें कैसे।"

बढ़ई बोला — "मैम आप डरिये नहीं। अगर आप मुझे एक छोटा सा चन्दन की लकड़ी का टुकड़ा ला दें तो मैं उससे एक ऐसा महल बना दूँगा जो उसके मालिक की इच्छा पर इधर से उधर आ जा सकेगा।"

लड़की बोली "ठीक है मैं देखती हूँ।"

इसी समय उस लड़की ने एक दूत राजा के महल की तरफ एक सन्देश ले कर भेजा — "मैंने आपसे शादी करने का फैसला किया है। हमारी शादी का दिन पास आ रहा है। आप मुझसे खुश रहें आप मुझे तीन सौ मन[11] चन्दन की लकड़ी भिजवा दें।"

राजा ने तुरन्त ही उसकी बात मान कर उसको तीन सौ मन चन्दन की लकड़ी भिजवा दी और बढ़ई ने उससे मकान बनाना शुरू कर दिया। जब मकान बन कर तैयार हो गया तो लड़की ने राजा को एक और सन्देश भेजा।

"ओ भले शानदार राजा हमारी शादी का दिन अब पास आ रहा है तो आप मेरी भाभी और ननद को यहाँ तुरन्त आने की इजाज़त दें। मैं अपनी शादी के बारे में उनसे कुछ सलाह लेना चाहती हूँ।"

राजा ने उसकी यह प्रार्थना भी मान ली। जैसे ही वे दोनों स्त्रियाँ उस लड़की के पास चन्दन के मकान में पहुँची वैसे ही बढ़ई ने उस मकान को राक्षस के मकान के पास जाने के लिये कहा। वहाँ उनको राजकुमार मिल जाता और वे लोग राजा से दूर आराम से रहते।

बढ़ई के कहते ही चन्दन का मकान उड़ चला और वह इतनी बेआवाज उड़ा कि किसी को पता ही नहीं चला कि क्या हो रहा है। वे सब तो बस उसकी बनावट की ही तारीफ करने में लगी थीं कि

[11] Translated for the word "Mound". One Mound is equal to 40 Seer.

अचानक उन्होंने अपने आपको मरे हुए राक्षस के महल के पास पाया।

लड़की ब्राह्मण को राजकुमार की लाश के पास ले गयी। ब्राह्मण ने बस उससे अपना हाथ छुआया कि वह ज़िन्दा हो गया। सब लोगों में खुशी की लहर दौड़ गयी।

राजकुमार की शादी लड़की से करा दी गयी। बाद में पता चला कि वह तो उस समय के एक बहुत बड़े ताकतवर राजा की बेटी थी। राजकुमार के दोनों दोस्तों बढ़ई और ब्राह्मण की शादी राजकुमारी की ननद और भाभी से करा दी गयी। सब लोग राक्षस के मकान में बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।"

शेर ने अपनी कहानी खत्म करते हुए कहा — "ओ वज़ीर के बेटे, जैसे वे ब्राह्मण और बढ़ई उस राजकुमार के दोस्त थे वैसे लोग ही दोस्त होते हैं। राजकुमार की तो तुम बात मत करो जो खुद तो परी को ले कर चला गया और तुमको यहाँ मरने के लिये छोड़ गया।

उसको तुम अपना दोस्त मत कहो। वह तुम्हारा दोस्त नहीं है। खैर तुम मरोगे नहीं। मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। तुम अपने घर जाओ और शान्ति से रहो।" और वज़ीर का बेटा वहाँ से चला गया।

19 तीन अन्धे[12]

एक बार की बात है कि एक ब्राह्मण बाजार से हो कर जा रहा था कि वह बोला — "हे नारायण मैं तुझसे प्रार्थना करता हूॅ कि तू मुझे 100 रुपये दे दे तो मैं उनमें से 10 रुपये तेरे नाम से गरीबों को दे दूॅगा।" क्योंकि उसके पास तो अपने अगले खाने के लिये भी पैसे नहीं थे।

नारायण को उस पर दया आ गयी और उन्होंने उसकी प्रार्थना सुन ली। ब्राह्मण को तुरन्त ही पैसे मिल गये जिसमें से 10 रुपये उसने अपने दूसरे हाथ में रूमाल में बॉध कर निकाल कर रख लिये ताकि जैसे ही उसको कोई गरीब आदमी मिले तो वह उनको उन्हें दे सके।

तभी उसके सामने एक अन्धा आदमी भीख मॉगता हुआ आया तो जैसा कि उसने अपनी प्रार्थना में कहा था उसने उसको 10 रुपये दान में दे दिये। उस अन्धे को विश्वास ही नहीं हुआ सो उसने पूछा — "आपने मुझे ये पैसे क्यों दिये?"

ब्राह्मण बोला — "नारायण ने मुझे अभी अभी 100 रुपये इस शर्त पर भेजे हैं कि मैं उनमें से 10 रुपये उसके नाम पर किसी गरीब आदमी को दे दूॅ।"

---

[12] Three Blind Men (Tale No 19)

अन्धा बोला — “भगवान आपको सुखी रखे। मेहरबानी कर के मुझे अपना सारा पैसा दिखाइये। मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी में 100 रुपये कभी एक साथ नहीं देखे। मुझे उन्हें कम से कम महसूस तो करने दीजिये।”

ब्राह्मण को इसमें उसकी कोई चालाकी नहीं लगी सो उसने अपना रूमाल उस भिखारी के हाथ में रख दिया। बेवकूफ आदमी, वह कुछ ज़रा ज़्यादा ही सीधा रहा होगा।

पैसों का रूमाल लेते ही भिखारी ने दिखाया कि वह उसका ही पैसा है सो ब्राह्मण उसके ऊपर चिल्लाया और उससे अपना रूमाल छीन लिया तो भिखारी ने ज़ोर ज़ोर से शोर मचाना शुरू कर दिया — “बचाओ बचाओ यह आदमी चोर है। यह मेरा सब कुछ छीनना चाहता है। ए लोगों, इसको पकड़ लो। अब इससे और लड़ने की ताकत मेरे अन्दर नहीं है।”

आस पास चलते लोग चिल्लाये — “क्या बात है क्या किया है इसने?”

भिखारी बोला — “यह मेरे पैसे छीनना चाहता है। देखो इसके हाथ में मेरे सारे पैसे हैं – 90 रुपये। चाहो तो गिन लो मैं सच बोल रहा हूँ।”

लोगों ने ब्राह्मण को पकड़ लिया और उसके रूमाल के पैसे गिने तो वे तो वाकई 90 रुपये थे। उन्होंने भिखारी का विश्वास कर लिया और उसका पैसा उसको वापस कर दिया।

ब्राह्मण ने इसका बहुत विरोध किया पर सब बेकार। लोग उसका विश्वास ही नहीं कर रहे थे। उसने उनको अपनी कहानी भी सुनायी पर वह भी उनकी कुछ समझ में नहीं आयी कि ऐसा कैसे हो सकता था। सो वह अपने घर की तरफ जितनी जल्दी हो सकता था चला गया।

जब वह घर पहुँचा तो उसने यह किस्सा अपनी पत्नी को बताया तो उसकी पत्नी ने कहा — "तुम भी कितने बेवकूफ थे कि तुमने उस भिखारी को अपने पैसे दिखा दिये। तुमको अभी भी इस अन्धे भिखारी की चाल समझ में नहीं आयी और तुम यहाँ लौट कर चले आये। जाओ और जा कर उसका पीछा करो और देखो कि वह ये पैसे कहाँ रखता है।"

ब्राह्मण तुरन्त ही बाजार वापस गया। वहाँ उसको वह अन्धा भिखारी मिल गया। वह धीरे धीरे एक मस्जिद की तरफ जा रहा था। मस्जिद के अन्दर पहुँच कर वह वहाँ एक जगह पर बैठ गया।

कुछ देर बाद उसने चारों तरफ देख कर कहा — "यहाँ तो कोई नहीं है।" फिर भी यह यकीन करने के लिये कि वहाँ कोई नहीं था उसने अपनी डंडी[13] को अपने चारों तरफ मारा और फिर बोला — "हाँ यहाँ कोई नहीं है। यह जगह सुरक्षित है।"

फिर वह मस्जिद के एक कोने में गया। वहाँ पहुँच कर उसने फर्श से थोड़ी से मिट्टी हटायी और ब्राह्मण से लिये हुए 100 रुपये

---

[13] The stick blind people carry to guide their way.

नीचे रखे एक मिट्टी के बर्तन में रख दिये जो उसने वहाँ छिपा रखा था।

फिर वह बोला — "अल्लाह का लाख लाख शुक्र है। सुबह मेरे पास केवल **1000** रुपये ही थे पर अब मेरे पास **1100** रुपये हैं। अल्लाह का बहुत बहुत शुक्रिया।" जब ब्राह्मण ने भिखारी के ये शब्द सुने तो वह बहुत खुश हुआ।

यह कर के भिखारी मस्जिद के बाहर निकल आया। जैसे ही वह मस्जिद के बाहर निकला तो ब्राह्मण मस्जिद के अन्दर गया वहाँ से वह मिट्टी का बर्तन निकाला और उसे अपने घर ले गया।

जब वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने उसकी बहुत तारीफ की और उसको फिर से उस अन्धे भिखारी के पीछे पीछे जाने के लिये कहा कि जाओ और देख कर आओ कि वह अब आगे क्या करता है।

ब्राह्मण फिर चला गया। अगले दिन सारा दिन वह उस भिखारी के पीछे पीछे घूमता रहा। उस दिन भी शाम को उसने अपने आपको एक मस्जिद में पाया। वह भिखारी उस दिन की तरह से आज भी कुछ पैसे जो उसने उस दिन कमाये थे वहाँ जमा करने गया था।

जब उस अन्धे आदमी को उसके पैसे वाला मिट्टी का बर्तन धरती में गड़ा नहीं मिला तो वह बहुत दुखी हुआ। वह बेचारा अपना चेहरा और छाती पीट पीट कर रोने लगा। इस सबसे उसने

इतना शोर मचाया कि उस मस्जिद का मुल्ला उसको देखने पहुँचा कि यह कौन क्यों रो रहा है। इत्तफाक से यह मुल्ला भी अन्धा था और बहुत चालाक था।

मुल्ला ने भिखारी से पूछा — “यहाँ तुम यह क्या कर रहे हो? सबको परेशान कर रहे हो और मस्जिद की जमीन भी खराब कर रहे हो। चले जाओ यहाँ से। तुम हमारे और हमारी मस्जिद के ऊपर पाप चढ़ाने वाले हो। यहाँ से तुम तुरन्त चले जाओ वरना मैं अभी लोगों को बुला लूँगा और तुमको अपने इस व्यवहार पर पछताना पड़ेगा।”

भिखारी बोला — “जनाब मेरे पास जो कुछ भी था मेरा वह सब डाकू लूट कर ले गये हैं। यहाँ कोई चोर आया और वह मेरा सारा पैसा निकाल कर ले गया। मैं क्या करूँ मैं क्या करूँ?”

मुल्ला बोला — “तुम तो बहुत ही बड़े बेवकूफ हो। यह रोना धोना बन्द करो और इस घटना से अपने अच्छे भविष्य के बारे में सीखो।

किसी ने कभी क्या यह भी सुना है कि कोई अपने **1100** रुपये एक मिट्टी के बर्तन में रख कर इस मस्जिद जैसी आम जगह पर रख दे जहाँ सारे दिन लोग आते जाते रहते हों। अगर तुमने ऐसा ही किया होता जैसा कि मैंने किया तो तुम्हारे साथ यह न हुआ होता।”

गरीब भिखारी ने पूछा — “तुम कैसे करते हो?”

मुल्ला बोला — "मेरे पास एक बहुत बड़ी खोखली डंडी है मैं अपना सारा पैसा उसी डंडी में रखता हूँ और वह डंडी मैं हमेशा अपने पास रखता हूँ। देखो यह यहाँ है।" कह कर उसने अपनी डंडी उसके पैर पर मारी।

फिर बोला — "जाओ तुम मेरी डंडी जैसी एक और डंडी ले लो और फिर अपने पैसे के बारे में निश्चिन्त हो जाओ।"

यह सुन कर ब्राह्मण ने अन्धे मुल्ला की तरफ इस तरह से ध्यान से देखा जैसे वह उसका पैसा भी ले लेगा। सो उसने एक बड़ी डंडी ली उसको खोखला किया और उसको मुल्ला की डंडी जैसा बना दिया। जैसे ही उसने यह कर लिया और फिर जैसे ही उसको मौका मिला उसने मुल्ला की डंडी से अपनी डंडी बदल ली।

मुल्ला जब भी प्रार्थना करता था तो अपनी डंडी जमीन में रख देता था। और क्योंकि वह अपनी प्रार्थना दिन में कई बार करता था इसलिये ब्राह्मण को यह मौका ढूँढने में बहुत देर इन्तजार नहीं करना पड़ा।

ब्राह्मण की पत्नी ने जब यह सुना और बहुत सारे पैसे देखे तो वह तो बहुत खुश हुई। उसने अपने पति से कहा — "अब तुम फिर जाओ और देखो कि यह मुल्ला अब क्या करता है। हो सकता है तुम्हें उसका कुछ और खजाना हाथ लग जाये।"

ब्राह्मण ने उसका कहना माना और वह फिर से उसी मुल्ला की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर वह क्या देखता है कि उसके पास

एक और मुल्ला बैठा हुआ है। इत्तफाक से यह दूसरा मुल्ला भी अन्धा था।

पहला वाला मुल्ला अपने पैसे खो जाने पर दूसरे मुल्ला के सामने रो रहा था। तो दूसरे अन्धे मुल्ला ने उससे कहा — "तुम्हारी बेवकूफी के लिये तुम पर अल्लाह का कुफ्र पड़े। अब तुम मेरी बात सुनो कि मैं अपने पैसे का क्या करता हूँ।

मैं अपना सारा पैसा अपने कपड़ों में सिल कर रखता हूँ। वहाँ से मेरा पैसा कौन ले सकता है। मेरी सलाह मानो तो तुम भी ऐसा ही कर लो।"

जब ब्राह्मण ने दूसरे मुल्ला के ये शब्द सुने तो वह तुरन्त ही वहाँ से भाग गया और मधुमक्खियों से भरा एक छत्ता खरीद लाया और उसको उसने एक मिट्टी के बर्तन की तली में लगा दिया। छत्ते के ऊपर उसने काफी सारा शहद रख दिया। इतना कर के वह हँसा और बोला "हा हा हा उसको डराने के लिये इतना काफी है।"

फिर उसने एक मुसलमान का वेश बनाया और दूसरे मुल्ला को वह मिट्टी का शहद भरा बर्तन देने के लिये उसके घर की तरफ चल दिया। उसके घर जा कर उसने उसको वह बर्तन भेंट में दे दिया।

मुल्ला शहद से भरा बर्तन पा कर बहुत खुश हुआ। उसने उसको आशीर्वाद दिया। बर्तन दे कर ब्राह्मण चला आया। पर वह अपने घर नहीं गया। वह उसके घर से थोड़ी दूर जा कर इन्तजार करने लगा कि कब वह अपना शहद खत्म करता है।

जैसे ही ब्राह्मण उसके घर से गया मुल्ला ने शहद निकालने के लिये बर्तन में हाथ डाला कि वह उसको बड़े बर्तन में से निकाल कर छोटे छोटे बर्तनों में रख दे। क्योंकि वह यह नहीं चाहता था कि कोई दूसरा उसकी इतनी सारी चीज़ को उसके पास एक ही बार में देख ले।

उसने शहद से एक दो छोटे बर्तन अभी भरे ही थे कि उसका हाथ शहद की बजाय मधुमक्खियों के छत्ते से जा लगा।

मधुमक्खियों को उसका यह बुरा व्यवहार बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। वे बर्तन में से बाहर उड़ीं और उसको चारों तरफ से काटने लगीं। वह अपना शरीर पीटता पीटता घर के बाहर की तरफ भागा पर मधुमक्खियाँ भी अपने इरादे की पक्की थीं। वे भी उसको छोड़ नहीं रही थीं।

ऐसे समय में कोई उसकी सहायता भी नहीं कर पा रहा था। सो उस अन्धे मुल्ला को अपने कपड़े उतार कर एक तरफ को फेंकने ही पड़े और घर के अन्दर जाना पड़ा।

मधुमक्खियाँ भी उसके पीछे पीछे भागीं। वह बेचारा तो उनके काटने से मर ही जाता अगर उसकी पत्नी एक शहतूत[14] की मोटी सी शाख लिये वहाँ नहीं आ गयी होती और उसने उससे उनको नहीं मार भगाया होता।

[14] Translated for the word “Mullberry”. See its picture above. There is a white silkworm also on one of its leaves. Silkworm lives upon the leaves of Mulberry.

इस बीच ब्राह्मण ने मुल्ला के कपड़े उठाये और अपने घर भाग गया। उसकी पत्नी उसको देख कर बहुत खुश हुई। वह बोली — “हम लोग तो अब बहुत अमीर हो गये। अब हमें अपनी बाकी ज़िन्दगी के लिये कुछ नहीं चाहिये।”

जैसे ही मुल्ला को मधुमक्खियों के काटने से थोड़ा सा होश आया तो उसने देखा कि उसके तो कपड़े ही गायब हैं। यह देख कर उसको बहुत परेशानी हुई।

वह तुरन्त है पहले वाले अन्धे मुल्ला के पास गया और उससे अपना सारा हाल कहा। दोनों ने आपस में मिल कर कुछ सलाह की सो वे दोनों मिल कर अन्धे भिखारी के पास गये और उसे जा कर अपनी अपनी कहानियाँ बतायीं।

तीनों ने मिल कर प्लान बनाया कि राजा के पास चला जाये और उससे प्रार्थना की जाये कि वह इस चोर की ठीक से खोज करे और उसको सजा दे। ऐसा ही किया गया।

राजा ने उन तीनों की बात ठीक से सुनी और उन तीनों की कहानियों में रुचि लेने लगा। वह खुद भी यह जानने की कोशिश में लग गया कि ऐसा कौन सा आदमी था जिसने इन तीन होशियार और चतुर लोगों को धोखा दिया।

उसने सारे शहर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जिसने भी यह सब किया है आ कर स्वीकार करे तो राजा उसको माफ भी कर देगा और साथ में उसको अच्छा इनाम भी देगा।

यह सुन कर ब्राह्मण राजा के पास गया और उसको सारी कहानी सुनायी। राजा बोला — "शाबाश। पर यह तो बताओ कि यह सब तुमने अकेले ने किया या फिर किसी और ने भी तुमको इस बारे में सलाह दी।"

ब्राह्मण बोला — "मेरी पत्नी ने मुझे यह सब करने के लिये मुझे उकसाया हुजूर और मैंने यह सब किया।"

राजा बोला "बहुत अच्छे।" उसने उसको बहुत सारी भेंटें दीं और फिर उसको वहाँ से भेज दिया।

20 एक पैसे में सब[15]

एक बार की बात है कि एक घाटी में एक बहुत ही अमीर सौदागर रहता था। उसके एक ही बेटा था पर वह अपने उस अकेले बेटे से खुश नहीं था।

उसका वह बेटा बहुत ही बेवकूफ सा था और कोई अक्ल का काम करना तो दूर कुछ और भी नहीं करता धरता था।

पर उसकी मॉ उसको बहुत प्यार करती थी। वह उसके लिये अच्छा ही अच्छा सोचती थी और अगर वह कोई गलत काम भी करता था तो उसकी गलती के लिये वह कोई न कोई बहाना ढूँढ लेती थी।

धीरे धीरे वह लड़का बड़ा हो गया और अब शादी के लायक हो गया। उसकी मॉ ने अपने पति से कहा कि अब बेटा बड़ा हो गया है सो वह उसके लिये कोई अच्छी सी लड़की ढूँढ कर उसकी शादी कर दे।

पर वह सौदागर अपने बेटे की बेवकूफियों पर इतना शर्मिन्दा था कि उसने अपने मन में यह तय कर रखा था कि वह उसकी शादी कभी नहीं करेगा।

[15] All For a Paisa (Tale No 20)

उधर उसकी माँ उसकी शादी की बहुत चिन्ता कर रही थी। वह तो बहुत दिनों से उसकी शादी का सपना देख रही थी कि कब मेरा बेटा बड़ा होगा और कब मैं उसकी शादी करूँगी। वह सारी उम्र कुँआरा बैठा रहे यह तो वह सोच भी नहीं सकती थी और न वह इसके लिये तैयार ही थी।

सो उसने अपने बेटे की शादी के लिये बहुत कोशिशें कीं। उसने अपने पति को उसकी अक्लमन्दी के कई लक्षण बताये कई अक्लमन्दी के काम बताये ताकि उसका पति उसकी शादी कर दे पर शादी करने की बजाय वह उसकी इन बातों से चिड़चिड़ा ज़्यादा होता गया।

एक दिन जब उसकी पत्नी अपने बेटे की तारीफ किये जा रही थी तो वह चिड़चिड़ा हो कर अपनी पत्नी से बोला — "देखो तुम मुझसे यह सब कितनी बार कह चुकी हो पर तुमने इसे मुझे साबित कर के कभी नहीं दिखाया।

क्योंकि मुझे तुम्हारी बातों पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं है कि जो कुछ तुम कह रही हो उसमें ज़रा सा भी सच है। माँऐं अपने बच्चों के प्यार में अन्धी होती हैं। खैर तुम्हारी सन्तुष्टि को लिये मैं उस बेवकूफ को एक मौका और देता हूँ।

तुम उसको बुलाओ और उसको ये तीन पैसे दो और उससे कहो कि वह बाजार जाये और इसमें से एक पैसे की कोई एक चीज़

ऐसी खरीद कर लाये जो उसके अपने लिये हो। दूसरा पैसा वह नदी में फेंक दे।

और तीसरे पैसे से वह ये पॉच चीज़ें खरीदे – कुछ खाने के लिये कुछ पीने के लिये कुछ चबाने के लिये कुछ बागीचे में बोने के लिये और कुछ गाय को भी खिलाने के लिये।"

मॉ को यह सुन कर बहुत खुशी हुई कि अब कम से कम उसके बेटे को अपने आपको साबित करने का मौका मिलेगा। सो तुरन्त ही उसने अपने बेटे को बुलाया उसे तीन पैसे दे कर उसके पिता की सारी बात उसको समझा दी।

बेटे ने भी उससे पैसे लिये और बाजार चल दिया। बाजार जा कर उसने एक पैसे का कुछ अपने लिये खरीदा और खा लिया। उसके बाद वह एक नदी के पास आया और दूसरा पैसा नदी में फेंकने ही वाला था कि इसको अपनी बेवकूफी समझ कर वह रुक गया।

इसको नदी में फेंकने से क्या भला हो सकता है। अगर मैं एक पैसा नदी में फेंक देता हूं तो मेरे पास केवल एक पैसा ही बच जायेगा। और फिर इस एक पैसे से मैं ऐसा क्या खरीद सकता हूं जो खाने का भी हो और पीने का भी हो। चबाने वाला भी हो और बागीचे में बोने वाला भी हो और साथ में गाय के खाने वाला भी हो। जैसा कि उसकी मॉ ने कहा था।

और अगर मैं इसे नदी में नहीं फेंकता हूं तो इसका मतलब है कि मैं मॉ का कहना नहीं मानता।

वह इसी सोच में पड़ा था कि किस्मत से उसी समय वहॉ से एक लोहार की बेटी जा रही थी। उसने देखा कि नदी के किनारे एक लड़का उदास खड़ा है। उसने उसको वहॉ इस तरह खड़े देख कर उसने उससे पूछा कि क्या बात है वह इतना उदास क्यों खड़ा है।

उसने उस लड़की को वह सब बताया जो उसकी मॉ ने उससे कहा था। फिर उसने उसको बताया कि उसकी मॉ ने तीसरा पैसा नदी में फेंकने के लिये कहा था पर यह तो बेवकूफी है। लेकिन वह करे तो क्या करे। पैसा नदी में नहीं फेंकने पर तो मॉ का कहना न मानना होगा जो वह नहीं चाहता था।

वह लड़की बहुत होशियार थी। वह बोली — “मैं तुमको बताती हूं कि तुम क्या खरीदो। तुम जा कर एक पैसे का तरबूज खरीद लो और तीसरा पैसा अपनी जेब में रख लो। उसको तुम नदी में मत फेंको।”

“तरबूज?”

“हॉ तरबूज।”

वह आगे बोली — “देखो तरबूज तुम्हारी मॉ की सब शर्तों को पूरा करेगा। वह खाने की चीज़ भी है और वह पीने की चीज़ भी

है। वह चबाने की चीज़ भी है और वह जमीन में बोने के लिये भी कुछ देगा। और वह गाय के खाने के लिये भी कुछ देगा।

तुम जा कर यह खरीद कर ले जा कर अपनी माँ को दे देना मुझे यकीन है कि वह तुम्हारी इस खरीद से बहुत खुश होंगी।"

सो उसने ऐसा ही किया। जब उसकी माँ ने अपने बेटे की अक्लमन्दी देखी तो वह बहुत खुश हुई। उसको लगा कि उसका बेटा वाकई बहुत अक्लमन्द है। वह तुरन्त ही अपने पति के पास दौड़ी दौड़ी गयी और उस तरबूज को दिखा कर बोली देखो यह मेरे बेटे का काम है।

तरबूज देख कर वह सौदागर भी आश्चर्य में पड़ गया। वह बोला — "मुझे विश्वास नहीं होता कि यह काम उसने खुद किया है। उसे तो अक्ल ही नहीं है। जरूर किसी ने उसको यह करने की सलाह दी है।"

फिर उसने अपने बेटे की तरफ देख कर उससे पूछा — "तुमसे यह करने के लिये किसने कहा?"

वह बोला — "एक लोहार की लड़की ने मुझे यह सलाह दी थी।"

सौदागर अपनी पत्नी की तरफ देख कर बोला — "देखा तुमने? मुझे मालूम था कि यह इस बेवकूफ का काम ही नहीं है। खैर चलो अगर तुम राजी हो तो और इसकी इच्छा हो इसकी शादी

उस लोहार की बेटी से कर दो जो खुद इतनी होशियार है और उसने इसमें अपनी इतनी रुचि दिखायी है।"

मॉ बोली — "इससे अच्छी तो कोई बात हो ही नहीं सकती।"

अगले कुछ दिनों में सौदागर लोहार के घर गया और उसकी लड़की को देख कर आया जिसने उसके बेटे की सहायता की थी। जब वह उसके घर पहुॅचा तो लड़की ने ही दरवाजा खोला। सौदागर ने उससे पूछा — "बेटी क्या तुम घर पर अकेली हो?"

लड़की बोली — "जी हॉ।"

सौदागर ने पूछा — "तुम्हारे माता पिता कहॉ हैं?"

वह बोली — "मेरे पिता एक कौड़ी[16] का लाल खरीदने गये हैं और मेरी मॉ शब्द बेचने गयी है। पर वे लोग जल्दी ही आने वाले होंगे। जब तक वे आयें तब तक अन्दर आ कर आप उनका इन्तजार करें।"

लड़की की बात सुन कर सौदागर कुछ सोच में पड़ गया और कुछ न समझते हुए पूछा — "तुमने क्या कहा कि तुम्हारे माता पिता कहॉ गये हैं।"

लड़की बोली — "मेरे पिता एक कौड़ी का लाल यानी लैम्प के लिये तेल खरीदने गये हैं। और मेरी मॉ कुछ शब्द बेचने यानी किसी की शादी का रिश्ता तय करने गयी है।"

[16] Used for Cowrie – a kind of sea shell. In olden days it was used as money. See its picture above.

सौदागर लड़की की होशियारी की बातें सुन कर भौंचक्का रह गया पर उसने अपने विचारों को प्रगट नहीं होने दिया। इसी समय लोहार और उसकी पत्नी घर वापस लौट आये। वे अपने घर में इतने बड़े और अमीर सौदागर को देख कर बहुत आश्चर्यचकित हुए।

उन्होंने उसको सलाम किया और पूछा — "आपने इस गरीब के घर आने का कष्ट कैसे किया हमें बुलवा लिया होता?"

सौदागर बोला — "मैं अपने बेटे के लिये आपकी बेटी का हाथ माँगने आया हूँ।"

लोहार ने इस रिश्ते को तुरन्त ही स्वीकार कर लिया। शादी का दिन तय कर लिया गया और सौदागर अपने घर वापस लौट गया। घर आ कर वह अपनी पत्नी से बोला कि यह सब ठीक है। लोहार शादी के लिये राजी हो गया है और शादी का दिन भी पक्का हो गया है।

तुरन्त ही यह खबर सब जगह फैल गयी कि लोहार की बेटी की शादी सौदागर के बेटे से हो रही है। लोगों ने बात करना शुरू कर दिया कि सौदागर अपने बेटे की शादी अपने से नीचे घर में कर रहा है। यह ठीक नहीं है।

कुछ लोग तो यहाँ तक पहुँच गये कि उन्होंने सौदागर के बेटे के पास जा कर उसे चेतावनी दी कि वह लोहार से जा कर कहे कि

अगर उसने अपनी बेटी की यह गलत शादी की तो वह उसकी बेटी की रोज सात बार जूतों से पीटेगा।

उन्होंने सोचा कि उसकी इस धमकी से लोहार शायद डर जायेगा और यह सगाई तोड़ देगा। उन्होंने उससे आगे कहा कि अगर ऐसा नहीं हुआ और फिर भी तुम्हारी शादी उससे हो गयी तो पहले दिन ही तुम अपनी पत्नी को इस तरह से मारोगे ताकि वह तुम्हें आगे तंग न करे और तुम्हारा कहना माने।

वह बेवकूफ लड़का इस प्लान को एक बहुत अच्छा प्लान समझ कर मान गया और उसने वैसा ही किया। उसने लोहार से जा कर वह सब कह दिया जो लोगों ने उससे लोहार से कहने के लिये कहा था।

लोहार यह सुन कर बहुत परेशान हुआ। उसने यह सब अपनी बेटी को बताया जो सौदागर के बेटे ने उससे कहा था और उससे प्रार्थना की कि वह उस आदमी से कोई सम्बन्ध न रखे।

उसने कहा — "ऐसी शादी करने से तो जिसमें पति पत्नी को चोर की तरह से पीटे ज़िन्दगी भर शादी न करना अच्छा है।"

लड़की बोली — "पिता जी आप चिन्ता मत कीजिये। साफ जाहिर है कि कुछ नीच लोगों ने उनको आपसे ऐसा कहने पर मजबूर किया है। पर आप बिल्कुल परेशान न हों। ऐसा कभी नहीं होगा। एक आदमी के कहने में और उसके वही काम करने में बहुत

अन्तर होता है। आप मेरे लिये बिल्कुल नहीं डरें। जो कुछ उन्होंने कहा है वैसा कभी नहीं होगा।"

जिस दिन की शादी तय हुई थी उस दिन धूमधाम से शादी हो गयी। आधी रात को दुलहा उठा और यह सोचते हुए कि उसकी पत्नी सो रही थी उसने एक जूता उठाया और उसको उससे मारने ही वाला था कि पत्नी ने अपनी ऑखें खोल दीं।

वह बोली — "ऐसा नहीं करते। शादी की पहली रात को ही लड़ना झगड़ना अपशकुन होता है। कल को अगर तुम चाहो तो मुझे मार लेना पर आज की रात तो तुम मुझसे मत लड़ो।"

अगली रात दुलहे ने दुलहिन को मारने के लिये फिर से अपना जूता उठाया तो उसने फिर से उससे प्रार्थना की — "अगर पति पत्नी शादी के पहले हफ्ते में ही एक दूसरे का अपमान करें तो यह बहुत बड़ा अपशकुन होता है।

मैं जानती हूँ कि तुम एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी हो और तुम मेरी बात सुनोगे। तुम अपना यह काम आठवें दिन के लिये रख लो। उस दिन तुम मुझे जितना चाहे उतना मार लेना।"

लड़का राजी हो गया और उसने अपने हाथ में लिया हुआ जूता एक तरफ फेंक दिया। मुसलमानों के रीति रिवाजों के अनुसार सातवें दिन लड़की अपने पिता के घर आयी।

जब लड़के के दोस्त लोग उससे मिले तो वे बोले — “अहा तो उसने तुम्हें भी अच्छा बना दिया। तुम कितने बेवकूफ हो। हमें मालूम था कि ऐसा ही होगा।”

इस बीच सौदागर की पत्नी अपने बेटे के आगे के जीवन के बारे में सोच रही थी। वह सोच रही थी कि अब समय आ गया है जब उसको आजादी से रहना चाहिये। सो उसने अपने पति से कहा — “तुम उसको कुछ सामान दे दो और उसको बेचने के लिये उसे बाहर जाने दो।”

सौदागर बोला — “कभी नहीं। उसके हाथ में यह सब देना तो ऐसा होगा जैसे पैसे को पानी में फेंकना। वह तो उस सबको बर्बाद कर आयेगा।”

पत्नी बोली — “अब जाने भी दो। उसको अक्ल इसी तरह से तो आयेगी। उसको कुछ पैसे दो और उसको दूर देशों की यात्रा पर भेज दो। अगर उससे वह कुछ पैसा कमाता है तो कम से कम हम उससे यह उम्मीद रख सकते हैं कि वह पैसे की कीमत समझेगा।

और अगर वह पैसा गँवा कर और गरीब हो कर लौटता है तो हम यह उम्मीद करेंगे कि जब वह दोबारा कमायेगा तब उसकी कीमत समझेगा। वह किसी भी हालत में लौटे हम फायदे में रहेंगे। इनमें से किसी भी अनुभव के बिना वह कुछ नहीं सीख सकता।”

इस तरह सौदागर की पत्नी ने सौदागर को अपने बेटे को अकेले व्यापार पर भेजने के लिये राजी कर लिया। उसने अपने बेटे

को बुलाया उसको कुछ पैसे दिये कुछ सामान दिया और कुछ नौकर उसके साथ करके उसे व्यापार करने भेज दिया।

इस तरह वह नौजवान सौदागर अपने नौकरों के साथ व्यापार पर चल दिया। उनका कारवाँ बहुत दूर नहीं गया था कि वे सब एक बहुत बड़े बागीचे के पास से गुजरे। उस बागीचे के चारों तरफ एक बहुत ऊँची चहारदीवारी खिंची हुई थी।

नौजवान सौदागर ने पूछा — "यह क्या जगह है। इसके अन्दर जाओ और देख कर आओ।"

उसके नौकर लोग गये और वापस आ कर उसे बताया कि उस चहारदीवारी के अन्दर एक बहुत बड़े बागीचे में एक बहुत बड़ी और शानदार बिल्डिंग है। इस पर वह नौजवान सौदागर खुद उस बागीचे के अन्दर गया।

जब वह उस बड़ी और शानदार बिल्डिंग को देख रहा था तो उसमें उसको एक बहुत सुन्दर लड़की दिखायी दी। उस लड़की ने उसको नर्द[17] खेलने के लिये अन्दर बुलाया। यह लड़की एक बहुत बड़ी जुआरी थी। इसको वे सब चालें आती थीं जिनसे वह अपने साथ खेलने वाले का सारा पैसा ले लेती थी।

उसकी एक सबसे प्रिय चाल यह थी कि जब वह खेलती थी तो एक बिल्ली अपने साथ रखती थी जो उसने इस तरह से सिखा रखी थी कि जब वह उसको इशारा करती थी तो वह लैम्प के पास जा

[17] Nard is any kind of game played with counters, such as chess, or drought etc.

कर उसको बुझा कर अँधेरा कर देती थी। ऐसा इशारा वह उसको तब करती थी जब वह अक्सर हार रही होती थी। और इस तरह से वह अपने साथ खेलने वाले का सारा पैसा हड़प लेती थी।

यही चाल उसने इस नौजवान सौदागर के साथ भी खेली और उसका काफी पैसा जीत लिया। और उसका केवल पैसा ही नहीं बल्कि उसकी हर चीज़ चली गयी – उसका पैसा उसका सामान उसके नौकर यहाँ तक कि वह खुद को भी हार गया।

और अब जब उसके पास कुछ नहीं बचा तो उसको जेल में डाल दिया गया। यहाँ उसके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया गया। अक्सर वह सिर उठा कर अल्लाह से प्रार्थना करता कि वह उसे इस हालत से बचाने के लिये इस दुनियाँ से उठा ले।

एक दिन उसने जेल के दरवाजे के सामने से जाता हुआ एक आदमी देखा तो उसने उसको पुकारा और उससे पूछा कि वह वहाँ कब आया था। आदमी ने जवाब दिया कि वह फलाँ फलाँ देश से आया था और उसने अपने देश का वही नाम बताया जिसमें उसका पिता रहता था।

नौजवान सौदागर कैदी ने कहा — "यह तो ठीक है पर क्या तुम मेरे ऊपर एक उपकार करोगे। जैसा कि तुम देख रहे हो मैं यहाँ इस जेल में कैद हूँ। मै यहाँ से तब तक नहीं निकल सकता जब तक मेरे ऊपर पड़ा एक बड़ा कर्जा न निबट जाये।

मैं यह चाहता हूँ कि तुम मेरी ये दो चिट्ठियाँ लो। इनमें से एक चिट्ठी मेरे पिता को दे देना और एक मेरी पत्नी को दे देना। अगर तुम मेरा यह काम कर दोगे तो मैं तुम्हारा यह उपकार कभी नहीं भूलूँगा।"

वह आदमी राजी हो गया और दोनों चिट्ठियाँ उससे ले कर अपने रास्ते चला गया। अपने पिता की चिट्ठी में उसने वह सब लिखा था जो उसके ऊपर बीता था और अपनी पत्नी वाली चिट्ठी में उसने लिखा था कि उसने बहुत सारा पैसा कमा लिया है और अब वह जल्दी ही घर वापस आ कर उसे जूते से मारेगा जैसा कि उसने उससे पहले ही कहा था।

जैसे ही उस आदमी ने उस देश में अपना काम खत्म किया वह अपने देश लौट गया और जा कर दोनों चिट्ठियाँ उसके घर में दे दीं। उसको पढ़ना लिखना आता नहीं था सो गलती से उसने पिता की चिट्ठी पत्नी को और पत्नी वाली चिट्ठी पिता को दे दी।

अच्छी खबर पढ़ कर पिता बहुत खुश हुआ हालाँकि उसको यह समझ में नहीं आया कि वह चिट्ठी उसकी बजाय उसकी बहू को क्यों लिखी गयी थी और उसके बेटे ने अपनी पत्नी को ऐसी पीटने वाली बात क्यों लिखी थी।

जब सौदागर के बेटे की पत्नी ने अपनी चिट्ठी पढ़ी तो वह बहुत दुखी हुई और उसको भी यह समझ में नहीं आया कि वह चिट्ठी

उसके पति ने अपने पिता के नाम क्यों लिखी थी उसके नाम क्यों नहीं लिखी।

यह बात न समझ पाने से वह अपने ससुर के पास गयी और जा कर अपनी चिट्ठी का हाल उनको बताया तो दोनों की गुत्थी और उलझ गयी क्योंकि दोनों चिट्ठियों में अलग अलग समाचार लिखा था।

बहू बहुत ही होशियार और समझदार थी। उसने अपने ससुर से बात की और अपने पति की सहायता के लिये चल पड़ी। और अगर हो सका तो उसको आजाद कराने के लिये भी। उसके ससुर ने उसको जाने की इजाज़त दे दी और साथ में उसके रास्ते के लिये उसे कुछ पैसे भी दे दिये।

लड़की ने आदमी का वेश रखा और चल दी। चलते चलते वह भी उसी जगह पहुँच गयी जहाँ वह सुन्दर लड़की रहती थी। उसने उस लड़की के पास यह खबर पहुँचायी कि वह एक बहुत ही अमीर सौदागर का बेटा है और एक अच्छा जुआरी है इसलिये वह उसके साथ दो दो हाथ खेलना चाहता है।

वह लड़की तुरन्त राजी हो गयी। शाम को उन दोनों को खेलना था। इस बीच बहू ने उस लड़की के नौकरों से पूछताछ की कि उनकी मालकिन खेल में जीतने के लिये कौन कौन सी चालें इस्तेमाल करती है।

पहले तो नौकर उसको यह बताने से हिचकिचाये पर जब बहू ने उनको अशर्फियों के ढेर और कुछ और सामान दिखाया तो वे मान गये और सब कुछ बताने पर तैयार हो गये। उन्होंने उसे बताया कि शायद उनकी मालकिन उसको हराने के लिये उस रात भी बिल्ली वाली चाल खेले। यह सुन कर बहू वहाँ से चली गयी।

शाम को वह फिर वहाँ आयी और लड़की को अपना सलाम भेजा। वह अपने साथ एक चूहा लायी थी जो उसने अपने कोट की आस्तीन में छिपा रखा था।

खेल शुरू हुआ। बहुत अच्छी खिलाड़ी होने की वजह से बहू जीतने लगी। यह देख कर उस नीच जुआरी लड़की ने अपनी बिल्ली को इशारा किया। बिल्ली तुरन्त ही लैम्प की तरफ चली। उसी समय बहू ने अपनी आस्तीन में से चूहा छोड़ दिया।

छोड़ते ही चूहा दूर भाग गया और उसके पीछे पीछे भाग गयी बिल्ली। कमरे की सारी चीज़ें इधर उधर हो गयीं। लड़की कुछ परेशान सी हो गयी तो बहू बोली — “क्या हम अपना खेल शुरू करें?”

बस फिर क्या था। अब कोई बाधा नहीं थी सो बहू वह बाजी भी जीत गयी और फिर दूसरी तीसरी चौथी। वह सब कुछ जीतती चली गयी। उसने न केवल अपने पति के पैसे और सामान ही जीत लिया बल्कि उस लड़की का पैसा सामान नौकर महल आदि सब कुछ जीत लिया।

इतनी आसानी से सब कुछ जीता हुआ सामान उसने बड़े बड़े बक्सों में बन्द किया। वहॉ के सारे कैदियों को आजाद किया। उसका पति भी दूसरे कैदियों के साथ उसे धन्यवाद देने के लिये वहॉ आया पर वह उसे उस वेश में पहचान न सका।

बहू ने उसे ध्यान से देखा और पूछा कि क्या वह उसका सरदार बनना चाहेगा। मजबूरी की हालत में उसने उसका सरदार बनना स्वीकार कर लिया। बहू ने उसके फटे मैले कपड़े उतरवा कर सरदारों जैसे कपड़े पहनवाये। सरदार ने ही फिर उनके वहॉ से जाने का इन्तजाम किया।

उसके पुराने कपड़े लकड़ी के एक छोटे से बक्से में रख दिये गये। सारे बक्सों की चाभियॉ सरदार के हवाले कर दी गयीं पर जिस बक्से में नौजवान सौदागर के पुराने कपड़े थे उस बक्से की चाभी बहू ने अपने पास रखी।

जब सब तैयारियॉ हो गयीं तब वे सब वहॉ से चल दिये। उस नीच लड़की को उन्होंने अपने साथ ले लिया। जब वे सब अपने देश के पास पहॅुचे तो बहू ने सरदार से कहा — "मुझे अपना एक जरूरी काम है तो मैं इस तरफ जाता हॅू। पर तुम मेरी चिन्ता मत करना।

तुम सीधे शहर चले जाओ और यह सब सामान अपने साथ ले जाओ। इस सब सामान को अपने घर में सॅभाल कर रख देना जब तक मैं लौट कर आता हॅू।

मैं तुम्हारे पिता को जानता हूँ और तुम्हारे ऊपर भरोसा कर सकता हूँ। अगर मैं बीस दिनों तक न आऊँ तो ये सारी चीज़ें तुम्हारी हैं।"

इतना कह कर बहू तो अपने घर चली गयी और उसका सरदार उस नीच लड़की नौकर चाकर और सब सामान के साथ अपने घर चला गया।

अपने घर पहुँच कर बहू ने अपने पिता से यह मामला छिपाने के लिये कहा। कुछ दिनों बाद वह अपनी ससुराल गयी तो जैसे ही उसके पति ने उसे देखा तो बोला — "क्या तुम्हें मालूम है कि मुझे तुम्हें कितनी बार पीटना है।" ऐसा कह कर उसने अपना जूता निकालने का बहाना किया।

उसके माता पिता बोले — "छि छि क्या तुम घर में आने के इस शानदार मौके को ऐसे नीच काम कर के मनाओगे।"

उसकी पत्नी बोली — "अब मुझे पता चला। अब तक मैं सोचती थी कि शायद तुममें कुछ अक्ल आ गयी होगी पर लगता है कि तुम वैसे के वैसे ही रहे। इधर देखो। वह बक्सा मेरे पास लाओ। उसको खोलो और उसमें रखे गन्दे कपड़े देख कर बताओ कि ये कपड़े किसके हैं। तुम्हारे या किसी और के?

इनको देखो और याद करो कि जेल के रखवालों ने तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया था। कितनी ज़ोर ज़ोर से मारा था उन्होंने तुमको। कितना खराब और कितना कम खाना दिया था उन्होंने

तुमको। और कितनी गालियाँ दी थीं उन्होंने तुमको। यह याद कर के तो तुम काँप जाते होगे न।

सुनो मैं ही वह अमीर सौदागर का बेटा हूँ जिसने तुमको छुड़ाया है। जो चिट्ठी तुमने अपने पिता को लिखी थी वह इत्तफाक से मेरे पास आ पहुँची। मैंने तुम्हारा दुख पढ़ा और तुरन्त ही तुमको छुड़ाने के लिये चल पड़ी।

मैंने एक नौजवान सौदागर का वेश रखा और जा कर उस लड़की से मिली जिसने तुम्हें बेवकूफ बनाया था। मैं उसके साथ खेली और तुम्हारा सब कुछ जीत लिया जो तुमने हारा था। और इसके अलावा उस लड़की का भी सब कुछ जीत लिया। यही वह लड़की है। जाओ और जा कर उससे पूछो कि वह मुझे पहचानती है कि नहीं।"

उस जुआरी लड़की ने कहा — "हाँ हाँ यही है वह।"

सौदागर का बेटा तो यह सुन कर भौंचक्का रह गया उसके मुँह से तो कोई बोल ही नहीं फूटा। सौदागर की पत्नी ने अपनी बहू की तरफ देखा और उसको आशीर्वाद दिया। सौदागर खुद अपने बेटे से इतना नाउम्मीद और गुस्सा था कि वह न तो कुछ बोल सका और न ही कुछ कर सका।

आखिर उसने अपनी पत्नी की तरफ देखा और बोला — "अब तुम्हें विश्वास हो गया कि तुम्हारा बेटा कितना बेवकूफ है। यह सब

सामान और जवाहरात बहू को दे दो। वह हमारे बेटे के लिये बहुत ज़्यादा अच्छी है।”

21 घमंडी का सिर नीचा[18]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक जगह एक राजा रहता था जो अपने में ही इतना लगा रहता था और अपने कहने और करने में इतना घमंड महसूस करता था कि यह बात अब जनता में यह एक कहावत बन गयी थी "हमारे राजा जैसा मतलबी" "हमारे राजा जैसा घमंडी"।

साफ जाहिर है कि उसके वज़ीर और दरबारी लोग उसकी बातें सुनते सुनते थक गये थे और उसकी यह आग भड़काने के लिये हमेशा उसकी चापलूसी करते रहते।

राजा पूछता — "इस दुनियॉ में हमारे देश जैसा और कौन सा देश है जहॉ इतना पानी है और जहॉ की मिट्टी इतनी अच्छी है।"

उसके वज़ीर और दरबारी जवाब देते — "कोई नहीं।"

राजा फिर पूछता — "कहॉ हैं इतने अच्छे कानून और कहॉ हैं इतने अमीर लोग?"

"कहीं नहीं।"

"मेरे महल जैसा शानदार महल कहीं और है?"

"इसके बराबर का महल तो कहीं नहीं है कहीं नहीं।"

---

[18] Pride Abased (Tale No 21)
[Its variants are – "Placidus", a tale from the Gesta Romanorum; the story of "Krisa Gautami" from Tibetan Tales; "Swet-Basanta" from Folktales of Bengal and "Sarwar and Nir" from the Legends of Punjab, vol iii.]

“हॉ।” कह कर वह अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरता और एक लम्बी सॉस खींचता जैसे यह सब कह कर उसके ऊपर से एक भारी बोझ उतर गया हो। करीब करीब जो भी राजा को सुनता वह उसकी ऐसी बातें सुन कर थक जाता।

धीरे धीरे लोगों को यह एक बोझ लगने लगा। और यह इसलिये भी ज़्यादा लगता था क्योंकि राजा राज्य में उसकी उन्नति के लिये कोई खास काम भी नहीं कर रहा था और उसके राज्य के लोग भी कोई खास अमीर नहीं थे।

आखिर उसके कुछ वज़ीरों ने जब वह उनसे ऐसे सवाल करे तो उसको साफ साफ बोलने का निश्चय किया। इसके लिये उनको बहुत इन्तजार नहीं करना पड़ा।

एक दिन राजा बोला — “ज़रा सोचो कि क्या कोई मुझसे भी बड़ा राजा है या मेरे राज्य से भी ज़्यादा शानदार राज्य है?”

तो उनमें से कुछ वज़ीर बोले — “हॉ है।”

रोज से अलग जवाब सुन कर राजा बहुत गुस्सा हुआ और बोला — “मुझे जल्दी बताओ कि वह राजा कहॉ है। मैं अपनी सेना ले कर वहॉ जाऊॅगा और उस पर हमला करूॅगा।”

वे बोले — “राजा साहब इतनी जल्दी मत कीजिये। हालॉकि हम लोग आपके लिये प्रार्थना करेंगे कि आप जीत जायें पर कहीं अगर आप हार गये तो और आपका देश बर्बाद हो गया तो।”

यह सुन कर तो राजा को और गुस्सा आ गया। उसने तुरन्त ही अपनी सारी सेना को तैयार होने के लिये हुक्म दे दिया। जब वह तैयार हो गयी तो वह उसका लीडर बन कर वह उसको ले कर चल दिया। उसने चारों तरफ अपने दूत भेज दिये कि जो राजा उससे लड़ना चाहे वह उससे लड़ने आ जाये।

कुछ समय तक तो उसको ऐसा लगा कि उसने दूसरे राजाओं को लड़ने के लिये उकसाया क्योंकि किसी ने उसका मुकाबला स्वीकार नहीं किया क्योंकि ऐसी लड़ाई में बहुत खून खराबा होता जब तक कि इस मतलबी और घमंडी राजा के घमंड को सन्तुष्ट न किया जाता

पर आखिर एक राजा सामने आया और उसने इस मतलबी और घमंडी राजा को हरा दिया और उसका सारा राज्य शानो शौकत और अमीरी छीन ली। यहॉ उसके घमंड का खात्मा हुआ।

अपनी कुचले हुए आत्मसम्मान को ले कर उस राजा ने अपना वेश बदला और अपनी रानी और दो बेटों को ले कर समुद्र के किनारे किसी ऐसी जगह चला गया जहॉ से उसको कोई जहाज़ मिल जाता और वह वहॉ से कहीं और चला जाता।

एक जहाज़ वहॉ से जाने के लिये तैयार खड़ा था। उसने जहाज़ के कप्तान से पूछा कि क्या वह उसको और उसके छोटे से परिवार को अपने जहाज़ पर चढ़ा कर वहॉ ले जा सकता है जहॉ वह जा रहा था।

कप्तान राजी हो गया पर जब उसने सुन्दर रानी को देखा तो अपना मन बदल दिया। अब वह केवल रानी को ही ले जाना चाहता था राजा के पूरे परिवार को नहीं। उसने सोचा कि वह उसकी कितनी सुन्दर पत्नी बनेगी। और अगर वह उसको बेचना भी चाहेगा तो उसको उसका कितना सारा पैसा मिलेगा।

सो जब जहाज़ पर सवारियों के चढ़ने का समय आया तो पहले रानी चढ़ी और फिर जैसे ही राजा और उसके दोनों बेटे चढ़ने को थे कि कुछ मजबूत आदमियों ने जिनको कप्तान ने यह करने के लिये पहले ही कह रखा था उनको किनारे पर ही रोक लिया और उनको जहाज़ पर चढ़ने नहीं दिया। उन्होंने उनको तब तक वहीं पकड़े रखा जब तक कि जहाज़ पानी में काफी दूर तक नहीं चला गया।

रानी ने जब देखा कि राजा और उसके दोनों बेटों को जहाज़ पर चढ़ने नहीं दिया गया तो वह बहुत ज़ोर से रो पड़ी। उसने अपना माथा पीटा अपने कपड़े फाड़ डाले और दुखी हो कर जहाज़ के डैक पर गिर पड़ी और फिर बेहोश हो गयी।

उसकी यह बेहोशी बहुत लम्बी थी हालाँकि कप्तान ने उसको जल्दी होश में लाने के बहुत कोशिशें की फिर भी वह एक घंटे से ज़्यादा बेहोश रही जैसे मर गयी हो।

आखिर वह होश में आयी। इस बीच कप्तान बहुत सावधान था। उसने उसके लिये एक बहुत अच्छे बिस्तर का इन्तजाम कर रखा था। उसको जहाज़ का सबसे अच्छा खाना दिया जाता था पर

इस सबसे कोई फायदा नहीं था क्योंकि रानी न उसकी तरफ देखती थी और न उससे बात करती थी।

ऐसा कई दिनों तक लगातार चलता रहा यहाँ तक कि जब कप्तान उसका प्यार पाने में नाकामयाब रहा तो उसने उसको बेचने का निश्चय किया।

उसी जहाज़ पर एक अमीर सौदागर भी यात्रा कर रहा था। उसने भी रानी को देखा। उसको पता चला कि कप्तान उसका प्यार पाने में नाकामयाब रहा तो उसको लगा कि वह उसको खरीद ले शायद वह उसका प्यार पा जाये।

सो उसने कप्तान को एक बहुत बड़ी रकम दे कर रानी को खरीद लिया और इस तरह रानी अब उस सौदागर के पास आ गयी। बहुत ही कोमलता से उसने रानी को खुश करने की और उससे प्यार जताने की कोशिश की।

जब उसने उससे कहा कि उसने उसको बहुत सारा पैसा दे कर उसे खरीदा है इसलिये उसको उससे शादी कर लेनी चाहिये तो आखिर वह उसका प्यार पाने में सफल हो गया।

रानी ने कहा — “हालाँकि तुम्हारे और कप्तान के बीच में जो सौदा हुआ है वह बिल्कुल गैरकानूनी है क्योंकि कप्तान को मुझे तुम्हें बेचने का कोई अधिकार ही नहीं है क्योंकि मैं उसकी हूँ ही नहीं। फिर भी क्योंकि मैं तुम्हें पसन्द करती हूँ इसलिये मैं तुमसे शादी कर

लूँगी। अगर तुम दो साल इन्तजार करो और अगर इस बीच मैं अपने पति और बेटों से नहीं मिली तो मैं तुमसे शादी कर लूँगी।"

सौदागर राजी हो गया और इस समय के खत्म होने का इन्तजार करने लगा।

उधर जैसे ही जहाज़ आँखों से ओझल हुआ तो उन आदमियों ने राजा और उसके दोनों बेटों को छोड़ दिया। अगर राजा की इच्छा होती तो भी अब उनसे बदला लेना तो बेकार था सो अपने दोनों बेटों को छोड़ कर वह समुद्र से दूर जमीन की तरफ तेज़ी से चल पड़ा।

उसके दोनों बेटे रोते बिलखते उसके पीछे पीछे दौड़े। वे चलते रहे जब तक कि वह एक नदी के किनारे नहीं पहुँच गये। नदी तो उथली थी पर उसमें पानी का बहाव बहुत तेज़ था। राजा नदी पार करना चाहता था पर न तो वहाँ कोई नाव थी और न ही कोई पुल। सो उसे नदी को चल कर ही पार करना पड़ा।

सावधानी से उसमें रास्ता ढूँढते हुए वह अपने एक बेटे के साथ उस नदी के पार पहुँचने में सफल हो गया। उस बेटे को वहीं छोड़ कर वह अपने दूसरे बेटे को लाने के लिये लौट पड़ा पर रास्ते में पानी का एक तेज़ बहाव आया जिससे वह पानी में डूब गया।

जब दोनों बेटों ने देखा कि उनका पिता पानी में डूब गया है तो वे बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगे। दुख की दूसरी वजह यह भी थी कि वे दोनों अलग अलग खड़े थे।

वे एक दूसरे को चिल्ला चिल्ला कर बुलाते रहे इधर से उधर घूमते रहे जब तक वे थक नहीं गये और उनको नींद नहीं आ गयी।

तभी एक मछियारा अपनी नाव ले कर वहाँ आया उसने उन दोनों बच्चों को थका और दुखी देख कर अपनी नाव में बिठा लिया और उनसे पूछा कि वे कौन थे और उनके माता पिता कौन थे। उन्होंने उनके साथ जो कुछ भी हुआ था वह सब उसको बता दिया।

जब उसने उनकी कहानी सुनी तो वह बोला — "तुम्हारे माँ और बाप नहीं हैं और मेरे कोई बच्चा नहीं है। इसी लिये ऐसा लगता है कि भगवान ने तुम लोगों को मेरे पास भेज दिया है। क्या तुम मेरे बच्चे बनोगे मछली पकड़ना सीखोगे और मेरे घर में रहना पसन्द करोगे?"

बच्चे यह सुन कर बहुत खुश हो गये थे उनको रहने खाने की जगह जो मिल गयी थी।

"आओ। मैं तुम्हारी देखभाल करूँगा।" कह कर मछियारा उनको नाव से उतार कर पास के एक मकान में ले गया। बच्चे उसके साथ खुशी खुशी चले गये।

घर में जब उन्होंने उसकी पत्नी को देखा तब तो वह और ज़्यादा खुश हो गये क्योंकि वह उनके लिये बहुत अच्छी थी वह उनको अपने सगे बेटों से भी बढ़ कर मानती थी।

बच्चे अपने नये घर में आराम से रहने लगे। वे स्कूल जाते थे। उन्होंने जल्दी ही वह सब सीख लिया जो उनके मास्टरों ने उन्हें

सिखाया। फिर उन्होंने अपने मुँहबोले पिता की सहायता करनी भी शुरू कर दी और कुछ ही समय में बहुत ही मेहनती और अच्छे मछियारे बन गये।

इस तरह समय गुजरता रहा कि एक बार नदी किनारे पर एक बहुत बड़ी मछली आ पड़ी और फिर उससे नदी में नहीं जाया जा सका तो वह मर गयी। गॉव का हर आदमी उस बड़ी मछली को देखने के लिये आया और उसका एक एक टुकड़ा काट कर ले गया।

कुछ लोग पड़ोसी गॉवों से भी आये जिनमें एक कुम्हार भी था। उसकी पत्नी ने उस बड़ी मछली के बारे में सुना तो उसने पति से कहा कि वह भी वहॉ आये और थोड़ी सी मछली उसके लिये भी ले आये। सो वह वहॉ आया जहॉ मछली पड़ी हुई थी।

हालॉकि काफी देर हो चुकी थी फिर भी जब वह वहॉ पहुॅचा तो वहॉ कोई भी नहीं था क्योंकि सारे लोग जिन जिन को उसको ले जाना था वे सब उसमें से उसका छोटा छोटा हिस्सा काट कर ले जा चुके थे और वहॉ से जा चुके थे।

जाते समय कुम्हार ने यह सोचते हुए एक कुल्हाड़ी अपने साथ ले ली थी कि क्योंकि मछली बहुत बड़ी थी तो शायद उस मछली की हड्डियॉ भी बहुत मोटी होंगी और उनको काटने के लिये उसे कुल्हाड़ी की जरूरत पड़े।

जैसे ही उसने मछली में पहली कुल्हाड़ी मारी तो उसे उसमें से चिल्लाने की आवाज आयी जैसे कोई दर्द से चिल्ला रहा हो। वह आवाज सुन कर कुम्हार भौंचक्का रह गया। उसने सोचा कि शायद मछली में कोई भूत है मैं दोबारा कुल्हाड़ी मार कर देखता हूँ।

सो उसने उस मछली में दोबारा कुल्हाड़ी मारी तो मछली में से आवाज आयी "मैं बहुत दुखी हूँ। मैं बहुत दुखी हूँ।"

यह आवाज सुन कर कुम्हार ने सोचा यह तो भूत नहीं हो सकता। यह तो किसी आदमी की आवाज है। मैं इसको सावधानी से काटता हूँ हो सकता है कि मुझे इसके अन्दर कोई आदमी मिल जाये।

सो उसने उसको सावधानी से काटना शुरू किया तो उसे एक आदमी का पॉव दिखायी दिया। वह धीरे धीरे मछली को और काटता रहा तो उसे उसमें एक पूरा आदमी दिखायी दे गया।

जितनी जल्दी हो सका वह उस आदमी को अपने घर ले गया और उसको ठीक से होश में लाने के लिये उससे जो कुछ हो सका उसने किया। उसने उसके पास आग जलायी और उसको चाय और सूप पिलाया।

जब कुम्हार और उसकी पत्नी ने देखा कि वह ठीक से होश में आ रहा है तो वे दोनों बहुत खुश हुए। कुछ महीने यह अजनबी इस परिवार के साथ आराम से रहा। यहॉ उसने मिट्टी के बर्तन बनाने सीखे और इस तरह से कुम्हार की सहायता की।

इत्तफाक से उन्हीं दिनों वहॉ का राजा मर गया। और यह उस देश का रिवाज था कि मरे हुए राजा का हाथी और बाज़[19] जिस किसी को चुन लेते थे वही वहॉ का राजा होता था। सो जब वह राजा मर गया तो राजा के हाथी को सारे राज्य में घुमाया गया और बाज़ को भी चारों तरफ उड़ा दिया गया ताकि वे वहॉ का राजा चुन सकें।

अब जिस किसी के भी सामने हाथी अपना सिर झुका देता और जिस किसी के हाथ पर बाज़ बैठ जाता वही वहॉ का राजा होता। सो हाथी और बाज़ घूमते घूमते उसी कुम्हार के घर जा पहुँचे जिसने मछली के पेट से निकले हुए आदमी को शरण दी थी।

इत्तफाक से वह अजनबी वहीं घर के दरवाजे पर खड़ा था। जैसे ही हाथी और बाज़ ने उस अजनबी को देखा तो हाथी ने उसे झुक कर सलाम किया और बाज़ उसके हाथ पर जा कर बैठ गया।

लोग जो हाथी के पीछे पीछे जा रहे थे यह देख कर चिल्लाये "यही हमारा राजा है। यही हमारा राजा है।"

सबने अजनबी के सामने लेट कर उसको सलाम किया और अपने सामने महल चलने की प्रार्थना की। राजा के मन्त्रियों ने जब यह सुना तो वे बहुत खुश हुए और उन्होंने अपने नये राजा का खुशी से स्वागत किया।

---

[19] Translated for the word "Falcon". See its picture above.

उसको राजा बनाने के रस्मो रिवाज पूरे किये गये और राजा अपने काम में लग गया। सबसे पहला काम राजा ने यह किया कि उसने कुम्हार और उसकी पत्नी को बुलाया और उन्हें कुछ पैसे और जमीन दी।

इस तरीके से और दूसरे तरीकों से भी न्याय कर के अच्छे नियम बना कर होशियार और अक्लमन्द लोगों को चुन कर राजा ने बहुत सारे लोगों का प्यार पा लिया। कुछ ही दिनों में वहाँ खुशहाली छा गयी।

पर कुछ ही महीनों में वह बीमार पड़ गया। जनता की तरफ इतना सारा ध्यान देना उसके बस में नहीं था सो उसके राज्य के डाक्टरों ने उसको बाहर घूमने की सलाह दी। उनकी सलाह मान कर राजा कभी घुड़सवारी के लिये निकल जाता तो कभी शिकार खेलने के लिये चला जाता तो कभी मछली पकड़ने चला जाता।

उसको मछली पकड़ना बहुत अच्छा लगता था। यह देख कर एक दिन एक मछियारा उसके पास एक बहुत बड़ी मछली ले कर आया और बोला — "सरकार मुझसे खुश हों। आज मैंने यह मछली पकड़ी है यह मैं आपके लिये ले कर आया हूँ।"

राजा उस बड़ी सी मछली को देख कर बहुत खुश हुआ और उससे पूछा कि वह मछली उसने कब और कैसे पकड़ी। मछियारे ने राजा को सब बातें बता दीं और मछलियों के बारे में उसको इतनी जानकारी बतायी कि राजा ने उससे कहा कि जब वह मछली पकड़ने

जाये तो वह भी उसके साथ मछली पकड़ने चला करे ताकि राजा भी मछली पकड़ने की कला सीख सके और वह भी वैसी ही बड़ी मछली पकड़ सके जैसी कि उसने अभी राजा को भेंट की थी।

मछियारा बोला — "सरकार आप बहुत अच्छे और दयालु हैं। जो भी आप हुक्म करेंगे उसे हर आदमी को ठीक और न्यायपूर्ण मानना चाहिये। पर आप मुझ नौकर की भी एक बात सुन लें तो बड़ी मेहरबानी होगी।

मेरे घर में दो लड़के हैं जो मुझसे भी ज़्यादा होशियार और ताकतवर हैं। अगर सरकार इजाज़त दें तो मैं वायदा करता हूँ कि वे हमेशा आपकी सेवा में लगे रहेंगे।"

राजा इस बात पर राजी हो गया। अब जब भी वह मछली पकड़ने जाता तो मछियारे के दोनों बेटों को अपने साथ ले जाता। धीरे धीरे राजा की उन दोनों बेटों से जान पहचान बढ़ती गयी।

राजा उनको बहुत चाहने लगा क्योंकि वे बहुत तेज़ थे होशियार थे सुन्दर थे और स्वभाव के बहुत अच्छे थे। बाद में उसने कुछ ऐसा इन्तजाम कर लिया कि वह कहीं भी जाता तो उनको अपने साथ ही रखता।

करीब करीब इसी समय जिस सौदागर ने उस राजा की पत्नी को खरीदा था जो नदी में डूब गया था व्यापार करने के लिये इस राजा के देश में आया। उसने राजा से मिलना चाहा तो राजा ने उसे

मिलने का समय दे दिया। उसने बहुत सारे कीमती जवाहरात और सामान राजा को दिखाया।

राजा उसका सामान देख कर बहुत खुश हुआ और उस सबके बारे में उससे कई सवाल पूछे। उसने उससे उन देशों के बारे में भी पूछा जहाँ से उसने उनको खरीदा था। सौदागर ने राजा को सब बता दिया तो उसने राजा से उसके राज्य में व्यापार करने की इजाज़त और सुरक्षा माँगी।

राजा ने तुरन्त ही उसकी माँग स्वीकार कर ली। उसने उसको इस काम के लिये कुछ सिपाही दे दिये जो सौदागर के आँगन में हमेशा पहरा देते थे। उसने मछियारे के दोनों बेटों को भी उसके घर में सोने के लिये भेज दिया।

एक रात इन दोनों बेटों को किसी वजह से नींद नहीं आ रही थी तो छोटे भाई ने बड़े भाई से कहा कि वह उसको कोई कहानी सुनाये ताकि उसे नींद आ जाये। बड़ा भाई बोला — "ठीक है मैं तुझे अपने साथ घटी एक घटना सुनाता हूँ।" कह कर उसने उसको यह कहानी सुनायी।

एक बार की बात है कि एक बहुत ही बड़ा पढ़ा लिखा और अमीर राजा था। लेकिन वह बहुत घमंडी था। एक बार वह अपनी सेना ले कर दूसरे राजाओं को लड़ाई की चुनौती देता हुआ बाहर निकल पड़ा। तो कुछ राजा तो उससे हार गये पर एक राजा जो उससे ज़्यादा ताकतवर था उससे लड़ा और उसने उसको हरा दिया।

हारा हुआ राजा अपनी पत्नी और दो बेटों के साथ किसी तरह बच कर भाग निकला। भागते भागते इस आशा में वह समुद्र के किनारे पहुँचा कि शायद उसको वहाँ कोई जहाज़ मिल जाये तो वह उसमें बैठ कर बाहर निकल जाये जहाँ जा कर वह अपनी मुसीबतों को भूल जाये और नये सिरे से ज़िन्दगी शुरू कर सके।

कई मील चलने के बाद वे समुद्र के किनारे पहुँचे। खुशकिस्मती से उनको एक जहाज़ मिल गया जो किनारा छोड़ने ही वाला था। राजा ने जहाज़ के कप्तान से उनको ले जाने की बात की तो कप्तान मान तो गया पर अफसोस वह कप्तान बहुत ही बुरा आदमी था।

उसने पहले रानी को जहाज़ पर चढ़ाया और फिर जैसे ही राजा और उसके दो बेटे जहाज़ पर चढ़ने लगे तो उसके आदमियों ने उन सबको वहीं किनारे पर ही रोक लिया और उनको तब तक रोके रखा जब तक वह जहाज़ आँखों से ओझल नहीं हो गया।

उफ़ राजा के लिये वह कितना भयानक समय था। दुखी दिल से वह अपने दोनों बेटों के साथ वहाँ से लौट पड़ा। वह फिर कई मील चला। वह यह भी नहीं जानता था कि वह कहाँ जा रहा है। चलते चलते वह एक नदी के पास आ पहुँचा जिसका बहाव बहुत तेज़ था।

क्योंकि उस नदी को पार करने के लिये वहाँ न तो कोई नाव थी और न ही कोई पुल सो वह नदी उसको चल कर ही पार करनी पड़ी। उसने अपने एक बेटे को लिया और नदी पार कर गया।

फिर वह अपने दूसरे बेटे को लेने आया पर बीच में ही वह डूब गया। तबसे उसका कोई पता नहीं है। तू समझ सकता है कि पिता के डूबने के बाद उन दोनों बेटों की क्या हालत हुई होगी।

उस समय रात होने वाली थी। उनके पास न तो कोई खाना था और कोई रहने की कोई जगह। न उनको यह मालूम था कि वे कहाँ जायें। एक नदी के एक किनारे पर खड़ा था और दूसरा दूसरे किनारे पर। वह एक दूसरे के पास भी नहीं जा सकते थे।

आखिर उसी समय एक मछियारा अपनी नाव में आया और दोनों बच्चों को अपनी नाव में बिठा कर अपने घर ले गया। वह उन दोनों को बहुत चाहने लगा और उसकी पत्नी भी। इस तरह वे दोनों उनके माता पिता जैसे हो गये।

यह उनके साथ दो साल पहले हुआ था। अब वे दोनों लड़के दूसरों को उनके असली बेटे जैसे लगते हैं।

सो मेरे भाई वे दोनों लड़के हम दोनों हैं। और यह है हमारी कहानी। कहानी इतनी मजेदार थी और उसका अन्त भी इतना अच्छा था कि बजाय सोने के छोटे भाई की ऑख और ज़्यादा खुल गयी। यह कहानी कही भी इतने अच्छे से कही गयी थी कि इसने दूसरों का ध्यान भी अपनी तरफ खींच लिया।

इत्तफाक से सौदागर की खरीदी हुई पत्नी इस समय जाग रही थी। उसके कमरे और दूकान के बीच में केवल पतला सा परदा था

सो वह यह सारी कहानी सुन रही थी। उसने अपने मन में सोचा जरूर ही ये दोनों मेरे दोनों बेटे हैं।

वह अपने कमरे में से उठ कर आयी और उसने उन बच्चों से कई सवाल पूछे। दो साल में ही बच्चों में काफी अन्तर आ गया था जिससे वह उनको देखते ही नहीं पहचान सकी पर फिर भी उनमें कुछ ऐसी पहचान थी जो वे कितने भी बड़े हो जाते उनकी माँ उनकी उस पहचान को नहीं भूल सकती थी।

ये पहचान और उसके सवालों के जवाबों ने उसके मन में आये विचार को पक्का कर दिया कि वे दोनों उसी के बेटे थे। वह उन दोनों को गले लगा कर रो पड़ी। इससे उनको भी लगा कि वही उनकी रानी माँ थी जिसके बारे में वे अभी अभी बात कर रहे थे।

उसने भी उनको वह सब बताया जो जो उसके साथ उनसे बिछुड़ जाने के बाद घटा था। कि किस तरह से जब जहाज़ के कप्तान ने जब यह देखा कि वह उसके साथ नहीं रह सकती तो उसको इस सौदागर के हाथों बेच दिया।

फिर किस तरह यह सौदागर उसके साथ दया का बर्ताव करता रहा और सचमुच में उसको प्यार करता था। वह अमीर और होशियार होने के साथ साथ एक बहुत ही अच्छा आदमी भी है।

और कैसे उसने यह सोचते हुए कि शायद वह अब राजा से नहीं मिल पायेगी इस सौदागर से दो साल बाद शादी के लिये हाँ कर दी थी। उन दो सालों के पूरा होने में अब केवल तीन दिन बचे हैं।

उसने बच्चों को यह भी बताया कि वह इस सौदागर को इतना ज़्यादा नहीं चाहती थी कि वह उससे शादी कर ले। यह तो उसने इतने दिनों तक उससे बचने के लिये कह दिया था।

अब तुम लोगों के मिल जाने के बाद मेरा यह प्लान है कि मैं सौदागर को यह विश्वास दिलाऊँ कि तुम लोगों ने मुझे मारा है। मैं बहुत गुस्सा होने का नाटक करूँगी और तब तक चैन से नहीं बैठूँगी जब तक वह तुमको राजा से कोई सजा न दिलवा ले। इससे राजा तुम लोगों को बुलवा भेजेगा और तुमसे इस मामले की छानबीन करेगा।

इसके जवाब में तुमको यह कहना है कि यह तुमसे गलती हो गयी वरना तुम तो मुझे अपनी माँ की तरह मानते हो और उसी की तरह मेरी इज़्ज़त करते हो। इस बात को साबित करने के लिये राजा से प्रार्थना करना कि वह मुझे बुलवा भेजें और मुझसे खुद ही पूछ लें कि तुम लोगों ने सच कहा है या नहीं।

तब मैं तुम लोगों को अपना बेटा बताऊँगी और राजा से प्रार्थना करूँगी कि वह मुझे इस सौदागर से छुटकारा दिलवाये और तुम्हारे साथ रहने की इजाज़त दे जहाँ मैं अपनी ज़िन्दगी के बाकी दिन गुजार सकूँ।

बेटों ने उसकी यह सलाह मान ली। अगली रात जब सौदागर भी वहीं सो रहा था रानी ने ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया

जिससे वहाँ सोये सब लोग जाग गये। सौदागर भी जाग गया उसने पूछा कि क्या मामला था वह क्यों चिल्ला रही थी।

रानी बोली — "वे दो लड़के जो तुम्हारी दूकान की रखवाली करते हैं उन्होंने मुझे मारने की कोशिश की तो मैं चिल्ला पड़ी ताकि वे रुक जायें।"

यह सुन कर सौदागर को बहुत गुस्सा आया। तुरन्त ही उसने दोनों लड़कों को बाँधा और जैसे ही उसको राजा से मिलने का पहला मौका मिला वह उनको राजा के सामने ले गया और उनको उसके सामने लाने की वजह बतायी।

राजा ने बच्चों से पूछा — "तुम्हें अपने बचाव में कुछ कहना है। क्योंकि अगर यह सच है कि तुमने सौदागर की पत्नी को मारा है तो हम तुम्हें सजा का हुक्म सुनायेंगे। क्या हमारी तुम्हारे संग भलाई करने का यही नतीजा है। जल्दी बोलो तुम लोगों को अपनी सफाई में क्या कहना है।"

लड़कों ने कहा — "हे हमारी भलाई चाहने वाले राजा, हम आपके शब्दों और आपकी शक्ल से बिल्कुल नहीं डर रहे हैं क्योंकि हम आपके वफादार नौकर हैं। हमने आपके विश्वास को बिल्कुल धोखा नहीं दिया है। बल्कि हमेशा से ही आपके हुक्म को माना है।

सौदागर ने हमारे ऊपर जो इलजाम लगाया है वह बिल्कुल झूठा है। हमने उसकी पत्नी को मारने की बिल्कुल कोशिश नहीं की बल्कि

हमने तो उनको अपनी मॉ के समान ही समझा है। अगर आप चाहें तो उनको यहॉ बुला कर उनसे खुद ही पूछ लें।"

राजा राजी हो गया और उसने रानी को बुलाने का हुक्म दिया। उसके आने पर राजा ने उससे पूछा — "क्या यह सच है कि तुम्हारे होने वाले पति ने इन दोनों लड़कों के खिलाफ गवाही दी है?"

रानी बोली — "हे राजन जिन लड़कों को आपने हमारी सहायता के लिये हमारे पास भेजा है उन्होंने आपकी इच्छा पूरी करने की अपनी पूरी पूरी कोशिश की है। पर एक रात पहले की बात है कि मैंने उनकी बातें सुनी। बड़ा वाला भाई अपने छोटे भाई को एक कहानी सुना रहा था।

जैसा कि उसने कहा वह कहानी उसकी अपनी ही थी। वह एक घमंडी राजा की कहानी थी जिसको उससे एक ज़्यादा ताकतवर राजा ने हरा दिया था। अपना राज्य खोने पर उस राजा को अपनी पत्नी और दो बेटों के साथ अपना राज्य छोड़ कर भाग जाना पड़ा। वह भाग कर समुद्र की तरफ पहुँचा ताकि वह वहॉ से कहीं दूर जा सके।

खुशकिस्मती से उसको एक जहाज़ भी मिल गया जो किनारा छोड़ कर जाने वाला ही था। उसने उससे मिल कर बात कर ली कि वह जहाज़ उन सबको वहॉ ले जायेगा जहॉ वह जा रहा था।

पर उस जहाज़ का कप्तान एक बहुत ही बुरा आदमी निकला। उसने राजा की पत्नी को चुरा लिया और उसको दूर देश ले गया जहाँ जा कर उसने उसको एक अमीर सौदागर को बेच दिया।

उधर राजा और उसके दोनों बेटे फिर कहीं और चले गये। वहाँ वे एक नदी के किनारे आये जहाँ राजा डूब गया। उसके दोनों बेटे एक मछियारे को मिल गये जिसने उनको अपने बच्चों की तरह पाला।

राजा साहब वे दो बच्चे आपके सामने हैं और मैं इनकी माँ हूँ जिसको चुरा लिया गया था और फिर एक सौदागर को उसकी पत्नी बना कर बेच दिया गया था जिसके साथ वह दो दिन बाद उसकी पत्नी बन कर रहने वाली है। क्योंकि मैंने उससे वायदा किया था कि अगर फलाँ फलाँ समय तक मेरा पति और मेरे दोनों बेटे न मिले तो मैं उससे शादी कर लूँगी।

पर अब मेरे बच्चों के मिल जाने के बाद मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि मुझे इस सौदागर से छुटकारा दिलवाया जाये। मैं दोबारा शादी नहीं करना चाहती क्योंकि मेरे दोनों बच्चे मेरे पास हैं। मैं राजा से मिल कर यह न्याय माँग सकूँ इसी लिये इन बच्चों के साथ मिल कर मैंने यह नाटक खेला।"

जैसे ही रानी ने अपनी कहानी खत्म की तो राजा की आँखों से आँसू बहने लगे और वह काँपने लगा। जब वह थोड़ा सँभला तो

वह अपने सिंहासन से उठा और रानी और दोनों बच्चों की तरफ बढ़ा।

उसने तीनों को अपने गले लगाया और रो कर बोला — “तुम मेरी पत्नी और मेरे बच्चे हो। भगवान ने तुम लोगों को मेरे पास वापस भेज दिया है। मैं राजा जैसा तुम लोगों को लगा डूबा नहीं था बल्कि एक बड़ी मछली मुझे निगल गयी थी। कुछ दिन तक मैं उसी मछली के पेट में ज़िन्दा रहा। उसके बाद वह मछली किनारे पर आ कर पड़ गयी तब मैं उसके पेट से आजाद हुआ।

एक कुम्हार दया करके मुझे अपने घर ले गया। उसने मुझे अपना काम सिखाया। मैं वह काम करके अपना पेट अपने आप पालने लायक हुआ ही था कि यहाँ का राजा मर गया। उस राजा के हाथी और बाज़ ने मुझे अपना राजा चुन लिया और इसी लिये अब मैं यहाँ हूँ।”

उसके बाद राजा ने रानी और अपने दोनों बेटों को महल ले जाने का हुक्म दिया। उसने वहाँ जमा हुए लोगों को भी अपने इस व्यवहार की सफाई दी। सौदागर को विनम्रतापूर्वक उसके देश भेज दिया गया।

जब दोनों राजकुमार राज्य सँभालने लायक हो गये तब राजा ने अपने बड़े बेटे को अपना राज्य सौंप दिया और खुद रानी के साथ शान्ति से अपना जीवन बिताया।

22 दो भाई[20]

महल में लोगों के दिन बहुत खुशी से गुजर रहे थे क्योंकि वहॉ का राजा अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था। रानी भी राजा को बहुत प्यार करती थी।

उनके दो बेटे थे जो चतुर थे अच्छे थे और अपने माता पिता की आज्ञा पालन करने वाले थे। वे दोनों यह सोचते थे कि उनके माता पिता के जैसा दुनियॉ भर में कोई नहीं था।

अब ऐसे घर में तो खुशी का रहना जरूरी था ही जब तक कि यमराज[21] ने अपने कुत्तों को उनमें से एक को अपने नरक में लाने के लिये न भेजा होता।

रोज सुबह राजा को थोड़ी देर के लिये अपनी पत्नी के साथ महल के एक बरामदे में बैठने की आदत थी। अपने इस शान्त समय में वे दोनों चिड़ियों के एक जोड़े को अपने बच्चों के लिये खाना ले जाते देखते रहते।

एक दिन उन्होंने देखा कि एक नयी चिड़िया कुछ और चिड़ियों के साथ अपनी चोंच में कुछ कॉटे दबाये उस घोंसले की तरफ उड़ी

---

[20] The Two Brothers (Tale No 22)

[21] Yamraj is the regent of realms of death. “He is still to some extent an object of terror. He is represented as having two insatiable dogs with four eyes and wide nostrils which guard the road to his abode and which the departed are advised to hurry past with all possible speed. These dogs are to wander about among men as his messengers, no doubt for the purpose summoning them to their master.”

जा रही है। राजा को यह जानने की बड़ी उत्सुकता हुई कि वहाँ क्या हुआ था सो उसने अपने एक नौकर से कहा कि वह उस पेड़ पर चढ़े और पता करे कि वहाँ क्या हुआ।

वहाँ जा कर नौकर को पता लगा कि उस घोंसले के चिड़े की पत्नी मर गयी थी और उसने दूसरी शादी कर ली थी। अब नयी चिड़िया जो घर में आयी थी वह अपने सौतेले बच्चों का कोई काम नहीं करना चाहती थी।

उसने सोचा कि अगर वह उनके खाने के लिये बाहर से काँटे ले आयेगी तो वह मर जायेंगे और वह उनकी सेवा करने से बच जायेगी। उसने ऐसा ही किया और वे काँटे खा कर वे बच्चे मर गये। वे सब अपनी माँ की लाश के ऊपर पड़े हुए थे।

जब राजा और रानी ने यह सुना तो वे बहुत दुखी हुए। राजा बोला — "क्या हमारे और चिड़ियों के साथ ऐसे ही होता है।"

रानी बोली — "हाँ होता तो ऐसा ही है पर हमारे साथ ऐसा नहीं होना चाहिये। प्रिय मुझसे वायदा करो कि अगर मैं तुमसे पहले चली जाऊँ तो तुम फिर कभी दोबारा शादी नहीं करोगे।"

राजा बोला — "प्रिये अपना हाथ दो। मैं तुम्हारा हाथ पकड़ कर कसम खाता हूँ कि तुम ज़िन्दा रहो या मर गयी हो मैं कभी दूसरी शादी नहीं करूँगा। ताकि कहीं ऐसा न हो कि हमारे दोनों बच्चों को भी इसी तरह का कुछ सहना पड़े जैसा इन चिड़ियों के बच्चों को सहना पड़ा है।"

कह कर राजा ने रानी को ढॉढस बॅधाया। रानी भी यह सब सुन कर शान्त हुई और राजा को पहले से भी ज़्यादा प्यार करने लगी।

पर इत्तफाक की बात कि इस घटना के कुछ दिन बाद ही रानी चल बसी। राजा तो उसके बिना इतना दुखी हो गया कि लोगों ने सोचा कि अब तो वह भी मर जायेगा। कुछ समय बीत जाने पर वह कुछ सॅभला और देश का राजकाज सॅभालने लगा।

कुछ और समय बीत जाने पर उसके वज़ीरों दरबारियों और दूसरे कुलीन लोगों ने उससे दूसरी शादी करने की प्रार्थना की। जैसा कि सोचा जा सकता है उसको यह काम करने में जरूर ही बहुत परेशानी हो रही होगी।

पहले तो राजा उनसे बात ही नहीं करते थे पर वे भी अपनी प्रार्थना लगातार करते ही रहे। यहॉ तक कि उन्होंने राजा से दोबारा शादी करने के लिये हॉ करवा ही ली। उनके एक वज़ीर की बेटी का उनके लिये प्रस्ताव आया और राजा ने उसको स्वीकार कर लिया। जल्दी ही उन दोनों की शादी हो गयी।

अब उनके दुख के दिन शुरू हुए। जैसी कि उम्मीद की जाती थी नयी रानी दोनों राजकुमारों से जलने लगी और उनके खिलाफ कुछ जाल रचने लगी। राजकुमारों ने उसकी इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए उसको खुश रखने की बहुत कोशिश की। कभी उसकी इच्छाओं के खिलाफ जाने की जुर्रत नहीं की। पर सब बेकार।

रानी उन दोनों से बहुत नफरत करती थी और उसको उस दिन की इच्छा थी जब वह उनको देश से बाहर निकाल कर बर्बाद कर देगी।

उसने उतने समय तक इन्तजार किया जब तक उसने यह नहीं देख लिया कि राजा उसको बहुत प्यार करता है और वह उसके लिये कुछ भी कर सकता है।

तब उसने राजा से राजकुमारों की अपने साथ बुरा व्यवहार करने की और अपना कहना न मानने की शिकायतें करनी शुरू कर दीं। इसके अलावा उसने उससे यह भी कहा कि अगर राजा उसको इतना प्यार न करता तो वह उनका ऐसा व्यवहार बिल्कुल नहीं सह सकती थी।

राजा यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ। उसने तुरन्त ही अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वे उसके दोनो बेटों को सबकी ऑख बचा कर जंगल में ले जा कर मार दें। बच्चों को अपने पिता के हुक्म के ऊपर कोई सवाल पूछने की आदत नहीं थी सो वे दोनों बच्चे सिपाहियों के साथ खुशी चले गये।

उनको पिता के बेरहम हुक्म का तो पता नहीं था। उन्होंने सोचा कि शायद उनके पिता ने उनको जंगल में घूमने के लिये भेजा होगा।

जब वे सब जंगल में एक जगह पहुँचे तो सिपाहियों ने अपनी अपनी तलवारें निकाल लीं और उनको मारने के लिये ऊपर उठाया

तो बच्चों को बहुत आश्चर्य हुआ। उनको पता ही नहीं चला कि उन्हें क्या करना चाहिये।

वे चिल्लाये — "हे भगवान हमारी सहायता करो।"

भगवान ने उनकी सुन ली। सिपाहियों की लोहे की तलवारें लकड़ी की तलवारों में बदल गयीं और पत्थर दिल सिपाहियों के दिल में दया भर गयी। उनसे उन नन्हें नन्हें बच्चों को मारा नहीं गया। उन्होंने उन्हें छोड़ दिया।

अपने प्रति भगवान को उसकी दया के लिये धन्यवाद देते हुए दोनों राजकुमार अपने अपने घोड़ों पर सवार हो कर वहाँ से जितनी तेज़ी से भाग सकते थे भाग लिये।

कुछ देर बाद वे एक साफ पानी की नदी के पास आये तो उन्होंने सोचा कि वे वहाँ पर खाना खा लें और आराम कर लें। उन्होंने यह भी निश्चय किया कि वे दोनों एक साथ नहीं सोयेंगे कहीं ऐसा न हो कि कोई डाकू आ जाये या फिर कोई जंगली जानवर आ जाये और उनको और उनके घोड़ों को खा जाये।

इस प्लान के साथ बड़ा भाई पहले सो गया और छोटा भाई जाग कर पहरा देने लगा। जब वह पहरा दे रहा था तो दो चिड़ियें सूडाब्रोर और बूडाब्रोर[22] वहाँ आयीं और पास के एक पेड़ पर आ कर बैठ कर बातें करने लगीं।

[22] Sudabror and Budabror birds

सूडाब्रोर बोला — “देखो उस पेड़ पर जिसकी डाल उस नदी तक जा रही है दो गाने वाली चिड़ियॉ बैठी हैं। क्या तुम्हें पता है कि वे कौन सी चिड़ियें हैं?”

बूडाब्रोर बोला — “हॉ, वे तो बहुत ही बढ़िया चिड़ियें हैं। मैंने उनको यह कहते सुना है कि जो कोई भी उनमें से एक का मॉस खायेगा वह राजा बन जायेगा और जो दूसरे का मॉस खायेगा वह वज़ीर बन जायेगा।

वह सबसे ज़्यादा अमीर आदमी होगा और वह हर सुबह जहॉ भी लेटेगा वहॉ अपने नीचे की जगह पर इतने कीमती सात जवाहरात पायेगा जिसकी लोग कीमत तक नहीं ऑक पायेंगे।[23] यह सुन कर छोटा भाई तो बहुत उत्सुक हो गया।

उसने तुरन्त ही उन दोनों को एक तीर मारा और मार दिया। फिर उसने दोनों चिड़ियों को पकाया। एक चिड़िया उसने खुद खायी और दूसरी चिड़िया भाई के लिये छोड़ दी। भाई जब सो कर उठा तो उसने छोटे भाई की वह छोड़ी हुई चिड़िया खा ली।

अगली सुबह दोनों भाई फिर अपनी यात्रा पर चल दिये। रास्ते में छोटे भाई को अचानक याद आया कि उसका चाबुक तो वहीं रह गया। वह अपने इस चाबुक को बहुत पसन्द करता था सो वह उसे लेने के लिये वापस दौड़ गया।

---

[23] Compare this story of European folktales. From the book “Wide Awake Stories”, pp 139, 326; Grimm’s Household Stories pp 193, 383; “Russian Popular Tales”, V, No 53, viii. “Tibetan Tales”, p 129; Story “Saiyad and Said” in the first part of this collection.

चाबुक उसको नदी के किनारे दिखायी दे गया। वह उसको उठाने के लिये अपने घोड़े से उतरने ही वाला था कि एक बहुत बड़ा ड्रैगन[24] पानी में से बाहर निकल आया और उसने उसके पैर में काट लिया और वह बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ा। इस हालत में वह बेचारा कई घंटे पड़ा रहा।

बड़ा भाई जब उसका इन्तजार करते करते थक गया तो वह आगे चल दिया कि उसका छोटा भाई शाम तक उसको पकड़ लेगा। आगे चल कर वह एक शहर में पहुँचा तो वहाँ जा कर उसको पता चला कि वहाँ के राजा की अभी अभी मौत हो कर चुकी है और वहाँ की जनता उसके वारिस की खोज में है।

ऐसा लगता था कि वहाँ का यह रिवाज था कि जब वहाँ का राजा मर जाता था तो एक हाथी को राजा चुनने के लिये भेजा जाता था। जिस किसी को भी वह हाथी चुन लेता था वहाँ के लोग उसी को अपना राजा मान लेते थे चाहे वह कोई अमीर हो या गरीब, पढ़ा लिखा हो या गँवार, अपने देश और भाषा का हो या फिर किसी दूसरे देश या भाषा का।

जब बड़ा राजकुमार वहाँ आया तो राजा को चुनने वाला यह हाथी वहीं चक्कर काट रहा था। जैसे ही उसने राजकुमार को देखा

[24] A dragon is a legendary creature, typically with serpentine or reptilian traits, that features in the myths of many cultures. There are two distinct cultural traditions of dragons: the European dragon, derived from European folk traditions and ultimately related to Greek and Middle Eastern mythologies, and the Chinese dragon, with counterparts in Japan, namely the Japanese dragon, Korea and other East Asian countries.

तो तुरन्त ही उसको सिर झुकाया। सो लोग उस राजकुमार को शहर के अन्दर ले गये और उसको राजगद्दी पर बिठा कर राजा घोषित कर दिया गया।

उधर छोटा राजकुमार भी होश में आ गया था। वह इस तरह होश में आया था कि उस नदी के पास एक योगी रहता था जो उस नदी पर हर छठे महीने वहॉ से थोड़ा सा पानी लेने आता था।

जिस दिन राजकुमार को वहॉ ड्रैगन ने काटा था वह दिन उसके वहॉ से पानी लेने का दिन था। सो जब वह वहॉ आया तो उसने वहॉ उस नौजवान का बेहोश शरीर देखा। उसको उस पर दया आ गयी।

वह समझ गया कि ड्रैगन ने ही यह सब किया है। सो उसने जादू के कुछ शब्द पढ़े जिन्होंने नदी का पानी सुखा दिया और ड्रैगन नदी में से बाहर निकल आया।

ड्रैगन ने बाहर निकल कर पूछा — "तुमने यह नदी खाली क्यों की?"

योगी ने जवाब दिया — "क्योंकि तुमने इस नौजवान को काटा। तुमने ऐसा क्यों किया?"

ड्रैगन बोला — "ओ योगी, दो चिड़ियें थीं जो अक्सर यहॉ आया करती थीं और अपने गीतों से यहॉ की हवा को भर दिया करती थीं। इस राजकुमार ने उनको मार दिया। इसलिये मैंने इसको काट लिया।"

योगी बोला — "यह तुमने अच्छा नहीं किया। सुनो, अब तुम अपना जहर इसके पैर से निकाल लो ताकि यह ज़िन्दा हो सके वरना तुम मर जाओगे।"

ड्रैगन बोला — "मुझे माफ करें। जैसा आपने कहा है मैं वैसा ही करता हूँ।"

इस तरह राजकुमार फिर से ज़िन्दा हो गया। उसने योगी को धन्यवाद दिया और आगे चल दिया। पर बदकिस्मती से उसने वह सड़क नहीं ली जिस पर उसका भाई गया था। वह दूसरी सड़क पर चला गया।

उस सड़क पर चलते चलते वह एक गाँव में आ पहुँचा जहाँ कई भयानक डाकू रहते थे। इत्तफाक से उनमें से उसने एक डाकू के घर का दरवाजा खटखटाया और उससे रहने की जगह माँगी तो उसने उसको तुरन्त ही अपने घर में ठहरा लिया।

उन्होंने उसका बड़े ज़ोर शोर से स्वागत किया और अच्छी सी रहने की जगह दी। पर अफसोस जब वह सोने के लिये लेटा तो वह और उसका पलंग दोनों फर्श में से हो कर नीचे एक बहुत ही भयानक तहखाने में गिर पड़े।

वह बेचारा तो वहाँ मर ही गया होता अगर उन डाकुओं की एक लड़की ने उसको वहाँ देख न लिया होता और वह उससे प्यार न करने लगी होती तो। वह तो उस घर को अच्छी तरह जानती थी।

यह भॉपते हुए कि अजनबी को इस कब्र में पसीना आ गया होगा जैसा कि डाकू लोग उस जगह को कहते थे वह छिपे रूप से उसके पास गयी और उसके लिये खाना ले गयी।

इस खाने के बदले में राजकुमार ने उसको सात जवाहरात[25] दिये। वह लड़की रोज सुबह खाना लाती रही और राजकुमार उसको रोज सात जवाहरात देता रहा।

जैसे जैसे वह राजकुमार से मिलती रही उसके लिये उसकी मुहब्बत बढ़ती ही चली गयी। और वह खुद क्योंकि बहुत सुन्दर और अक्लमन्द थी तो राजकुमार भी उसकी तरफ आकर्षित होता चला गया। उसने उससे जल्दी ही शादी करने का वायदा भी कर लिया।

आखिर वे वहॉ से आजाद हो गये और वहॉ से जल्दी से जल्दी एक तेज़ घोड़े पर सवार होकर समुद्र की तरफ भाग गये जहॉ वे एक जहाज़ पकड़ कर वहॉ से निकल लिये जो तभी किनारा छोड़ने वाला था।[26]

दूसरी सवारियों के साथ उस जहाज़ पर एक सौदागर भी था। उसको वह लड़की इतनी अच्छी लगी कि वह राजकुमार को मार कर उससे खुद शादी कर लेना चाहता था।

---

[25] Seven number is because he used to get these seven jewels every morning whenever he slept at a place. Otherwise also Seven number is a sacred number in Aryan faith.

[26] There is no sea in the vicinity of Kashmir. It is the only possibility that they might have come up to Karachi and from there boarded the ship as it is the port.

इस प्लान के अनुसार एक दिन जब वह और राजकुमार नार्ड[27] खेल खेल रहे थे सौदागर ने राजकुमार को समुद्र में धक्का दे दिया।

खुशकिस्मती से उसकी पत्नी वहीं जहाज़ के एक हिस्से में खड़ी हुई थी। उसने देखा कि उसके पति का शरीर ऊपर से नीचे आ रहा है तो उसने तुरन्त ही अपने हाथ बढ़ा दिये और उसको बचा लिया।

जब यह बात कि राजकुमार जहाज़ से गिर गया था सारे जहाज़ में फैली तो यह सब जान कर जहाज़ पर काम करने वाले और उसमें यात्रा करने वाले दोनों ही बहुत दुखी हुए।

राजकुमार ने अपनी पत्नी को मना कर दिया था कि जब तक वे अपनी जगह पर नहीं पहुँच जाते इस मामले की खोज नहीं करनी है। इस तरह वह वहाँ छिपे छिपे रहता रहा। सौदागर इस मामले में राजकुमार की अपनी पत्नी के बाद अपने आपको सबसे ज़्यादा दुखी दिखा रहा था।

खैर फिर वह सौदागर जल्दी ही ठीक हो गया और उसने राजकुमार की पत्नी की तरफ ध्यान देना शुरू कर दिया और उससे अपने साथ शादी करने के लिये कहा।

लड़की ने शादी छह महीने के लिये यह कहते हुए टाल दी कि अगर छह महीने तक उसके पति का कुछ पता नहीं चला तो वह उसके साथ शादी कर लेगी।

---

[27] Nard – any indoor game played with dice

कुछ महीने में ही जहाज़ अपनी जगह पहुँच गया। वहाँ पहुँच कर राजकुमार ने अपने आपको प्रगट किया और सौदागर पर इलजाम लगाया कि उसने उसको डुबोने की कोशिश की। इस बीच सौदागर को जेल में डाल दिया गया जब तक उसके मुकदमे की सुनवायी होती है।

इत्तफाक से वे एक बहुत बड़े शहर के बराबर की जगह पर ही उतरे थे जहाँ वह बड़ा राजकुमार राज कर रहा था। बड़ा राजकुमार उस समय अपने छोटे भाई के बारे में बहुत दुखी था कि उसका भाई इस समय कहाँ था।

सो अपने आपको थोड़ी सी तसल्ली देने के लिये उसने अपने वज़ीर को कह रखा था कि वह रोज शाम को उसको एक कहानी सुनाये।

क्योंकि उसका वज़ीर उसको दिन में जो कुछ सुनता था उसी पर उसको अपनी कहानी सुनाता था इसलिये इस तरह से उसको यह आशा हो गयी थी कि शायद उसको किसी तरह अपने भाई की खबर मिल जाये।

जिस दिन जहाज़ किनारे पर लगा था इस वज़ीर की बेटी समुद्र के किनारे गयी थी जहाँ उसको राजकुमार और उसकी पत्नी और नीच सौदागर की अजीब कहानी सुनने को मिली। वह कहानी उसने आ कर अपने पिता को सुना दी।

अगली शाम को वज़ीर ने वह कहानी राजा को सुना दी। राजा को यह कहानी सुन कर बहुत उत्सुकता हो गयी तो उसने अपने वज़ीर से कहा — "राजकुमार और उसकी पत्नी कहाँ हैं। उनको तुरन्त ही हमारे सामने पेश किया जाये। मुझे लगता है कि मुझे अपना इतने दिनों का खोया हुआ भाई मिल गया है।"

राजकुमार और उसकी पत्नी को तुरन्त बुलवाया गया। तुम लोग सोच सकते हो कि दोनों भाई इतने दिनों के बाद मिल कर कितने खुश हुए होंगे। वे दोनों आपस में गले मिल कर बहुत रोये।

छोटे राजकुमार को उस देश का वज़ीर बना दिया गया। और सौदागर को फाँसी लगा दी गयी।

कुछ साल बाद उनके पिता के कुछ दूत उस देश में आये और उन्होंने बताया कि राजा उन लोगों को देखना चाहता था। जब उसको अपनी नीच पत्नी की नीच हरकत का पता चला तो उसने उसको मार दिया।

यह सुन कर दोनों भाई अपने पिता से मिलने तुरन्त ही चल दिये। वे लोग वहाँ सुरक्षित पहुँच गये और जा कर अपने पिता से मिले। अब दोनों आपस में मिल कर रहे।

कुछ समय बाद ही राजा मर गया। बड़ा राजकुमार उसके वारिस की हैसियत से उस देश का राजा बन गया और छोटा राजकुमार उस देश का राजा बन गया जहाँ उसका बड़ा भाई राज कर रहा था।

दोनों राजकुमार बहुत फले फूले और अपनी होशियारी न्याय और दया के लिये मशहूर हुए।

23 नीच दोस्त[28]

एक बार की बात है कि एक जगह एक बहुत बड़ा और अमीर राजा रहता था। उसके एक ही बेटा था। जब उसका बेटा बड़ा हो गया तो उसने सोचा कि वह उसको एक सौदागर की हैसियत से दूर देशों में भेजे।

ताकि उसको दूसरे लोगों के बारे में दूसरी जगहों के बारे में दुनियाँ के बारे में कुछ जानकारी हासिल हो ताकि जब उसका राजगद्दी पर बैठने का समय आये तो वह राजा बनने पर अच्छी तरह से राज कर सके।

सो उसने उसको बहुत सारा पैसा दिया बहुत सारा सामान दिया और उससे कहा कि वह जहाँ चाहे जाये पर अपनी आँखें खुली रखे और जितना चाहे उतना पैसा कमा कर लाये।

सब तैयारी हो जाने पर राजकुमार जाने के लिये तैयार हुआ। वज़ीर का बेटा उसका बहुत अच्छा दोस्त था वह उसके साथ जा रहा था और बहुत सारे नौकर और घोड़े।

घूमते घामते वे सब समुद्र के किनारे एक जगह आ पहुँचे जहाँ एक जहाज़ अपना लंगर उठाने ही वाला था। वहाँ वे विदेश की यात्रा के लिये उस जहाज़ पर सवार हो लिये।

---

[28] Base Friend (Tale No 23)

कुछ समय तक तो सब ठीकठाक रहा जब तक वे एक टापू के पास से गुजरे। वहाँ जहाज़ ने अपना लंगर डाल दिया। यहाँ वह कुछ घंटों के लिये रुकने वाला था सो राजकुमार अकेला ही बाहर टापू घूमने के लिये निकला क्योंकि उसके दोस्त वज़ीर के बेटे ने बीमार होने का बहाना कर के बाहर जाने से मना कर दिया।

वज़ीर का बेटा बहुत ही नीच आदमी था। उसने राजकुमार को उकसाया कि वह टापू पर खूब लम्बा घूम कर आये और उधर जहाज़ के कप्तान और नाविकों को रिश्वत दी कि वे राजकुमार को वहाँ से बिना लिये ही चले जायें।

सो वह जहाज़ राजकुमार को लिये बिना ही वहाँ से चला गया। उसने कप्तान से गोल घूम कर वापस वहीं चलने के लिये कहा जहाँ से वे चले थे। वहाँ उसने सब राजकुमार का सब सामान बेचा और राजा के पास लौट गया।

राजा ने पूछा — "अरे तुम बहुत जल्दी वापस आ गये। और राजकुमार कहाँ है?"

वज़ीर का बेटा बोला — "योर मैजेस्टी मुझे बहुत अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि राजकुमार तो मर गया। हुआ यों कि हम लोग एक टापू के पास से ठीक से जा रहे थे कि ज़ोर का एक तूफान आया और इतना बढ़ा कि उसने पूरे जहाज़ को अपनी चपेट में ले लिया। जहाज़ में जो कुछ भी था सब पानी में डूब गया।

मैंने राजकुमार को बचाने की बहुत कोशिश की पर अफसोस मैं उनको नहीं बचा सका। मैं भी बड़ी मुश्किल से बच कर वहाँ से निकल सका।"

राजा ने जब यह सुना तो राजा तो दुख के सागर में डूब गया। वह अपने बेटे के लिये बहुत दिनों तक रोता रहा। इस समय में उसकी हालत पागलों जैसी हो गयी। वह न किसी की परवाह करता था और न कोई काम करता था। बस हमेशा अपने बेटे के लिये ही रोता रहता।

इस बीच राजकुमार के हालात अच्छे हुए। जैसे ही उसको अपने दोस्त की नीचता का पता चला तो उसने रात को ठहरने की जगह ढूँढनी शुरू कर दी। उसने एक साफ झरने के पास एक जगह ढूँढ ली जहाँ जा कर वह इस आशा में सोने के लिये लेट गया कि अगली सुबह उसके लिये कुछ अच्छा ले कर आयेगी।

जब वह सो रहा था तो झरने में से स्वर्ग की एक अप्सरा निकली जिसके साथ बहुत सारे सिपाही थे वहाँ आ कर वह खाना खाने बैठ गयी। जब वह खुद खाना खा चुकी तो वह राजकुमार के पास गयी और उसको कुछ खाना दिया।

राजकुमार ने उसका दिया वह खाना खाया और उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया क्योंकि जबसे वह जहाज़ से उतरा था उसने कुछ भी नहीं खाया था। खाना खा कर उसने उस अप्सरा से पूछा — "ओ सुन्दरी तुम कौन हो और कहाँ से आयी हो?"

सुन्दरी बोली — "जनाब मैं स्वर्ग से आयी एक अप्सरा हूँ। आप मुझे अपनी कहानी बतायें तो शायद मैं आपकी कुछ सहायता कर सकूँ।"

राजकुमार बोला — "सुन्दरी मैं एक राजकुमार हूँ। मैं अपने पिता की इच्छा से अनुभव और ज्ञान पाने के लिये इधर उधर घूम रहा हूँ ताकि मैं उनके बाद मैं अच्छी तरह से राज कर सकूँ। मैं बहुत सारा सामान ले कर जहाज़ में जा रहा था कि जहाज़ यहाँ कुछ घंटों के लिये रुका सो मैं इस टापू को देखने के लिये नीचे उतर आया।

पर जब मैं जहाज़ के कप्तान के बताये समय पर जहाज़ पर चढ़ने के लिये पहुँचा तो वह जहाज़ वहाँ से जा चुका था। मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि इस काम में मेरे दोस्त वज़ीर के बेटे का हाथ था जो मेरे साथ यात्रा कर रहा था।"

अप्सरा बोली — "ओह वह नीच आदमी। उसको अपनी इस नीचता का फल भुगतना पड़ेगा। जनाब आप इस समय सोइये मैं कल सुबह आपको आपके पिता के पास पहुँचा दूँगी। यह आदमी भी शायद लौट कर वहीं गया होगा। तब आप इसको आमने सामने बुरा भला कह सकते हैं।"

इतना कह कर वह अपने सिपाहियों के साथ झरने में ही गायब हो गयी। राजकुमार सोने चला गया।

अगली सुबह वह फिर आयी। उसको जगा कर उसने उसको उसका नुकसान भरने के लिये कई कीमती जवाहरात दिये और उससे जाने के लिये कहा। उसकी बात मान कर वह बहुत सारे सिपाहियों को साथ ले कर चल दिया तो उसने अपने आपको अपने महल के रास्ते पर पाया।

राजा उस समय अपने सोने वाले कमरे में बैठा हुआ था। उसने उस कमरे की खिड़की से एक बहुत बड़ा जुलूस आता देखा तो सोचा "यह कौन आ रहा है।" उसने अपने दरबान को बुलाया और उसको यह देखने के लिये भेजा कि उसके महल की तरफ यह कौन आ रहा था।

उसने दरबान को कुछ मोती दिये और उससे कहा — "जाओ भाग कर जाओ और देखो कि यह कौन आ रहा है। कहीं ऐसा न हो कि यह कोई ताकतवर दुश्मन हम पर हमला करने आ रहा हो।"

जब वह वहाँ पहुँचा तो राजकुमार ने उससे कहा — "जाओ और वापस जा कर अपने राजा से कहो कि मैं उनका एक दोस्त हूँ और उनके बेटे के बारे में खबर देने आया हूँ। उसके बारे में मुझे कुछ अजीब खबरें मिली है।"

यह सुन कर राजा ने उसका अपने महल में बड़ी शानो शौकत के साथ स्वागत किया। उसने राजकुमार को आँखों में आँसू भर कर अपने राजकुमार के जहाज़ के डूब जाने की कहानी सुनायी। फिर

उसने वज़ीर के बेटे को बुलाया ताकि वह उसके कहे को ठीक साबित कर सके।

यह सब सुन कर राजकुमार अपने आपको रोक न सका और बोला — "पिता जी आप अपने ऑसू पोंछ लें। आपका बेटा वापस आ गया है। मैं ही हूू आपका बेटा। हमारे जहाज़ को किसी तूफान ने नहीं डुबोया था। किसी लहर ने मुझे नहीं मारा। बल्कि मैं एक अकेले टापू पर जहॉ कोई नहीं रहता था भूखा मरने के लिये छोड़ दिया गया था।"

फिर उसने वजीर के बेटे की तरफ इशारा करते हुए कहा — "इस आदमी ने जहाज़ के कप्तान को रिश्वत दी कि वह मेरे बिना ही जहाज़ को ले जाये ताकि मेरे पीछे यह मेरा सब सामान बेच कर उसका सारा पैसा हड़प ले।"

राजा चिल्लाया — "ओ नीच आदमी।" फिर अपने आदमियों को उसको फॉसी का हुक्म सुनाते हुए कहा कि ऐसे लोगों को हमारे बीच रहने का कोई अधिकार नहीं है।"

राजा को अपना बेटा ज़िन्दा पा कर बहुत खुशी हुई। कुछ समय बाद राजा मर गया और फिर उसके बाद उसके बेटे ने सफलतापूर्वक राज किया।

24 हायबन्द और ज़ोहरा ख़ातून[29]

किसी के अगर कोई बेटा न हो तो यह एक बड़े दुख और शर्म की बात है। यह बहुत दिनों पहले की बात है कि एक बहुत ही अमीर सौदागर बहुत दुखी रहता था क्योंकि उसके कोई बेटा नहीं था।

वह हमेशा यही सोचता रहता था कि कौन उसका नाम आगे चलायेगा। कौन उसका व्यापार सँभालेगा। वह किसको अपना इतना सारा पैसा दे कर जायेगा।

ऐसे ही सवाल उसके दिमाग में हमेशा घूमते रहते थे और उसकी नाउम्मीद आत्मा से एक ही दुख भरा जवाब बार बार आता "मेरे कोई बेटा नहीं है।" "मेरे कोई बेटा नहीं है।"

उसने बताये गये समय पर बहुत प्रार्थनाऐं कीं। उसने बताये गये दिनों पर बहुत उपवास किये। उसने बतायी गयी चीज़ों के बहुत दान दिये। पर ऐसा लगता था जैसे भगवान की कृपा दृष्टि उसके ऊपर थी ही नहीं। उसके कान उसकी तरफ से खुले ही नहीं थे। ऐसा उसको लगता था।

भगवान जो सोचता है वह आदमी के सोचने से मेल नहीं खाता। भगवान की इच्छा थी कि उसको एक बेटा मिले सो समय आने पर उसके एक छोटा सा बेटा पैदा हुआ। सौदागर ने उसका

---

[29] Haya Band and Zuhra Khotan (Tale No 24)

नाम हायबन्द रखा। जब वह पॉच साल का हो गया तो उसने उसको स्कूल भेजना शुरू कर दिया। वह 10 साल का होने तक पढ़ता रहा।

एक दिन वह सौदागर अपनी दूकान की खिड़की के पास बैठा हुआ था कि उसकी दूकान के सामने से दो लड़के फटे कपड़े पहने जा रहे थे।

उसने उनको बुलाया और उनसे पूछा कि वे इतने गरीब क्यों थे। उन्होंने उसको बताया कि उनके माता पिता और भाई मर चुके थे और वे अपने किसी ऐसे दोस्त या रिश्तेदार को नहीं जानते थे जिससे वे कोई सहायता ले सकें इसी लिये वे इस तरह मारे मारे फिर रहे थे।

यह सुन कर सौदागर को उन पर दया आ गयी। वह उनको यह सोच कर अपने घर ले गया कि उसके बेटे को उनका अच्छा साथ मिल जायेगा और साथ में वह उसकी दूकान पर इधर उधर का काम भी कर दिया करेंगे। साथ में उनकी भी सहायता हो जायेगी। उसने उनको अपने बेटे के साथ ही पढ़ाया लिखाया।

अब जैसा कि हम देखेंगे कि ये बच्चे उसके लिये बहुत ही बुरे साबित हुए। बजाय इसके कि वे अपने इस दयालु मालिक को और प्यारे से साथी को धन्यवाद देते या उनकी सहायता करते उन्होंने तो उनके खिलाफ जालसाजी शुरू कर दी और उनको बड़ी शर्मनाक हालत में डाल दिया।

वे सौदागर के बेटे हायबन्द के साथ रोज स्कूल जाते पर हायबन्द तो बड़ी मेहनत से पढ़ता जिससे वह तो बहुत होशियार हो गया जब कि वे दोनों आलसी और लापरवाह थे सो उन्होंने वहाँ अपने जैसे बच्चों से सिवाय बुराइयों के और कुछ नहीं सीखा।

एक दिन जब वे तीनों सुबह को स्कूल जा रहे थे तो वे शादी के बारे में बात करने लगे। उन दोनों बच्चों ने हायबन्द से कहा — "देखो हमें मालूम है कि तुम्हारी शादी तो बहुत जल्दी ही हो जायेगी। क्या तुम अपने पिता से कह कर हमारी शादी नहीं करवा सकते?"

हायबन्द बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। मैं अपने पिता जी से कहूँगा कि वह तुम्हारी शादी पहले कर दें बाद में मेरी शादी करें।"

इसके कुछ समय बाद ही सौदागर ने शादी कराने वाले को कई जगह भेजा कि वह किसी अमीर परिवार की कोई सुन्दर पढ़ी लिखी होशियार लड़की देख कर आये। लड़की देख ली गयी और हायबन्द की शादी तय हो गयी।

शादी के दिन सौदागर ने अपने दोस्तों को एक बहुत बड़ी दावत दी और गरीबों को बहुत दान दिया। फिर उसने अपने बेटे को राजा जैसे कपड़े पहनाये और उसको दुलहिन के घर भेजा।

दोनों नीच लड़कों को इस बात का पता था सो वे उससे पहले ही उसकी ससुराल पहुँच गये और दुलहिन के माता पिता को

बरगलाने की कोशिश की कि हायबन्द तो कुछ पागल सा है आप किससे अपनी बेटी की शादी कर रहे हैं।

यह सुन कर वे दोनों बहुत दुखी और नाराज हुए। यह बात अगर उनको कुछ पहले पता चली होती तो उन्होंने सगाई तोड़ दी होती पर अब वे क्या करें। अब तो बहुत देर हो चुकी थी। दुलहा अपने घर से चल चुका था।

इधर वे दोनों लड़के फिर हायबन्द से मिलने के लिये जल्दी से चल कर वापस आये और उसको दवा मिले हुए कुछ फल खाने पर मजबूर किया। उन फलों को खा कर तो वह बिल्कुल ही बेवकूफ सा दिखायी देने लगा।

इसके बाद वह तुरन्त ही सौदागर के पास उसके घर गये और ऑखों में ऑसू भर कर बोले जैसे कि वे अपनी इस खोज पर बहुत दुखी हों कि वह लड़की जिससे वह हायबन्द की शादी करने जा रहा था वह तो एक राक्षसी थी और आदमियों को खा जाने वाली थी।

हायबन्द का पिता यह सुन कर सोच में पड़ गया। अब वह क्या करे। शादी की घड़ी आ रही थी और सब लोग दुलहे के इन्तजार में थे।

जब हायबन्द अपनी ससुराल पहुॅचा तो उसके सास ससुर ने उसको ठीक से देखा भाला और जब उन्होंने उसको कुछ सोया सोया सा खोया खोया सा और बेवकूफी की हालत में पाया तो उनको

लगा कि वे दोनों लड़के सही बोल रहे थे। सो उन्होंने उसको अपनी बेटी देने से इनकार कर दिया।

पर वह लड़की जिससे हायबन्द की शादी होने वाली थी और जिसका नाम ज़ोहरा ख़ातून था बहुत होशियार और अक्लमन्द थी। उसको लगा कि इसमें उन लोगों की कोई जाल बिछाने की साजिश है।

उसने अपने पिता को मजबूर किया कि वह उसकी शादी हायबन्द से ही कर दें। उसको पूरा विश्वास था कि हायबन्द के पिता इतने सीधे और ईमानदार आदमी थे कि उनको बेवकूफ बनाना बहुत आसान था। खैर शादी की सारी रस्में पूरी की गयीं और उन दोनों की शादी हो गयी।

शाम तक उन दवाओं का असर कम होने लगा तो हायबन्द को होश आने लगा। होश में आने पर उसने अपनी पत्नी को पहचान लिया और उसका साथ पा कर बहुत खुश हुआ।

कुछ दिन बाद रीति रिवाजों के अनुसार हायबन्द और उसकी पत्नी अपने घर वापस लौटे। रास्ता थोड़ा लम्बा था सो उन्होंने उसको दो बार में पूरा करने का इरादा किया। आधे रास्ते में पहुँच कर उन्होंने एक गॉव में रात को रुकने का फैसला किया।

जब ज़ोहरा सोने चली तो अचानक उसे याद आया कि वह अपनी सास के लिये तो कोई भेंट लायी नहीं है। पर अब वह क्या

करे। ससुराल में खाली हाथ जाना तो ठीक बात नहीं थी। वह बहुत दुखी हुई पर फिर किसी तरह से उसे नींद आ गयी।

जब वह सो रही थी तो उसने सपना देखा कि एक बहुत गुणी सा आदमी उसकी तरफ बढ़ा चला आ रहा था।

उसके पास आ कर वह उससे बोला — "ओ भली लड़की। तू दुखी मत हो। तू नदी के पास जा। वहाँ तुझे एक लाश पानी पर तैरती मिल जायेगी जिसकी बाँह पर एक बहुत कीमती ब्रेसलैट है। तू उस लाश को पुकारना तो वह तेरा कहा मानेगी और तेरे पास आ जायेगी। तू उसका वह ब्रेसलैट उतार लेना और अपनी सास को दे देना।"

यह अजीब सा सपना देख कर उसकी आँख खुल गयी। वह तुरन्त उठी और नदी की तरफ चल दी। वहाँ जा कर उसने देखा कि उससे थोड़ी ही दूर पर एक लाश तैर रही थी। उसने उसको पुकारा तो वह उसके पास आ गयी। उसने उसके हाथ से ब्रेसलैट उतारा और अपने घर आ कर सो गयी।

सिवाय उन दोनों नीच लड़कों की नीचता के सब कुछ ठीक चलता रहता पर उन्होंने यह सब कुछ देख लिया था और यही हो भी रहा था जो वह चाहते थे।

उनको तो बस अब किसी भेड़ का खून नदी की तरफ जाने वाले रास्ते पर और नदी के किनारे पर छिड़कना था और फिर भाग

कर अपने मालिक सौदागर के पास उसको यह बताने जाना था कि उनकी बहू किस तरह से बर्ताव कर रही थी।

उन्होंने ऐसा ही किया। सौदागर तुरन्त ही उनके पीछे पीछे भागा आया। जब उसने खून के निशान देखे तो वह ऐसे रो पड़ा जैसे कोई मरने वाला रोता है।

सुबह को वह अपने बेटे के पास गया और उसको वह सब बताया जो उसने सुना और देखा पर उसके बेटे को उसका विश्वास ही नहीं हुआ और वह अपने पिता से बहुत नाराज हो गया।

सुबह को पूछने पर दाई ने बताया कि आधी रात के करीब उसकी मालकिन कुछ देर के लिये घर के बाहर गयी तो थी लेकिन वह बाहर गयी क्यों थी यह उसको नहीं पता।

हायबन्द को यह सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ और उसको इस नीच कहानी पर विश्वास करना पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि वह अपनी पत्नी से अलग अलग रहने लगा। सारी बारात दुखी सी सौदागर के घर वापस आयी। ज़ोहरा को एक अलग कमरे में रख दिया गया जहाँ केवल उसकी दाई ही जा सकती थी और कोई नहीं।

एक दिन ज़ोहरा की सास ने दरवाजे की झिरी से ज़ोहरा के कमरे में झाँक कर देखा तो वह तो वहाँ का दृश्य देख कर डर के मारे बेहोश होते होते बची।

इस तरह काफी समय बीत गया। इस बीच हायबन्द अपने उन दोनों नीच दोस्तों के साथ पिता के बिजनेस में उनकी सहायता करता रहा। वह अभी भी उन दोनों को अपना दोस्त ही समझता था।

एक दिन सौदागर ने उन तीनों को एक छोटे से व्यापार के लिये शहर से बाहर भेजा। उसने ऐसा इसलिये किया था क्योंकि उसने देखा कि हायबन्द अपनी पत्नी के लिये बहुत दुखी था। तो उसने सोचा कि इससे शायद उसका मन कुछ बदल जाये।

तीनों नौजवान अपनी यात्रा पर चल दिये। वे कई मील चले कि हायबन्द को अचानक याद आया कि वह अपने हिसाब की कापियॉ तो घर पर ही भूल आया है। वह उनको लेने के लिये घर वापस लौटा और अपने दोस्तों से यह वायदा किया कि वह शाम तक लौट कर उनको पकड़ लेगा।

ये हिसाब की कापियॉ ज़ोहरा के कमरे में रखी हुई थीं। वे वहॉ थी ही क्यों यह तो हमको नहीं पता पर वे वहॉ थीं सो घर लौट कर हायबन्द तुरन्त ही ज़ोहरा के कमरे की तरफ दौड़ा। वहॉ उसने अपनी पत्नी को देखा। वह दुखी होने पर भी बहुत सुन्दर दिखायी दे रही थी बहुत अच्छी और बहुत प्यारी।

हायबन्द अपने आपको रोक न सका उसने उसको अपनी तरफ खींच कर गले लगा लिया और चूम लिया। वह उसके पास छिप कर एक महीने तक रहा और फिर वहॉ से यह देखने के लिये अपने

साथियों के पास चला गया कि उनका और उनके सामान का क्या हुआ।

उसने उनको पहले पड़ाव पर ही पाया जहाँ उसने उनसे मिलने का वायदा किया था। वे वहाँ से कहीं गये भी नहीं थे और न ही कोई चीज़ उन्होंने बेची ही थी। वे तो बस वहाँ खा पी कर और जुआ खेल कर आनन्द कर रहे थे।

हायबन्द ने जब यह सब देखा तो वह बहुत नाराज हुआ। उसने उन दोनों को बहुत डाँटा और वह वहाँ से अकेला ही व्यापार करने चल दिया। ये दोनों बेचारे घर वापस लौट आये।

अब ये दोनों भी हायबन्द से बहुत नाराज थे सो इन्होंने उसके साथ चाल खेलने की सोची। इन दोनों दोस्तों ने एक फकीर का वेश रखा और सौदागर के घर पहुँचे।

वहाँ जा कर बोले — "आप समय रहते सँभल जाइये। आपके घर में एक राक्षसी है जिसको बच्चे की आशा हो गयी है। उसका चरित्र ठीक नहीं है। भगवान के लिये अपने लिये आप उसको घर से बाहर निकाल दीजिये कहीं ऐसा न हो कि वह आपके घर को और आस पास के लोगों को बरबाद कर दे।" यह कह कर वे वहाँ से चले गये।

अब हम केवल सोच ही सकते हैं कि जब सौदागर और उसकी पत्नी ने फकीरों के मुँह से ऐसी बात सुनी होगी तो उसका उन पर क्या और कितना गहरा असर हुआ होगा। यह सुन कर तो वे चैन

से ही नहीं बैठे जब तक उन्होंने इस बात की सच्चाई की पता नहीं कर ली।

उन्होंने अपना पूरा घर छान मारा घर की हर स्त्री से पूछा पर जैसा कि फकीरों ने उनसे कहा था वैसा कुछ भी नहीं पाया। तब वे इस सच्चाई का पता लगाने के लिये खुद ज़ोहरा के पास गये। वहाँ उनको पता चला कि उसको तो वाकई बच्चे की आशा थी।

उसने उनको बहुत समझाने की कोशिश की कि वह कोई राक्षसी नहीं थी बल्कि एक गुणवती स्त्री थी पर सब बेकार। सौदागर ने अपने दीवान को बुला भेजा और उससे उसको सजा देने के लिये कहा।

सजा में उसको जंगल ले जाना था जहाँ उसका सिर काट देना था। ऐसा ही हुआ। जंगल पहुँच कर उसने अपने सजा देने वालों से प्रार्थना की कि वे उस पर दया करें।

वह बोली — "आप लोग इतने बेरहम और अन्यायी नहीं हो सकते कि आप एक सीधी सादी स्त्री का कत्ल करें। मैंने ऐसा कुछ नहीं किया है जिसके लिये मुझे मौत की सजा मिले। और न आप मेरे खिलाफ कुछ साबित कर सकते हैं। क्या अब भी आप मेरा कत्ल करेंगे?"

वे बोले — "हम क्या करें हमें ऐसा ही हुक्म मिला है।"

इस पर ज़ोहरा जमीन पर नीचे लेट गयी और भगवान की प्रार्थना करने लगी — "हे भगवान मुझ पर दया कर। तू तो जानता है कि मैंने कोई पाप नहीं किया है। मुझे इस सजा से बचा।"

एक सिपाही आगे बढ़ा और उसने ज़ोहरा को मारने के लिये अपनी तलवार उठायी तो लो देखो वह तलवार तो लकड़ी की हो गयी। तब दूसरे सिपाही ने अपनी तलवार उठायी तो वह अपने हाथ ही नहीं उठा सका। उसको ऐसा लगा जैसे किसी छिपी हुई ताकत ने उसके हाथ उसके पीछे बॉध दिये हों। इसके बाद तीसरा आदमी अपनी तलवार उठा कर आगे बढ़ा तो वह बेहोश हो कर नीचे गिर गया।

इस तरह भगवान ने उस स्त्री की पुकार सुनी और उन दोनों दोस्तों के नीच इरादों को नाकामयाब कर दिया। जब सिपाहियों ने यह देखा तो उनको यह विश्वास हो गया कि वे भगवान की इच्छा के खिलाफ काम कर रहे थे।

वे बोले — "हम तुम्हें नहीं मारेंगे। पर हम तुमसे प्रार्थना करते हैं कि अब तुम हमें यह बताओ कि हम अपने आपको कैसे बचायें। क्योंकि जब सौदागर और दीवान साहब को पता चलेगा कि हमने उनका हुक्म नहीं माना और तुम्हें नहीं मारा तो वे हमसे नाराज हो जायेंगे और हमको सजा देंगे। हमारे लिये तो उनका यही हुक्म था कि हम तुम्हें मार दें और तुम्हारा सिर ले जा कर उनको दे दें।"

ज़ोहरा ख़ातून बोली — "आप डरें नहीं।" कह कर उसने जमीन पर से कुछ मिट्टी उठाई और उसका एक सिर बनाती हुई बोली — "मैं इस मिट्टी का अपने सिर जैसा एक सिर बनाती हूँ।"

सिर बना कर उसने भगवान से प्रार्थना की कि वह इसको मॉस और खून का बना दे। भगवान ने उसकी प्रार्थना सुनी। वह मिट्टी का सिर एक जीते जागते हाड़ मॉस का सिर बन गया और उससे खून टपकने लगा।

वह सिर वह उन सिपाहियों को दे कर बोली — "लीजिये यह सिर ले जा कर आप सौदागर साहब को दे दीजियेगा।" सिपाहियों ने वह सिर लिया और घर वापस लौट गये। सौदागर ने जब वह सिर देखा तो वह बहुत खुश हुआ। उसने उसे बाहर अपने बागीचे में टॉग दिया।

ज़ोहरा ख़ातून कुछ दिन तक जंगल में ही रहती रही और वहॉ जो भी फल सब्जियॉ मिले वे खाती रही। कुछ दिन बाद उसने वहॉ से जाने का विचार किया तो उसने एक पेड़ से कहा कि वह हायबन्द का पता करे और उसको बताये कि उसकी पत्नी कहॉ गयी।

फिर वह दूसरे देश चल दी। वहॉ जा कर वह एक बूढ़ी विधवा स्त्री से मिली और उसी के घर ठहर गयी। दिन में वह लकड़ियॉ और कुछ और चीज़ें चुनने जाती जिनको वह शाम को बाजार में बेच आती। रात को वह उस बुढ़िया के घर में सो जाती। समय आने पर उसने एक सुन्दर से बेटे को जन्म दिया।

इत्तफाक की बात कि उसी समय वहाँ की रानी को भी बच्चा होने वाला था। वह प्रार्थना कर रही थी कि उसके बेटा हो जाये क्योंकि राजा ने उसको धमकी दी थी कि अगर उसके बेटा नहीं हुआ तो वह उसको मरवा देगा। इसलिये उस बेचारी को बहुत चिन्ता लगी थी।

उसने शाही दाइयों को बुलवा कर पूछा भी कि उसके बेटा होगा कि नहीं। पर सबने मना कर दिया कि नहीं उसके बेटा नहीं होगा। उन्होंने उसको सलाह दी कि वह कोई हाल का जन्मा बेटा ले ले और वह बेटी जो वे सोचती थीं कि उसको होगी उसको किसी को दे दे।

रानी ने उनकी सलाह मान ली और एक नये जन्मे लड़के को ढूँढने के लिये सब जगह अपने दूत भेज दिये। उन दूतों में से एक दूत उस बूढ़ी विधवा के घर भी आया। उसने जब वह नया जन्मा बेटा वहाँ देखा तो उससे रानी के लिये उसको उसे बेचने की प्रार्थना की।

वह बुढ़िया बहुत लालची थी सो वह राजी हो गयी। उसने उस बच्चे को उस आदमी को दे दिया और वह दूत उस बच्चे को रानी के पास ले गया। जब रानी के बच्चा हुआ तब बच्चे के जन्म की खबर फैलायी गयी। सारे देश में खूब खुशियाँ मनायी गयीं।

उधर जैसे ही दूत ज़ोहरा के बेटे को ले कर गया बुढ़िया ने कुछ पत्थर इकट्ठा किये और उनमें से एक बड़ा पत्थर वहाँ रख दिया जहाँ

ज़ोहरा का बच्चा सोता था और बाकी बचे पत्थर एक आलमारी में रख दिये।

जब ज़ोहरा वापस लौटी तो उसने उससे कहा कि कोई दैवीय स्त्री[30] वहाँ आयी थी जिसने उस बच्चे को पत्थर में बदल दिया जैसे कि उसने उसके पहले कई बच्चों के साथ किया था। इसको साबित करने के लिये उसने उसको आलमारी में रखे हुए वे बचे हुए पत्थर दिखलाये जो उसने वहाँ पहले से ही रखे हुए थे। उसने उसको यह भी बताया कि वह राक्षसी साल में वहाँ एक बार आती थी।

बेचारी ज़ोहरा खातून अपने बच्चे के इस तरह खो जाने पर बहुत दुखी हुई बहुत रोई। पहले तो उसका पति चला गया और अब उसका बच्चा भी चला गया। वह तो बस अब मरना चाहती थी। यह दुनियाँ उसके लिये बहुत ही खराब और मुश्किल वाली लगी। वह अब किसके लिये जिये।

उसकी ज़िन्दगी दूभर हो गयी थी वह बस दिन में लकड़ी और फल जैसी चीज़ें इकट्ठी करके लाती और हर रात को उस नीच बुढ़िया के अजीब से घर में लौट आती जिसमें उसको बिल्कुल भी आराम नहीं मिलता था।

इस बीच उसका बेटा यानी राजकुमार बड़ा होता रहा। वह एक बहुत ही चतुर और गुणी नौजवान बन गया। अपना काम करते समय अक्सर वह इस बुढ़िया विधवा के घर के पास से गुजरता।

---

[30] Translated for the words “Heavenly Woman”.

एक दिन शाम को जब वह उस बुढ़िया के घर के पास से गुजर रहा था तो उसने ज़ोहरा को देखा जो अपना दिन का काम खत्म करके घर लौट रही थी। वह उसकी सुन्दरता देख कर चकित रह गया। उसने यह भी देख लिया कि वह कहाँ रहती थी।

जब वह महल लौटा तो राजा के पास गया और उस स्त्री से अपनी शादी करने की प्रार्थना की। राजा ने कहा कि वह उसके बारे में सोचेगा। उसने ज़ोहरा खातून को अपने महल में बुलाया। वह खुद भी उसकी सुन्दरता और सीधेपन से बहुत प्रभावित हुआ। उसने उससे अपने बेटे के प्यार की बात बतायी और उससे पूछा कि क्या वह उससे शादी करना पसन्द करेगी।

इस पर उसने जवाब दिया कि वह तो पहले से ही शादीशुदा है। उसको यह भी पता नहीं है कि उसका पति ज़िन्दा है या मर गया है।

वह फिर बोली कि अगर उसको अगले छह महीने तक अपने पति की कोई खोज खबर न मिली तो वह राजकुमार से शादी कर लेगी। राजा ने उसकी बात मान ली और इस तरह से यह मामला कुछ दिनों के लिये टल गया।

उस सारे साल और कई और साल तक हायबन्द व्यापार के उद्देश्य से दुनियाँ में देश देश घूमता रहा। आखिर इसी समय के आस पास वह एक बहुत ही अमीर आदमी बन कर अपने घर लौटा।

उसने सोचा था कि उसको अपनी पत्नी अपने घर में ही मिल जायेगी क्योंकि अब तक वह अच्छी साबित हो गयी होगी और उसके घर वालों ने उसको स्वीकार कर लिया होगा।

पर हम उसके दुख की केवल कल्पना ही कर सकते हैं जब उसको घर आ कर यह पता चला होगा कि उसकी पत्नी के साथ क्या क्या हुआ।

उसने अपने माता पिता से पूछा कि उसको मारने वाले उसे किधर ले कर गये थे और कहॉ उन्होंने उनके बेरहम हुक्म का पालन किया होगा।

उन्होंने उसको सब बता दिया तो उसने उसी समय अपनी कुछ चीज़ें बॉधी और उसी दिशा में चल दिया जहॉ उसको उसके मारने वाले ले कर गये थे। भगवान की कृपा से वह उसी जंगल में आ पहुॅचा जहॉ ज़ोहरा को मारा जाने वाला था और उसी पेड़ के पास पहुॅच गया जिससे ज़ोहरा ने अपने पति को अपने बारे में बताने के लिये कहा था।

पेड़ बोला — "तुम्हारी पत्नी मरी नहीं है वह ज़िन्दा है। जो सिर तुम्हारे पिता के पास ले जाया गया था वह तुम्हारी पत्नी का सिर नहीं था। तुम तुरन्त ही फलॉ फलॉ देश चले जाओ वह तुम्हें वहीं मिल जायेगी जिसे तुम ढूॅढ रहे हो। जाओ अल्लाह तुम्हारी रक्षा करे।"

कुछ दिनों की यात्रा के बाद हायबन्द उस देश पहुँच गया और एक सुबह जब वह उस देश के मुख्य शहर के बाजार में घूम रहा था तो उसने कुछ स्त्रियाँ उस बुढ़िया के घर कुछ सामान ले जाती हुई देखीं।

उसने उनसे पूछा — "यह सामान किसके लिये है और इसे तुम लोग कहाँ ले कर जा रही हो।"

उनमें से एक स्त्री ने उसको बताया कि वहाँ एक स्त्री रहती थी जिसका नाम ज़ोहरा ख़ातून था। उसकी शादी वहाँ के राजकुमार से होने वाली है वे ये सामान उसी की शादी के लिये ले कर जा रही हैं।

क्योंकि वह बहुत गरीब है इसलिये राजा ने उसकी शादी के लिये ये कपड़े और गहने भिजवाये हैं। वह कुछ साल पहले किसी दूसरे देश से यहाँ पर आयी थी।"

यह सुन कर हायबन्द ने उस स्त्री को अपना नाम लिखी एक अँगूठी दी और उससे प्रार्थना की कि वह उसे उसको दे दे। वह उनके साथ उसके घर के दरवाजे तक जायेगा और बाहर उसके जवाब का इन्तजार करेगा।

उस स्त्री ने ऐसा ही किया। ज़ोहरा ने तुरन्त ही हायबन्द की अँगूठी पहचान ली। वह दौड़ी दौड़ी बाहर आयी और बहुत दिनों से खोये हुए अपने पति से मिली। यह खबर तुरन्त ही महल भेज दी गयी कि उसको उसका पति मिल गया है।

राजा यह सुन कर बहुत नाउम्मीद हुआ पर राजकुमार तो बिल्कुल पागल सा ही हो गया। वह अपने पागलपन में दौड़ा दौड़ा ज़ोहरा के घर गया और अपनी पूरी कोशिश की कि वह उसके साथ उसके महल चले। पर जैसे ही ज़ोहरा ने उसे देखा तो वह उसको तुरन्त ही पहचान गयी कि वह उसका बेटा है।

सब कुछ साबित हो गया। रानी ने स्वीकार कर लिया कि वह उसका बेटा नहीं था। बूढ़ी विधवा ने भी स्वीकार कर लिया कि वह बच्चा उसने राजा के आदमियों को बेचा था। उस दूत ने भी स्वीकार कर लिया कि वह राजकुमार को उस बुढ़िया के घर से खरीद कर ले गया था।

पर इन सबके अलावा जो सबसे बड़ी बात थी वह यह थी कि राजकुमार की शक्ल अपने माता पिता से बहुत मिलती थी।

राजा ने जब यह सब सुना तो वह तो बहुत गुस्सा हुआ। उसने तुरन्त ही अपनी रानी को देश निकाला दे दिया और उस बूढ़ी विधवा को मरवा दिया। हायबन्द और उसकी पत्नी अपने बेटे के साथ अपने देश वापस लौट आये जहाँ वे बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

25 होशियार गीदड़[31]

यह समय खेतों में हल चलाने का था सो एक किसान सुब सुबह जल्दी ही अपने खेतों में हल चलाने के लिये घर से निकला और अपनी पत्नी से कहता गया कि वह जल्दी से उसका खाना ले कर खेत पर आ जाये।

सो जब उसका चावल तैयार हो गया तो वह उसको अपने पति के लिये ले कर खेत की तरफ चल दी। खेत पर पहुँच कर उसने खाना उससे कुछ दूरी पर रखा और बोली — "यह रहा तुम्हारा खाना। मैं अभी यहाँ ठहर नहीं सकती सो मैं जा रही हूँ।"

किसान बोला "ठीक है।" और अपने काम में लग गया। कुछ देर बाद वह खाना खाने आया तो उसने देखा कि उसके खाने का बरतन तो खाली पड़ा है। वह इस बात पर बहुत गुस्सा हुआ।

जब वह शाम को अपने घर वापस पहुँचा तो उसने अपनी पत्नी को इस तरह की चाल खेलने पर बहुत डाँटा। पर उसने सोचा कि शायद उसका पति उससे झूठ बोल रहा होगा। यह सोच कर वह बहुत दुखी हुई।

---

[31] The Clever Jackal (Tale No 25)

अगले दिन जब किसान फिर से खेत पर जाने लगा तो उसने फिर अपनी पत्नी से वही कहा कि वह उसका खाना खेत पर ले आये और उसको कुत्ते की तरह भूखा न मारे।

उस दिन वह एक बड़ी सी हॅडिया में पिछले दिन से दोगुना चावल उसके लिये ले कर गयी और फिर से खेत में रख कर बोली — "देखो यह तुम्हारा खाना रखा है। अब मत कहना कि मैं तुम्हारे लिये खाना ले कर नहीं आयी। मैं यहॉ ज़्यादा देर नहीं ठहर सकती क्योंकि मुझे घर भी देखना है। घर में कोई नहीं है।" कह कर वह घर वापस लौट गयी।

कुछ ही देर में एक गीदड़ आया – वही गीदड़ जो पिछले दिन भी आया था और उसका खाना खा गया था, और उसने खाने के बर्तन में अपना मुॅह डाला। वह जानवर चावल खाने के लिये इतना उतावला हो रहा था कि उसने अपनी गर्दन उस बर्तन की तंग गर्दन में जबरदस्ती डाल दी।

असल में यह बर्तन पिछले दिन वाला बर्तन नहीं था यह उससे बड़ा था और इसकी गर्दन कल वाले बर्तन की गर्दन से तंग थी। यह बात गीदड़ को पता नहीं थी।

जबरदस्ती अपनी गर्दन बर्तन में घुसाने की वजह से उसकी गरदन उसमें फॅस गयी और वह उसको उसमें से बाहर नहीं निकाल सका। इस तरह से वह इस समय बड़ी भयानक हालत में था।

वह अपना सिर इधर उधर हिलाता हुआ और बर्तन को जमीन से मारता हुआ चारों तरफ को भागने लगा ताकि वह बर्तन फूट जाये और उसका सिर उसमें से बाहर निकल आये।

जमीन पर बर्तन मारने की आवाज काफी हो रही थी सो उससे किसान का ध्यान उधर आकर्षित हुआ। यह देखने के लिये कि यह आवाज कहाँ से आ रही थी किसान ने इधर उधर देखा तो देखा कि एक गीदड़ उसके खाने के बर्तन को लिये हुए इधर से उधर घूम रहा है और उसे जमीन पर पटक रहा है।

उसने तुरन्त अपना बड़ा वाला चाकू उठाया और गीदड़ की तरफ भागा — "अरे तू ठहर जा ज़रा। तो तू है चोर मेरे खाने का। तूने ही कल मेरा खाना चुराया और तू ही उसे आज भी चुराना चाह रहा है।"

गीदड़ चिल्लाया — "मुझे जाने दो किसान भाई मुझे जाने दो। मुझे इस बर्तन में से बाहर निकाल दो तो मैं तुम्हें वही दूँगा जो तुम चाहोगे।"

किसान बोला — "ठीक है।" और यह कह कर उसने अपने खाने का बर्तन तोड़ दिया और गीदड़ को आजाद कर दिया।

गीदड़ चैन की साँस लेते हुए बोला — "धन्यवाद किसान भाई धन्यवाद। तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। पर तुम आज का यह दिन कभी नहीं भूलोगे।"

कह कर गीदड़ ने उसे गुड डे[32] कहा और राजा के महल की तरफ चल दिया जो वहाँ से कुछ दूरी पर था।

शाही कमरे में पहुँच कर गीदड़ बोला — "राजा साहब आप मुझे हुक्म करें तो मैं आपकी बेटी की शादी तय करा दूँ। आप मुझसे गुस्सा मत होइयेगा। मुझे इस मामले पर योर मैजेस्टी से बोलना तो नहीं चाहिये था अगर मैंने राजकुमारी के लायक एक लड़का अभी हाल में न देखा होता तो।"

राजा बोला — "तुम उसको यहाँ ले कर आओ तो फिर हम उसको देखते हैं।"

सो गीदड़ तुरन्त ही उलटे पैरों वापस लौट गया और किसान के घर पहुँचा। उससे उसने तुरन्त ही पड़ोसी राज्य के राजा के पास तैयार हो कर चलने के लिये कहा। उसने कहा कि वह उसको अपना दामाद बनाने के लिये उसको देखना चाहता था।

पहले तो किसान अपने बे पढ़े लिखे और गरीब होने की वजह से कुछ सकुचाया। वह एक राजा से कैसे बात करनी चाहिये वह इस बारे में क्या जानता था। इतने बड़े लोगों के बीच में कैसे उठना बैठना और बात करना चाहिये यह भी उसको आता नहीं था।

और फिर राजा के पास जाने के लिये उसके पास ठीक से कपड़े भी तो नहीं थे।

[32] Normal greetings in day time in English language.

पर गीदड़ ने उसको राजा के महल जाने के लिये मना ही लिया और उसकी हर हाल में सहायता करने का वायदा किया। सो गीदड़ और किसान राजा के महल की तरफ चल दिये।

जब वे राजा के महल पहुँचे तो गीदड़ तो योर मैजेस्टी को ढूँढने चला गया और किसान महल में घुसने वाले कमरे में जूते रखने की जगह के पास वहीं फर्श पर उकड़ूँ बैठ गया और राजा का इन्तजार करने लगा।

गीदड़ राजा के पास पहुँचा और बोला — “योर मैजेस्टी मैं उस लड़के को ले आया हूँ जिसके बारे में मैं उस दिन आपसे बात कर रहा था। वह बहुत ही मामूली कपड़ों में आया है और न कुछ दिखावा ही किया है। वह अपने साथ बहुत सारे आदमी भी नहीं लाया ताकि योर मैजेस्टी को उनको ठहराने की कोई परेशानी न उठानी पड़े।

योर मैजेस्टी को इस बात का बुरा नहीं मानना चाहिये बल्कि उसकी समझदारी की तारीफ करनी चाहिये।”

राजा ने उठते हुए कहा — “बिल्कुल बिल्कुल। चलो मुझे उसके पास ले चलो।”

गीदड़ राजा को वहाँ ले आया जहाँ वह किसान को छोड़ गया था और बोला — “यह यहाँ है।”

राजा गीदड़ से बोला — “क्या? यह जो जूतों के पास उकड़ूँ बैठा है। क्या यह है वह?”

फिर राजा किसान से बोला — "अरे दोस्त तुम वहॉ ऐसी जगह क्यों बैठे हो?"

किसान बोला — "यह एक अच्छी और साफ सुथरी जगह है योर मैजेस्टी और यह जगह मेरे जैसे गरीब के बैठने के लिये ठीक है।"

गीदड़ ने कहा — "आप ज़रा इसकी विनम्रता तो देखिये महाराज कि यह कितना विनम्र है।"

राजा बोला — "तुम आज की रात हमारे महल में रहोगे। कुछ मामले हैं जिनके बारे में मैं तुमसे बात करना चाहूँगा। कल अगर सुविधा हुई तो फिर मैं तुम्हारा घर देख कर आऊँगा।"

उस शाम राजा किसान और गीदड़ तीनों बात करते रहे। जैसी कि किसान से उम्मीद की जाती थी किसान बार बार धोखा देता रहा और चालाक गीदड़ बेचारा मामलों को सॅभालता रहा। आखिर राजा इस रिश्ते के लिये तैयार हो ही गया।

पर कल क्या होगा। गीदड़ रात भर अपने दिमाग में इसी बात पर विचार करता रहा। जैसे ही राजा और किसान अगले दिन सुबह उठे तो गीदड़ ने उनसे शादी की इजाज़त मॉगी और राजा ने हॉ कर दी।

तुरन्त ही गीदड़ किसान के घर की तरफ गया और उसके घर में आग लगा दी।

और जब वे वहाँ आये तो वह रोता हुआ दौड़ कर उनके पास गया और बोला — "राजा साहब मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप लोग और पास मत आइये। इस आदमी की जायदाद और मकान सब कुछ जल गया है। लगता है कि यह इसके किसी दुश्मन का काम है। मैं आप लोगों से प्रार्थना करता कि अभी आप लोग यहाँ से चले जाइये।"

सो बेचारा सीधा सादा राजा वहाँ से लौट गया। कुछ समय बाद राजा ने अपनी बेटी की शादी गँवार बे पढ़े लिखे किसान से कर दी।[33]

[33] This folktale has bad coherency, and has no vey good plot.

26 बेवकूफ लड़का[34]

एक गरीब विधवा की बदकिस्मती और बढ़ गयी जब उसको यह पता चला कि उसका एकलौता बेटा जिससे उसको बड़ी बड़ी उम्मीदें थीं कुछ बेवकूफ सा था।

एक दिन उसने उसको कुछ कपड़ा ले कर बाजार भेजा और कहा कि वह उसको चार रुपये में बेच दे। लड़का उस कपड़े को ले कर बाजार चला गया और उसको बेचने के लिये एक ऐसी जगह बैठ गया जहाँ बहुत सारे लोग आते जाते थे।

एक आदमी उधर आया और उस लड़के से पूछा — "इस कपड़े का क्या दाम है?"

लड़का बोला — "चार रुपये।"

आदमी बोला — "ठीक है पर मैं तुमको छह रुपये दूँगा क्योंकि यह इतने पैसे के ही लायक है।"

लड़का बोला — "नहीं नहीं इसका दाम तो केवल चार रुपये है।"

आदमी गुस्से से बोला — "तुम बेवकूफ हो।" और यह कह कर वहाँ से चला गया। उसने सोचा कि लड़का उससे मजाक कर रहा था।

---

[34] A Stupid Boy (Tale No 26)

लड़का शाम को जब अपने घर पहुँचा तो उसने माँ को यह घटना बतायी तो उसको बहुत दुख हुआ कि उसके बेटे ने उस आदमी के दिये हुए पैसे क्यों नहीं लिये।

एक दिन फिर उसने उसको बाजार भेजा और उसको समझाया कि वहाँ जा कर वह हर एक को सलाम[35] करे। नम्रता में कोई आदमी कुछ भी खोता नहीं है बल्कि अक्सर उसे कुछ मिल ही जाता है।

सो वह बेवकूफ लड़का चल दिया। रास्ते में उसे जो भी मिला वह हर आदमी और हर चीज़ को सलाम करता गया – झाड़ू लगाने वाले को घोड़े को छोटे बच्चों को घर को। कुछ गधे अपनी पीठ पर बोझा लिये जा रहे थे उसने उनको भी सलाम किया।

यह देख कर गधों के मालिक ने कहा — "ओ बेवकूफ यह तुम क्या कर रहे हो। क्या तुम नहीं जानते कि हम इनको कहते हैं फ्री फ्री।" यह सुन कर लड़के ने हर आदमी और हर चीज़ को फ्री फ्री कहना शुरू कर दिया और आगे चल दिया।

जब वह लड़का हर आदमी और हर चीज़ को फ्री फ्री कहता जा रहा था तो उसको एक चिड़िया पकड़ने वाला चिड़ियाँ पकड़ने का जाल बिछाता दिखायी दे गया।

जब उसने लड़के को फ्री फ्री कहते हुए सुना तो उसने देखा कि उसकी चिड़ियाँ तो वहाँ से जा रही हैं। उसने उससे कहा — "ओ

---

[35] Salaam is a Muslim greeting

बेवकूफ तू यह क्या कह रहा है। बहुत ही मुलायम आवाज में कह “लग लग लग लग”। सो लड़के ने धीमे धीमे “लग लग लग लग” कहना शुरू कर दिया।

जब वह “लग लग लग लग” कहता जा रहा था तो रास्ते में उसको एक चोरों का झुंड मिल गया जो एक बागीचे से निकल रहा था। वे लोग वहाँ से कुछ फल चुरा कर निकल रहे थे।

वे बोले — “यह तुम क्या कह रहे हो। या तो चुपचाप रहो ओ बेवकूफ या फिर कुछ और कहो। जाओ और कहो “एक को जाने दो दूसरे को लो।” सो उस लड़के ने ऐसे ही कहना शुरू कर दिया।

जब वह यह कहता जा रहा था तो रास्ते में उसको एक जनाज़ा मिला। जनाज़े के साथ जाने वालों में से कुछ ने कहा — “चुप रहो। क्या तुम्हारे दिल में मरने वाले के लिये कोई इज़्ज़त नहीं है। जाओ घर जाओ।’

आखिर वह बड़ी नाउम्मीदी और टूटे दिल से यह न जानते हुए कि उसे क्या करना चाहिये या उसे क्या कहना चाहिये अपनी माँ के पास लौट आया और उसे सब बताया।

माँ बेचारी क्या करती वह तो खुद ही अपने बेवकूफ बेटे से बहुत परेशान थी।

27 चार राजकुमार जो पत्थर बन गये[36]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक राजा था जिसके चार बेटे थे। उसने उनको कह रखा था कि वे दिन रात उसके राज्य में पहरा दें और देखें कि उसके राज्य में कोई दुखी तो नहीं है किसी को किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं है।

एक सुबह की बात है कि सबसे बड़े राजकुमार को पहरा देते समय एक जोगी मिल गया। वह जोगी एक तालाब के किनारे बैठा हुआ था और उसके पास चार घोड़े घास चर रहे थे। उसने देखा कि वे घोड़े जितने भी घोड़े उसके पिता के पास थे उनसे कुछ अलग ही नस्ल के थे और उनसे अच्छे भी थे।

सो वह जोगी के पास गया और उससे पूछा — "ओ जोगी तुम कौन हो और तुम यहाँ कब आये। तुम्हें यहाँ क्या चाहिये।"

जोगी बोला — "मुझे तुम चाहिये।"

राजकुमार ने आश्चर्य से पूछा — "मैं क्यों? मैं इस देश के राजा का सबसे बड़ा बेटा हूँ। मेरे पिता ने मुझे इस देश को देखने भालने के लिये कहा है कि मैं यह देखूँ किसी को किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं है। तो तुम यह बताओ कि तुमको किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं है।"

---

[36] Four Princes Turned Into Stones (Tale No 27)

जोगी ने फिर वही जवाब दिया — "मुझे केवल तुम चाहिये और कुछ नहीं। पर अगर तुम्हें कुछ चाहिये तो तुम मुझे बताओ मैं तुम्हारे लिये वह ला दूँगा।"

राजकुमार बोला — "ओ जोगी मैं तुम्हारे इन बढ़िया घोड़ों में से एक घोड़े पर सवारी करना चाहता हूँ।"

जोगी बोला — "ठीक है। तुम अपनी सवारी के लिये कोई सा एक घोड़ा ले लो पर ध्यान रखना कि शाम होने से पहले पहले इसे यहाँ वापस ले आना। जब तुम यहाँ आओगे तो मैं उम्मीद करता हूँ कि मैं तुम्हारी दिन भर की सवारी के बारे में तुम्हारे कुछ अनुभव जरूर सुनूँगा।"

राजकुमार ने एक घोड़ा चुना और उस पर सवार हो कर चल दिया। जैसे ही राजकुमार उस घोड़े पर चढ़ा तो उस घोड़े ने तो बहुत तेज़ी से भागना शुरू कर दिया और वह एक जंगल की तरफ भाग गया।

वह एक सब्जी के बागीचे के पास जा कर रुक गया। उस बागीचे के चारों तरफ ऐसी बाड़ लगी थी कि उसके अन्दर कोई नहीं घुस सकता था। राजकुमार जंगल की तरफ कुछ दूर और गया और फिर वहाँ से लौटने लगा।

जब वह वापस लौट रहा था तो उसने देखा कि उस सब्जी के बागीचे के बाड़े में लगे सारे डंडे हँसिया[37] बन

[37] Translated for the word "Sickle". See its picture above.

गये हैं और बागीचे में से सब्जियाँ काट रहे हैं। यह देख कर उसे आश्चर्य तो बहुत हुआ पर उसकी वजह उसकी समझ में नहीं आयी कि ऐसा कैसे हुआ। वह वहाँ से चल कर जोगी के पास आ गया।

जोगी ने उससे पूछा कि उसकी घोड़े की सवारी कैसी रही। उसने रास्ते में क्या कुछ देखा। राजकुमार बोला — "मैंने एक बागीचा देखा जिसके चारों तरफ एक ऐसी बाड़ लगी हुई थी जिसमें से अन्दर जाना नामुमकिन था। मैं उससे थोड़ा और आगे चला गया। फिर जब मैं वापस लौट कर आया तो देखा कि उसी बाड़ के डंडे हँसिया बने उस बागीचे में से सब्जी काट रहे हैं।"

जोगी ने पूछा — "जानते हो इसका क्या मतलब है?"

राजकुमार बोला — "नहीं मैं तो नहीं जानता।"

जोगी बोला — "नहीं जानते? और तुम्हारे पिता ने तुमको इस राज्य की देखभाल करने के लिये कहा है जाओ तुम पत्थर के हो जाओ।" जोगी के यह कहते ही राजकुमार पत्थर का हो गया।[38]

अगली सुबह राजा का दूसरा बेटा शहर की देखभाल के लिये निकला। वह भी उसी जोगी के पास पहुँच गया। उसने भी जोगी के बढ़िया घोड़े देखे तो वह भी उन बढ़िया घोड़ों को देख कर बहुत खुश हो गया।

---

[38] Several of such stones can still be seen in Kashmir valley. People think them as old as Pandava's period and believe that they are petrified bodies of wicked men and women whom the good men cursed to become stone.

वह भी जोगी के पास रुका और उससे पूछा कि वह कौन है और वहाँ कहाँ से आया है। जोगी बोला — "मैं यहाँ इस देश में कुछ दिनों से घूम रहा हूँ। ये चारों घोड़े मेरे हैं। क्या तुम इनमें से किसी एक घोड़े की सवारी करना चाहोगे?

कल राजा का सबसे बड़ा बेटा यहाँ आया था। उसने इनमें से एक घोड़े की सवारी करनी चाही। मैंने उसको किसी भी घोड़े को चुनने और उसकी सवारी की इजाज़त दे दी। पर जब सवारी कर के वह वापस आया तो जो कुछ उसने रास्ते में देखा था वह उसका मतलब मुझे समझा न सका तो मैंने उसको पत्थर का बना दिया।"

राजकुमार बोला — "अच्छा? मगर उसने ऐसा क्या देखा जिसे वह तुम्हें समझा नहीं सका?"

तब जोगी ने उसे बताया कि उसने क्या देखा था और यह वायदा किया कि अगर वह इस बात को उसे समझा सका कि वे डंडे हँसियों में क्यों बदल गये थे तो वह उसके भाई को ज़िन्दा कर देगा।

राजकुमार बोला — "जोगी तुमने तो यह बहुत ही मुश्किल सवाल पूछ लिया। जब मैंने उसे देखा ही नहीं जिसके बारे में तुम मुझसे पूछ रहे हो तो मैं उसे तुम्हें कैसे समझा सकता हूँ। हाँ अगर मैं तुम्हारा एक सुन्दर घोड़ा ले जाऊँ और उसे देख आऊँ तो शायद मैं तुम्हें समझा सकूँ।"

जोगी ने उसको इजाज़त दे दी और वह एक घोड़ा ले कर वहॉ से चला गया। वह घोड़ा भी उसको एक जंगल की तरफ ले गया। वहॉ जा कर उसने देखा कि नयी पैदा हुई बछिया अपनी मॉ को दूध पिला रही है। वह बहुत देर तक इस अजीब दृश्य को देखता रहा और फिर जोगी के पास लौट आया।

जोगी ने पूछा — "तुमने रास्ते में क्या देखा?"

राजकुमार ने उसे बताया कि उसने देखा कि नयी पैदा हुई बछिया अपनी मॉ को दूध पिला रही थी। जोगी ने उससे भी पूछा — "क्या तुम बता सकते हो कि इसका क्या मतलब हुआ?"

राजकुमार बोला — "मैं नहीं जानता।"

जोगी बोला — "क्या? तुम नहीं जानते?"

राजकुमार उसके इस सवाल का जवाब नहीं दे पाया क्योंकि इससे पहले ही वह पत्थर का बन चुका था।

तीसरी सुबह तीसरा राजकुमार शहर की देखभाल के लिये निकला और वह भी उसी जोगी के पास आया। उसने भी उसके घोड़े देखे। वह भी उसके घोड़े देख कर आश्चर्यचकित रह गया। उसने उससे पूछा कि वह कौन था और उसको इतने सुन्दर घोड़े कहॉ से मिले।

उसके इन सवालों पर ध्यान न देते हुए जोगी ने उससे उसके पास बैठ जाने के लिये कहा। बातों बातों में उसने पता चला लिया कि यह भी राजकुमार था और अपने दो बड़े भाइयों की खोज में

निकला था। उसने उसको बता दिया कि उसके दोनों बड़े भाइयों के साथ क्या हुआ।

फिर उसने बाद में उससे यह भी कहा कि वह उसके दोनों भाइयों को ज़िन्दा कर देगा अगर वह यह बता दे कि बाड़े के डंडे हॅसियों में क्यों बदल गये थे और नयी पैदा हुई बछिया अपनी मॉ को दूध क्यों पिला रही थी।

राजकुमार बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद। अगर आप मुझे अपना एक घोड़ा दे दें तो मैं इन अजीब चीज़ों को देख कर आ सकता हूँ और तब शायद आपको कुछ समझा सकूॅ।"

जोगी बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। तुम इनमें से कोई सा घोड़ा ले लो मगर ध्यान रखना कि शाम होने से पहले ही यहॉ वापस आ जाना।"

राजकुमार ने उन घोड़ों में से एक घोड़ा लिया और उस पर सवार हो कर चल दिया। वह घोड़ा भी उसको जंगल की तरफ ले गया जहॉ उसने देखा कि एक आदमी अपनी पीठ पर लकड़ियॉ लादे लिये जा रहा है। वह केवल उन्हीं लकड़ियों से सन्तुष्ट नहीं है जो उसने इकट्ठी कर ली हैं बल्कि वह रास्ते में पड़ी और भी लकड़ियॉ उठाता जा रहा है।

राजकुमार ने सोचा इसका क्या मतलब हो सकता है। जब मैं जोगी के पास पहॅुचूॅगा तो मैं जोगी को इसका क्या मतलब बताऊॅगा। अफसोस यह राजकुमार भी इस दृश्य का मतलब

समझाने में नाकामयाब रहा और जोगी ने इसको भी पत्थर में बदल दिया।

अगली सुबह राजा का चौथा और आखिरी बेटा शहर की देखभाल के लिये और अपने भाइयों को ढूँढने के लिये निकला तो वह भी जोगी के पास आ निकला।

उसने जोगी को प्रणाम किया और उससे पूछा कि क्या उसने उसके तीनों भाइयों को देखा है। जोगी बोला — "हॉ देखा है।"

कह कर उसने एक तरफ इशारा करते हुए उससे कहा कि देखो तुम्हारे तीनों भाई ये खड़े हैं। मैंने ही उनको पत्थरों में बदल दिया है क्योंकि उन्होंने पास के जंगल में जो कुछ देखा था वे उसका मतलब मुझे समझा नहीं सके। पर मैं उनको ज़िन्दा कर सकता हूँ अगर तुम मुझे उन सबका मतलब समझा दो तो।"

इसके बाद उसने उन राजकुमारों द्वारा देखे हुए तीनों दृश्य उसको बता दिये। राजकुमार बोला — "अगर आप मुझे अपना एक घोड़ा सवारी के लिये दे दें तो शायद मैं उनका मतलब बता सकूँ। मैं खुद उस जंगल में जा कर उनको देखना चाहता हूँ।"

जोगी ने उसको इजाज़त दे दी और राजकुमार उन घोड़ों में से एक घोड़ा ले कर जंगल की तरफ चल दिया।

जब वह जंगल में पहुँचा तो वहॉ उसने एक तालाब देखा जिसमें से पानी बह बह कर निकल कर दूसरे तालाबों को भर रहा था। उस

समय वह बड़ा वाला तालाब खाली था क्योंकि उसका सारा पानी उन छोटे तालाबों को भरने में लग चुका था।

शाम को जब वह जोगी के पास लौटा तो जोगी ने उससे भी वही सवाल किया जो उसने उसके तीनों बड़े भाइयों सो किया था कि उसने रास्ते में क्या देखा और उसका क्या मतलब था। यह राजकुमार भी जोगी के इस सवाल का जवाब देने में नाकामयाब रहा। सो जोगी ने इसको भी पत्थर में बदल दिया।

जब राजा को पता चला कि कई दिनों से उसके चारों बेटों में से किसी का भी कोई पता नहीं है तो उसको शक हुआ कि उसके बेटों पर जरूर ही कोई मुसीबत आ पड़ी है। अब वह खुद उनको ढूँढने के लिये निकल पड़ा।

ढूँढते ढूँढते वह भी जोगी के पास आया। उसने भी जोगी से पूछा — "जोगी जी क्या आपने मेरे चारों बेटों को कहीं देखा है?"

जोगी ने एक तरफ खड़े चार पत्थर के खम्भों की तरफ इशारा कर दिया। राजा यह देख कर सकते में आ गया। उसके मुँह से निकला — "कहीं आपका यह मतलब तो नहीं कि वे पत्थर में बदल गये हैं।"

जोगी बोला — "हॉ ये ही हैं वे। मैंने ही उनको पत्थरों में बदल दिया है क्योंकि वे मुझे जंगल में देखे हुए कुछ दृश्यों के मतलब नहीं समझा सके। फिर भी मैं उनको ज़िन्दा कर सकता हूँ अगर तुम

उनका मतलब मुझे समझा दो तो। अगर तुम्हें चाहिये तो तुम मेरा एक घोड़ा ले कर जंगल जा सकते हो।"

राजा बोला — "नहीं धन्यवाद। इसकी कोई जरूरत नहीं है। पर अगर आप मुझे यह बता सकें कि उन्होंने क्या देखा जिसको वे आपको नहीं समझा सके तो शायद मैं उनको आपको समझाने की कोशिश कर सकूँ।"

तब जोगी बोला — "राजन तुम्हारे सबसे बड़े बेटे ने जंगल में एक सब्जी का बागीचा देखा जिसके चारों तरफ ऐसी बाड़ लगी थी जिसको पार कर उसके अन्दर जाना नामुमकिन था। पर जब वह वहाँ से लौटा तो उसने देखा कि उस बाड़ के डंडे हँसिये बन कर उस बागीचे की सब्जी काट रहे हैं। इसका क्या मतलब है।"

राजा बोला — "यह एक ऐसे आदमी की तस्वीर है जिसके पास कुछ पैसा सुरक्षा के लिये रखा गया हो और जब उस पैसे का मालिक अपना पैसा उससे वापस माँगने आया हो तो उस आदमी ने उसके पैसे को या तो कहीं छिपा दिया हो या फिर उसे खर्च कर दिया हो जिससे कि उस पैसे के मालिक को उसका पैसा न मिल पा रहा हो।"

जैसे ही राजा ने अपना वाक्य पूरा किया कि उसका बड़ा बेटा उसके सामने ज़िन्दा और तन्दुरुस्त खड़ा हो गया। जोगी ने अपना दूसरा सवाल किया — "तुम्हारे दूसरे बेटे ने एक नयी पैदा हुई

बछिया को अपनी मॉ को दूध पिलाते देखा। इसका क्या मतलब है।"

राजा बोला — "बड़ी अजीब सी बात है कि उसको यह देख कर किसी एक ऐसी स्त्री की याद नहीं आयी जो अपनी बेटी की कमाई पर ज़िन्दा रहती हो।"

राजा के यह कहते ही उसका दूसरा बेटा भी ज़िन्दा हो कर उसके सामने आ खड़ा हुआ। तब जोगी ने अपना तीसरा सवाल पूछा — "राजन तुम्हारे तीसरे बेटे ने एक ऐसा आदमी देखा जो अपनी पीठ पर लकड़ियॉ लादे लिये जा रहा था। वह अपने उस ढेर से सन्तुष्ट नहीं था और रास्ते में उसको और जो लकड़ियॉ मिलती जा रही थीं वह उनको भी उठाता जा रहा था। इसका क्या मतलब है।"

राजा बोला — "यह इस बात को बताता है कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जो उनके पास जो कुछ भी होता है वे उससे सन्तुष्ट नहीं होते उनको हमेशा ही और ज़्यादा की इच्छा बनी रहती है।"

जैसे ही राजा ने ये शब्द बोले कि उसका तीसरा बेटा भी ज़िन्दा हो कर उसके सामने आ खड़ा हुआ। अब जोगी ने अपना चौथा और आखिरी सवाल पूछा — "राजन तुम्हारे सबसे छोटे बेटे ने जंगल में एक तालाब देखा जिसने छह दूसरे तालाबों को पानी देने के लिये अपने आपको खाली कर दिया। इसका क्या मतलब है।"

राजा बोला — "जोगी जी वह बड़ा तालाब दुनियाँ के उन कुछ आदमियों के समान है जो दूसरों को देने के लिये अपना सब कुछ खर्च कर देते हैं पर बदले में उन्हें क्या मिलता है। कुछ भी नहीं।"

जैसे ही राजा यह बोला उसका चौथा बेटा भी ज़िन्दा हो कर उसके सामने आ खड़ा हुआ। राजा और उसके चारों बेटे खुशी खुशी अपने महल वापस लौट आये। कुछ समय बाद ही राजा ने अपनी गद्दी छोड़ कर अपना राज्य अपने बच्चों को दे दिया और वह खुद जंगल में शान्ति से रहने चला गया।

28 बहादुर राजकुमारी[39]

एक बार की बात है कि एक जगह दो राजा राज्य करते थे। उनमें से एक राजा के बहुत सुन्दर बेटा था और दूसरे राजा के बहुत सुन्दर बेटी थी। दोनों राजाओं के बच्चे शादी के लायक थे इसलिये दोनों राजा अपने अपने बच्चों के लिये जीवन साथी ढूँढने के लिये लोगों को भेज रहे थे।

किस्मत की बात कि दोनों राजाओं के दूत आपस में मिले और बातचीत के बीच उन्होंने एक दूसरे को अपने अपने उद्देश्य बताये। उन दोनों को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ जब उनको यह पता चला कि दोनों के बाहर निकलने का उद्देश्य एक ही था और दोनों राजा भी आपस में एक दूसरे की टक्कर के थे। इस तरह राजकुमार और राजकुमारी का जोड़ा बहुत अच्छा बनता था।

जब राजाओं ने अपने अपने दूतों से उनकी बात सुनी तो उन्होंने आपस में बात की और उन दोनों की शादी तय हो गयी।

एक दिन तय किया गया और दुलहा दुलहिन के घर पहुँच गया। शादी की रस्में सब बहुत शानदार तरीके से पूरी की गयीं।

लेकिन उनकी खुशियों पर एक बादल छा गया। उनकी खुशी कितने कम समय के लिये थी। जब दुलहा अपनी दुलहिन को ले

[39] Brave Princess (Tale No 28)

कर घर लौट रहा था तो रात को वह एक बागीचे में रुका। इत्तफाक से वह बागीचा परियों का था।

ये परियाँ रात को वहाँ आती थीं। उस रात जब वे वहाँ आयीं तो वहाँ राजकुमार को देख कर वे उससे प्रेम कर बैठीं। उन्होंने उसको अपना बनाने का सोच लिया। उन्होंने उस पर ऐसा जादू डाला कि वह मौत जैसी गहरी नींद सो गया।

अगली सुबह राजकुमारी और दूसरे लोगों ने उसको उठाने की बहुत कोशिश की पर सब बेकार। उन सबको लगा कि वह मर गया था सो उन्होंने उसका दुख मनाया और उसके लिये रोये जैसे कि लोग किसी मरे आदमी के लिये रोते हैं जिससे वे अब कभी बात नहीं कर पायेंगे। यह उनके लिये बड़ी मुश्किल की घड़ी थी।

तभी वहाँ पर सूडाब्रोर और बूडाब्रोर[40] दो चिड़ियें आयीं और जहाँ लोग राजकुमार के लिये रो रहे थे उस जगह के पास ही एक पेड़ की शाख पर आ कर बैठ गयीं और आपस में बातें करने लगीं।

सूडाब्रोर बोला — "इन लोगों को इस राजकुमार को दफन नहीं करना चाहिये।"

बूडाब्रोर बोला — "क्यों?"

सूडाब्रोर बोला — "क्योंकि यह अभी मरा नहीं है। शायद कुछ दिन में ही यह ज़िन्दा हो जायेगा।"

---

[40] Sudabror and Budabror birds

उनके ये शब्द राजकुमारी के कानों में अमृत की तरह से पड़े। उसने तुरन्त ही यह हुक्म दिया कि राजकुमार के शरीर को वहीं पड़ा रहने दिया जाये जहॉ वह था। उसने उन सबसे यह वायदा किया कि वह इस हुक्म की वजह उनको बाद में बतायेगी।

इस हुक्म के अनुसार राजकुमार के शरीर को उसी बागीचे में छोड़ दिया गया और बाकी सब लोग अपने अपने घरों को चले गये। दुखी दुलहिन और उसकी तरफ के लोग एक तरफ चले गये दुलहे की तरफ के लोग दूसरी तरफ चले गये।

राजकुमारी के माता पिता को अपनी बदनसीब बेटी की बदकिस्मती की बात सुन कर बहुत दुख हुआ। राजकुमारी भी दिन रात रोती रहती। कोई चीज़ उसको कोई आराम नहीं दे पाती। हर पल वह राजकुमार के लौटने की बाट तकती रहती पर वह तो आया ही नहीं।

आखिर जब उससे अपना दुख और नहीं सहा जा सका तो उसने अपने पिता से महल छोड़ कर इधर उधर घूमने की इजाज़त मॉगी जहॉ भी उसकी इच्छा होती। हालॉकि राजा उसको इस तरीके से कहीं जाने देना नहीं चाहता था पर अपने मन्त्रियों की सलाह पर उसने उसको जाने की इजाज़त दे दी।

मन्त्रियों का विचार था कि अगर राजकुमारी इसी तरह से यहॉ कुछ दिन और रही तो कहीं वह पागल न हो जाये। सो उनकी सलाह पा कर राजकुमारी बाहर घूमने चल दी। वह दुखी सी चारों

तरफ घूमने लगी। हर आने जाने वाले वह पूछती रहती "क्या तुमने राजकुमार को कहीं देखा है?" "क्या तुमने राजकुमार को कहीं देखा है?"[41]

इस तरह घूमते घूमते और राजकुमार के बारे में पूछते पूछते उसको कई दिन बीत गये पर कोई भी उसको राजकुमार के बारे में कुछ न बता सका।

आखिर उसको एक बूढ़ा मिला। उसने उससे भी यही पूछा "क्या तुमने राजकुमार को कहीं देखा है?"

बूढ़ा बोला — "मैं एक बागीचे के पास से गुजर रहा था कि मैंने वहाँ जमीन पर एक बहुत सुन्दर लड़के को सोते हुए देखा। मुझे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उस नौजवान ने आराम करने के लिये ऐसी जगह क्यों चुनी सो मैं वहाँ रुक गया।

लो कुछ पल बाद ही मैंने कुछ परियाँ वहाँ आती देखीं। उन्होंने उसके सिर के नीचे एक जादू की छड़ी रखी तो वह तो उठ कर बैठा हो गया और उनसे बातें करने लगा। कुछ देर बाद उन परियों ने वह जादू की छड़ी उसके पैरों के नीचे रखी तो वह फिर से लेट गया और सो गया।

मैंने बस यही देखा। मेरी तो समझ में आया नहीं कि इस सबका मतलब क्या था।"

---

[41] [My Note : there is an anomaly here. When the princess left the Prince herself there in the garden and then ordered her people to leave his body there then why she was asking other people that where was the Prince.]

राजकुमारी बोली — "आश्चर्य। क्या तुम मुझे उस बागीचे तक ले जा सकते हो जहाँ वह नौजवान सोया हुआ था।"[42]

बूढ़ा बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं।" कह कर वह उसको उस बागीचे की तरफ ले गया जहाँ वह राजकुमार सोया हुआ था। जब वे वहाँ पहुँचे तो राजकुमार का शरीर वहाँ दिखने में बेजान जैसा पड़ा हुआ था।

राजकुमारी ने देखा कि जादू की छड़ी अभी भी राजकुमार के पैरों के नीचे रखी हुई थी। उसने तुरन्त ही वह छड़ी उसके पैरों के नीचे से निकाल ली और उसके सिर के नीचे रख दी। जैसा कि उस बूढ़े ने उसे बताया था वह राजकुमार उठ कर बैठा हो गया।

उठते ही उसने राजकुमारी से पूछा — "तुम कौन हो?"

राजकुमारी बोली — "मैं तुम्हारी पत्नी हूँ। क्या तुम मुझे नहीं जानते?"

राजकुमार ने पूछा — "तुम यहाँ आयीं कैसे?"

राजकुमारी बोली — "इन बूढ़े बाबा की सहायता से।" कह कर उसने उस बूढ़े की तरफ इशारा कर दिया जो डर के मारे कुछ दूरी पर खड़ा था। वह फिर बोली — "आओ उठो और जल्दी से इस भयानक जगह से कहीं दूर चलो।"

[42] [My Note : the same anomaly is here too. When the Princess left the Prince in the garden then why the Princess asked the old man to take her there in that garden.

राजकुमार बोला — "अफसोस। मैं नहीं जा सकता। परियों को मेरे यहाँ न होने का बहुत जल्दी ही पता चल जायेगा। वे मेरे पीछे पीछे आ कर मुझे ढूँढ लेंगी और मुझे मार देंगीं। अगर तुम मुझे प्यार करती हो तो यह छड़ी तुम मेरे पैरों के नीचे रख दो और यहाँ से चली जाओ।"

"नहीं कभी नहीं। ऐसा नहीं हो सकता।"

राजकुमार बोला — "तो फिर ऐसा करो कि तुम इस पेड़ के खोखले तने में छिप जाओ क्योंकि तुम यहाँ सुरक्षित नहीं हो। परियाँ यहाँ कभी भी आ सकती हैं।"

राजकुमारी ने वैसा ही किया। जैसे ही वह पेड़ के खोखले तने में जा कर छिपी परियाँ वहाँ आयीं।

उनमें से एक बोली — "उँह यहाँ किसी आदमी की खुशबू आ रही है।"

दूसरी बोली — "लगता है यहाँ कोई आदमी आया है।"

कह कर दो तीन परियाँ उस आदमी की खोज में इधर उधर गयीं जो उनकी जगह देख गया था पर उनको कोई मिला नहीं।

उसके बाद उन्होंने राजकुमार को जगाया और उससे पूछा कि क्या वह किसी आदमी को जानता था जो उसके आस पास घूम रहा हो। राजकुमार ने साफ मना कर दिया कि उसने किसी आदमी को वहाँ आस पास घूमते नहीं देखा।

वे बोलीं — "पर हमारा पक्का विश्वास है कि यहाँ कोई आदमी आया था क्योंकि आदमी की खुशबू हवा में फैली हुई है। कोई बात नहीं हम लोग कल यह जगह छोड़ कर किसी दूसरी जगह चले जायेंगे।"

सो अगली सुबह परियों ने सारा बागीचा देखा क्योंकि वह बागीचा बहुत बड़ा था और अपने लिये कोई दूसरी जगह ढूँढ ली जहाँ उनको लगा कि वहाँ कोई आदमी नहीं आ पायेगा।

जब वे वहाँ नहीं थीं तो राजकुमार ने राजकुमारी से कहा — "प्रिये अब तुम क्या करोगी। वे मुझे किसी दूसरी जगह ले जायेंगी और मैं फिर तुम्हें कभी भी नहीं देख पाऊँगा।"

बहादुर राजकुमारी बोली — "नहीं ऐसा कभी नहीं होगा। तुम देखना मैं कुछ फूल इकट्ठा करूँगी। तुम जब यहाँ से जाओ तो इन फूलों को अपने पीछे पीछे बिखेरते जाना जिससे मुझे पता चल जायेगा कि तुम कहाँ गये हो।"

कह कर राजकुमारी ने राजकुमार को एक खास किस्म के फूलों का एक गुलदस्ता ला कर दिया। राजकुमार ने उन फूलों को अपने कपड़ों में छिपा लिया और राजकुमारी फिर से अपने उसी पेड़ के खोखले तने में जा कर छिप गयी।

कुछ देर बाद परियाँ फिर वहाँ आयीं और राजकुमार को उन्होंने अपने पीछे पीछे आने के लिये कहा। जब राजकुमार उनके पीछे जा रहा था तो वह फूल अपने पीछे फेंकता जा रहा था।

अगले दिन राजकुमारी उन फूलों के सहारे चलती गयी जब तक कि वह एक बहुत बड़ी और शानदार बिल्डिंग के पास नहीं आ गयी जो एक महल की तरह लग रही थी। यह एक देव का घर था जिसने परियों को भी बहुत तरह के जादू सिखा रखे थे।

राजकुमारी बिना किसी डर के उस महल में अन्दर चली गयी। उसने देखा कि वहाँ अन्दर तो कोई भी नहीं था तो वह सुस्ताने के लिये एक नीचे से स्टूल पर बैठ गयी।

करीब एक घंटे के बाद देव आया। राजकुमारी को देख कर उसने सोचा कि शायद वह उसकी बेटी है जिसको एक दूसरा देव जबरदस्ती उठा कर ले गया था।

वह उसकी तरफ दौड़ता हुआ बोला — ओह मेरी प्यारी बेटी। तुम वापस कैसे आयीं। उस नीच से तुम कैसे बच पायीं।”

राजकुमारी ने तुरन्त ही हालात का अन्दाजा लगा लिया वह बोली — “जब वह सो रहा था पिता जी तब मैं वहाँ से भाग निकली।”

कुछ समय तक राजकुमारी देव के पास रही। वहाँ उसको देव और परियाँ देव की बेटी ही समझते रहे। वह वहाँ जो चाहती वह करती थी और जहाँ चाहती वहाँ जाती थी।

उसकी प्रार्थना पर देव ने उसको कई जादू भी सिखा दिये थे जैसे किसी आदमी को मरा हुआ कैसे दिखाना फिर कैसे उसे ज़िन्दा करना छिपी हुई चीज़ों का पता लगाना आदि आदि।

एक दिन उसने अपनी ताकत से यह पता लगा लिया कि राजकुमार एक परी के कान के बुन्दे[43] में छिपा हुआ है।

उसने यह बहाना बनाया कि वह बुन्दा उसको बहुत पसन्द था इसलिये वह उसको पहनने के लिये दे दिया जाये। पहले तो परी ने कुछ ना नुकुर की पर फिर उसको देव की बेटी होने के नाते उस बुन्दे को दे देना पड़ा लेकिन इस शर्त पर कि वह बुन्दा वह उसको अगले दिन दे दगी।

राजकुमारी इस बात पर राजी हो गयी। जैसे ही परी ने उसको अपना बुन्दा दिया और वह वहाँ से चली गयी तो राजकुमारी ने अपने जादू से राजकुमार को उसमें से बाहर निकाल लिया।

राजकुमार ने बाहर आते ही इधर उधर देखा तो राजकुमारी ने उससे पूछा — "क्या तुम मुझे पहचानते हो? या तुम मुझे अभी भी नहीं जानते? मैं तुम्हारी पत्नी हूँ। तुम्हारे लिये मैंने अपने पिता का घर छोड़ा। तुम्हारे लिये मैंने उस बागीचे में जाने की हिम्मत की जिसमें तुम लेटे हुए थे। तुम्हारे लिये मैंने देव के मकान में घुसने की जुर्रत की। क्या तुम मुझे नहीं पहचानते?"

तब राजकुमार को कुछ होश आया। उसने उसको पहचान लिया और खुशी से रो पड़ा।

[43] Translated for the word "Earrings". See its picture above.

राजकुमारी बोली — “आओ चलें। मैं तुम्हें अब बताऊँगी कि तुम्हें क्या करना है। देव और उसके सब आदमी यह समझते हैं कि मैं उसकी बेटी हूँ जिसे कोई दूसरा देव उससे जबरदस्ती छीन कर ले गया था।

अब मैं तुम्हें अपने पिता देव के पास ले जाऊँगी और उससे कहूँगी कि जब मैं उस भगाने वाले देव से बचने की कोशिश में भाग रही थी तो तुम मुझे मिल गये। तुम्हारी सुन्दरता देख कर मैं तुम्हारे ऊपर रीझ गयी और मैंने तुमसे शादी कर ली।

मैं उसको यह भी बताऊँगी कि तुम एक शाही खानदान के हो इसलिये वह हमारी शादी को मान लें। जब वह यह सुनेगा तो वह बहुत खुश होगा। तुम डरना नहीं। आओ और देखो कि क्या क्या होता है।”

राजकुमारी की बात ठीक निकली। पिता देव अपनी बेटी की शादी की बात सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने अपनी बेटी की शादी की खुशी में एक बहुत बड़ी दावत दी जिसमें उसने सारी परियों को बुलाया।

राजकुमार और राजकुमारी देव के पास कुछ हफ्तों तक आनन्द से रहे। फिर राजकुमार ने देव से अपने माता पिता से मिलने की और राजकुमारी को भी उनसे मिलवाने की इच्छा प्रगट की।

हालाँकि देव उन दोनों को अपने पास ही रखना चाहता था पर फिर उसको राजकुमार को घर जाने की इजाज़त देनी ही पड़ी।

उसने उनके लिये बहुत सारी भेंटें इकट्ठी कर के उनके साथ रख दीं और उनसे जल्दी वापस आने के लिये कहा।

और बहुत सारी चीज़ों के अलावा उसने उनको एक पीठ[44] भी दिया जिस पर जो कोई बैठ जाता था वह उसको उसकी मनचाही जगह पहुँचा देता था। यह राजकुमार और राजकुमारी के लिये तो बहुत ही काम की चीज़ थी।

उन्होंने उस पीठ में अपना खजाना भरा और उसके ऊपर बैठ कर देव और सारी परियों को विदा कह कर राजकुमारी के पिता के राज्य चले गये। वे जल्दी ही वहाँ पहुँच गये।

क्योंकि राजा की बेटी घर वापस लौट आयी थी और उसका पति भी मरा नहीं था ज़िन्दा था और ठीक था और उसके साथ था सो उस दिन महल में ही नहीं बल्कि सारे शहर में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं।

[44] Peeth means stool

29 तीन राजकुमार[45]

एक बार की बात है कि एक जगह एक राजा था जो अपनी ताकत और अक्लमन्दी के लिये चारों तरफ बहुत मशहूर था। इस राजा के तीन बेटे थे जो अपने पिता की तरह ही बहुत लायक थे। वे बहादुर थे वे चतुर थे वे सुन्दर थे और वे अक्लमन्द भी थे।

एक दिन अपना वारिस चुनने के लिये राजा ने अपने वज़ीरों को बुलाया और उनसे इस मामले में सलाह माँगी कि उसके तीनों बेटों में से किसको उसका वारिस बनाया जाये। उसने उनसे कहा कि वे तीनों राजकुमारों को ले जायें और उनके इम्तिहान लें और इनमें से एक जिसको भी वे लोग चुन लेंगे वही उसके बाद उसकी राजगद्दी पर बैठेगा।

कुछ दिन बाद वज़ीर लोग अपने जवाब ले कर राजा के दरबार में हाजिर हुए। राजा के वज़ीरों के सरदार ने कहा — "वारिस चुनने के लिये राजा गुस्सा न हों तो हम कुछ बोलें।"

राजा की इजाज़त पाने के बाद उन्होंने कहा कि राजा उनको दुनियाँ में व्यापार करने के लिये भेजे और जो कोई भी राजकुमार सबसे ज़्यादा पैसा कमा कर लौटे उसी को राज्य दिया जाये।

---

[45] The Three Princes (Tale No 29)

यह कह कर सब वजीरों ने हॉ में अपने सिर झुकाये कि यह उन सबका फैसला है। राजा ने भी कहा "ऐसा ही होगा।" और कह कर उसने अपना फैसला उन तीनों राजकुमारों को बताया।

जब उनकी यात्रा की सब तैयारियॉ हो गयीं तो वे जहाज़ पर चढ़ने के लिये समुद्र के किनारे इकट्ठा हुए। जब वे अपनी जगह जहॉ उनको जाना था वहॉ पहुॅच गये तब वहॉ से वे एक दूसरे से अलग हो गये।

एक भाई एक दिशा में चला गया दूसरा भाई दूसरी दिशा में चला गया और तीसरा भाई तीसरी दिशा में चला गया। पर जाने से पहले उन्होंने एक निश्चित समय पर उसी जगह मिलने का वायदा किया जहॉ से वे अलग हुए थे।

दोनों बड़े भाइयों ने अपने पैसे से खूब व्यापार किया और उससे खूब पैसा कमाया पर तीसरा भाई समुद्र के किनारे ही घूमता रहा। वह कभी यहॉ अपना डेरा डाल लेता कभी वहॉ अपना डेरा डाल लेता जैसे भी उसको अच्छा लगता।

वह यही सोचता रहता कि वह अपने पैसे का क्या करे कि एक दिन उसको एक साधु मिला। वह साधु उसके साथ तीन दिन तक ठहरा। राजकुमार ने बड़े प्रेम और इज़्ज़त के साथ उसको अपने पास ठहराया। वह उसकी खातिरदारी से इतना ज़्यादा प्रभावित हुआ कि उसने उसको बदले में कुछ इनाम देने की सोची।

वह बोला — "मैं तुम्हारे सरल स्वभाव और भलाई से बहुत खुश हूँ। तुम मुझे अपना नाम बताओ और यह भी बताओ कि तुम कहाँ से आये हो और कहाँ जा रहे हो।"

राजकुमार ने उसको सब कुछ बता दिया तो वह बोला — "मैं समझ गया। तुम यहीं रुको। यहाँ से आगे कहीं नहीं जाना जब तक तुम्हारे भाई लोग यहाँ नहीं आ जाते। तुम अपने नौकरों को शहर भेज कर जितनी मक्का खरीद सकते हो खरीदने के लिये बोल दो।

और जब वह मक्का ले आयें तो उसमें से कुछ मक्का रोज समुद्र में फेंकते रहना जब तक कि वह पूरी खत्म न हो जाये। उसके बाद तुम कुछ समय तक इन्तजार करना। तुमको बहुत सारी पैदावार हाथ लगेगी।"

ऐसा कह कर साधु ने उसको आशीर्वाद दिया और वहाँ से चला गया। राजकुमार ने उस साधु के कहे अनुसार ही किया। उसने शहर से बहुत सारी मक्का खरीदी और उसे अपने डेरे के पास इकट्ठी कर ली।

फिर वह उसमें से एक माप मक्का करीब करीब छह महीने तक रोज समुद्र में फेंकता रहा जब तक उसकी सारी मक्का खत्म नहीं हो गयी। उसने सोचा अब देखता हूँ कि मुझे इसका क्या इनाम मिलेगा।

उसने बहुत दिनों तक इन्तजार किया पर कुछ भी नहीं हुआ। उसने सोचा "लगता है कि वह साधु मुझे धोखा दे गया। मैं तो

उसके चक्कर में बर्बाद ही हो गया। मैं इतना बेवकूफ क्यों हो गया कि मैंने उसकी यह बेकार की सलाह सुनी।

जब मेरे पिता और भाइयों को यह पता चलेगा कि मैंने अपना सारा पैसा समुद्र में फेंक दिया है तो वे क्या कहेंगे। वे मेरे ऊपर कितना हॅसेंगे। मैं तो उनको कभी अपना चेहरा दिखाने लायक भी नहीं रहा।

उफ़ अब मुझे किसी दूसरे देश चले जाना चाहिये। परसों मैं यह जगह छोड़ कर किसी और देश चला जाऊॅगा। मैं अब यह शापित जगह छोड़ दूॅगा यह जगह ठीक नहीं है।"

उसने अपना यह इरादा अपने लोगों को बताया तो उसके लोगों ने वह जगह छोड़ने की तैयारी कर ली। जब सब कुछ तैयार हो गया और वे वहॉ से चलने ही वाले थे कि अचानक ही एक घटना घटी।

जो मक्का राजकुमार ने समुद्र में फेंकी थी उसको एक बड़ी मछली खा गयी थी। अब मक्का फेंकने की यह खबर चारों तरफ फैली तो उस जगह पर बहुत सारी मछलियॉ मक्का खाने के लिये आ कर इकट्ठी हो गयीं। उन मछलियों के साथ उनका राजा भी था।

मछलियों के राजा ने मछलियों से पूछा — "अरे क्या हुआ। हम लोगों को पिछले छह महीनों से मक्का खाने को लिये मिल रही

थी और अब कई दिनों से हमारे पास खाने के लिये कुछ भी नहीं है। क्या राजकुमार को उसकी अच्छाई का इनाम मिला?"

मछलियों ने कहा — "नहीं ऐसा करने का तो कोई हुक्म हमको नहीं मिला।"

मछलियों का राजा बोला — "तो तुम सब राजकुमार के पास तुरन्त जाओ और हर एक अपने साथ एक एक लाल[46] लेती जाओ और उसको वे लाल दे कर कहना कि वह अपना काम फिर से शुरू कर दे।"

सो सारी मछलियाँ एक एक लाल ले कर राजकुमार के पास गयीं जहाँ वह खड़ा हुआ था और वे लाल उन्होंने राजकुमार के पैरों के पास ले जा कर डाल दिये। इसके बाद वे दुखी हो कर समुद्र की तरफ देखने लगीं।

इस सबसे जो ज़ोर की आवाज हुई तो राजकुमार का ध्यान उधर घूमा तो उसने देखा कि समुद्र के रेत पर तो असंख्य लाल बिखरे पड़े हैं। उसके मुँह से निकला "मैं भी कितना नीच आदमी हूँ। मुझे यह इनाम किसलिये मिल रहा है। मेरे ज़रा से विश्वास का इतना बड़ा इनाम तो नहीं हो सकता।"

यह कह कर उसने अपने वहाँ से जाने के सारे इन्तजाम रुकवा दिये। उसने कहा — "मैं यहीं रहूँगा जब तक मेरे भाई लोग यहाँ वापस आते हैं। हमारे तम्बू फिर से गाड़ दिये जायें।"

---

[46] Translated for the word "Ruby". It is one of the nine precious gems. See its picture above.

यह हुक्म पाते ही राजकुमार के तम्बू फिर से गाड़ दिये गये और राजकुमार के नौकरों का सरदार समुद्र की रेत से वे लाल बीनने चला गया जो मछलियॉ किनारे पर डाल गयी थीं।

राजकुमार ने उसको सावधान किया और कहा कि यह बात शहर के या किसी और आदमी को मालूम नहीं होनी चाहिये। कोई भी आदमी इस बात को किसी से न कहे।

यहॉ तक कि मेरे भाइयों को भी यह बात पता नहीं चलनी चाहिये। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ तुम मेरा विश्वास मत खोना। अगर तुम लोग मेरी बात मानोगे तो मैं तुम्हें भरपूर इनाम दूँगा।

उसके नौकरों के सरदार ने उससे वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगा। फिर जितने दिन भी राजकुमार वहॉ रहा वह रोज मछलियों को मक्का खिलाता रहा।

उसके खजाने का कहीं किसी को पता न चल जाये इसके लिये उसने वे सब लाल गोबर के बने हुए छोटे छोटे ढेरों में छिपा दिये और फिर उन ढेरों को सुखा लिया।[47]

कुछ समय बाद उन लोगों के जाने का समय आया ताकि वे उस जगह पहुँच सकें जहॉ उन तीनों भाइयों ने मिलने का वायदा किया था। यह तीसरा राजकुमार अपने समय का इतना पाबन्द था

---

[47] These small heaps of dung are called “Upalaa” or “Kandaa” in . Most villagers use them to burn and to cook their food on them.

कि वह उस तय की हुई जगह पर अपने भाइयों से एक दो दिन पहले ही पहुँच गया।

जब वे सब मिले तो उन्होंने एक दूसरे से पूछा "तुम्हारा कैसा रहा?"

सबसे बड़ा राजकुमार बोला — "मैंने कपड़े का व्यापार किया और मैंने इतना पैसा कमाया।" कह कर उसने बताया कि उसने कितना पैसा कमाया। उसके दोनों छोटे भाइयों ने उसकी बड़ी तारीफ की।

दूसरा राजकुमार बोला — "मैंने बनिये की तरह व्यापार किया और इतना पैसा कमाया।" उसने भी अपनी कमायी हुई रकम बहुत सारी बतायी तो दूसरे दोनों भाइयों ने उसकी भी खूब बड़ाई की।

सबसे बाद में सबसे छोटा राजकुमार बोला — "भाइयो ज़रा मेरी किस्मत देखो।" कह कर उसने अपने साथ लाया गोबर के छोटे छोटे ढेरों का ढेर उनको दिखा दिया।

उसके दोनों बड़े भाइयों ने अफसोस जाहिर करते हुए कहा — "उफ़ हमारे भाई ने यह कैसा व्यापार चुना जिसमें उसको कोई फायदा ही नहीं हुआ।"

जल्दी ही एक जहाज़ किराये पर ले लिया गया और तीनों राजकुमार अपने अपने नौकरों के साथ उस जहाज़ पर चढ़ गये और अपने देश की तरफ चल दिये।

अब हुआ ऐसा कि जहाज़ पर लकड़ी के बारे में एक बहुत ही बेवकूफी का फैसला हो गया। आधी दूर तक पहुँचने से पहले ही उनकी लकड़ियाँ बहुत कम रह गयीं। सो जहाज़ का कप्तान और दोनों बड़े राजकुमार सबसे छोटे राजकुमार के पास आये और उससे जहाज़ के लिये उसके गोबर के कुछ ढेर माँगे। उन्होंने उससे यह भी कहा कि वे देश पहुँचते ही उसकी कीमत उसको दे देंगे।

राजकुमार ने उनको वे ढेर उतने ले जाने की इजाज़त दे दी जितने उनको वे चाहिये थे सो अगले दिन उनमें से लाल निकालने के बाद उसने उनको बाकी बची यात्रा के लिये काफी ढेर दे दिये।

इस तरह जहाज़ ठीक समय पर उनके देश पहुँच गया और शाही सवारियाँ किनारे पर उतरीं। तुरन्त ही वे सब अपने पिता के महल की तरफ चल दिये।

उनके घर पहुँचने के एक दो दिन बाद ही राजा ने सारी जनता को बुलाया जिसके सामने राज्य का वारिस घोषित किया जाना था। सो बहुत सारे लोग राजा के महल में आ कर इकट्ठा हुए। राजा अपने शाही ढंग से अपने दरबारियों के साथ आ कर बैठा। उसके चारों तरफ लोगों की भीड़ थी।

राजा ने तीनों राजकुमारों को बुलाया ताकि वे राजा और जनता को अपना लाया हुआ पैसा दिखा सकें और अपनी यात्रा के अनुभव सुना सकें।

सबसे पहले सबसे बड़ा राजकुमार आया। उसने बड़ी ऊँची आवाज में अपनी यात्रा का हाल बताया और अपनी लायी कमायी दिखायी। फिर दूसरा राजकुमार आया। उसने भी वैसा ही किया। जब लोगों ने उन दोनों को सुना तो चिल्ला कर बोले — "इसी को हमारा राजा बनाओ। इसी को हमारा राजा बनाओ।"

फिर तीसरे राजकुमार की बारी आयी तो उसने अपने गोबर के ढेर राजा और जनता को दिखाये। उसको देख कर सब लोग बहुत हॅसे और हॅस कर बोले — "इसको जाने दो। इसको जाने दो।"

राजकुमार अपने पिता से बोला — "इतनी जल्दी मत कीजिये पिता जी।" फिर वह जनता की तरफ देख कर कुछ गुस्सा सा हो कर बोला — "अभी तो आप लोग हॅस रहे हैं पर बाद में आप लोग अपने हॅसने पर पछतायेंगे। इन गोबर के हर ढेर में एक एक लाल है जिनकी कीमत नहीं ऑकी जा सकती।"

इतना कह कर उसने गोबर का एक ढेर तोड़ा जिसमें से एक लाल निकला। "देखो देखो।" कह कर उसने गोबर के कई ढेर तोड़ डाले जिनमें से हर एक में से एक एक लाल निकल पड़ा। यह देख कर तो सबके मुॅह से आश्चर्य की एक चीख सी निकल गयी।

राजा बोला — "मैंने तो ऐसे लाल पहले कभी अपनी ज़िन्दगी में नहीं देखे। यह ठीक कहता है कि इन लालों की कीमत नहीं ऑकी जा सकती। मेरे सबसे छोटे बेटे के पास मेरे और मेरे दोनों

बड़े बेटों सबके पैसों से मिला कर भी ज़्यादा पैसे हैं। सो अपने बाद मैं उसी को इस देश का राजा घोषित करता हूँ।"

यह देख कर सब लोग चिल्ला पड़े कि इसी को राजा बनाना चाहिये। इसके बाद वे सब अपने अपने घर चले गये।

कुछ समय बाद जब राजा मर गया तो उसका सबसे छोटा बेटा राजा बना दिया गया। उसने अपने दोनों बड़े भाइयों को अपने नीचे खास ओहदों पर रख दिया।

30 मेहनती राजा[48]

अक्सर ऐसा होता है कि नीच लोग अपने बुरे इरादों में सफल हो जाते हैं और ठीक लोगों के अच्छे इरादे असफल हो जाते हैं। पर इस कहानी में ऐसा नहीं होता।

एक बार की बात है कि एक राजा था जो बहुत ही दयालु और न्याय करने वाला था। उसकी हमेशा यही इच्छा रहती थी कि उसकी जनता खूब फले फूले और खुशहाल रहे।

एक दिन अचानक उसको पता चला कि उसके राज्य की जनता दिन पर दिन कम होती जा रही है। पर यह उसको पता नहीं था कि इसका हिसाब कैसे रखा जाये। इसके अलावा वह यह भी नहीं जानता था कि इसकी वजह क्या थी।

उसके राज्य के नियम और कानून सब बहुत अच्छे थे। टैक्स भी बहुत हल्के थे। उसके राज्य में पैदावार भी बहुत अच्छी होती थी। फिर उसके राज्य से लोग क्यों भाग रहे थे।

इस बात का पता लगाने के लिये एक दिन राजा ने एक फकीर का वेश बनाया और अपने देश में घूमने लगा। अपने इस घूमने के बीच उसको पता चला कि एक जिन्न उसके राज्य के अलग अलग

[48] The Diligent King (Tale No 30)

शहरों और गाँवों में आता था और जहाँ भी वह जाता था वहाँ के आदमियों को खा लेता था।

अपने इस घूमने के बीच एक दिन उसकी भेंट उस जिन्न से हो गयी। वह उसको पहचान तो नहीं सका क्योंकि वह एक साधारण आदमी जैसा दिखता था।

हुआ यों कि एक बार घूमते घूमते राजा एक बंजर जमीन के टुकड़े के पास पहुँचा जो शहर से कुछ दूरी पर था। वहाँ उसने एक आदमी को घुटनों के बल बैठा देखा।

उस आदमी की आँखें बन्द थीं उसके कान उसकी उँगलियों से बन्द थे और वह अपना सिर जमीन पर दे दे कर मार रहा था। राजा ने जब उस आदमी को ये अजीब सी हरकत करते हुए देखा तो वह उसके पास गया और उससे पूछा — "अरे यह तुम क्या कर रहे हो क्या तुम पागल हो गये हो?"

वह बोला — "नहीं नहीं मैं पागल नहीं हुआ हूँ। बस थोड़ा ध्यान कर रहा था। मैं अपनी आँखें बन्द रखता हूँ ताकि मैं ऐसा कुछ न देख सकूँ जो मेरी आँखों को नहीं देखना चाहिये। मैं अपने कान भी बन्द रखता हूँ ताकि मैं ऐसा कुछ न सुनूँ जो मुझे नहीं सुनना चाहिये।

और अपना सिर जमीन पर मारता रहता हूँ ताकि सब कीड़े मकोड़े मुझसे दूर चले जायें। ताकि कहीं ऐसा न हो कि मेरा पैर उन

पर पड़ जाये और मैं उनमें से किसी की हत्या का कुसूरवार बन जाऊँ।”

राजा ने पूछा — “हे योगी आप कहाँ रहते हैं।”

वह आदमी बोला — “यहीं पास में। अगर तुम्हारे पास कोई खास काम करने के लिये नहीं है तो मेरे साथ आओ और मेरे घर चल कर रहो। मुझे मालूम चल गया है कि तुम भी कुछ ऐसे ही आदमी हो जिसका मन इस दुनियाँ में नहीं लगा हुआ।”

राजा ने उसकी बात मान ली और वह उस आदमी के साथ उसके घर चला गया। घर पहुँच कर उसने अपनी पत्नी को थोड़ा गर्म पानी लाने के लिये और उससे अपने मेहमान के पैर धोने के लिये कहा।

स्त्री को अजनबी पर दया आ गयी सो जब वह उसके पैर धो रही थी तो उसने उससे धीरे से कहा कि उसका पति “कीम्यागर”[49] था और वह उसको मार डालेगा जैसा कि उसने हाल में दूसरे सैंकड़ों लोगों के साथ किया है।

उसने उससे तीन “कुलचे”[50] ले कर वहाँ से भाग जाने के लिये कहा। उसने आगे कहा कि उसका पति आता ही होगा और जब वह आने पर उसको नहीं देखेगा तो उसके बारे में पूछेगा और उसके पीछे अपना शिकारी कुत्ता छोड़ देगा।

---

[49] Keemyaagar – means man eater Rakshas

[50] Kulachaa – a kind of leavened white flour round bread fried in oil.

पर उसको डरने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि जब वह उस कुत्ते को देखे तो उन कुलचों में से एक कुलचा उसकी तरफ फेंक दे। वह कुत्ता उस कुलचे को खा कर वापस लौट जायेगा।

कीम्यागर उसके बाद उसके पीछे एक और कुत्ता भेजेगा। उसके साथ भी वह वैसा ही करे। वह उसके लिये दूसरा कुलचा फेंक दे। तो वह कुत्ता भी उस कुलचे को खा कर वापस लौट जायेगा।

इसके बाद वह एक तीसरा कुत्ता उसके पीछे भेजेगा। उसके लिये वह तीसरा कुलचा फेंक दे। तब तक वह शहर पहुँच जायेगा और वहाँ वह कुत्ता उसका कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा।

कह कर उसने राजा को तीन कुलचे दिये और उससे तुरन्त भाग जाने के लिये कहा। राजा ने उससे वे कुलचे लिये और वहाँ से जितनी जल्दी हो सकता था उतनी जल्दी भाग लिया।

जल्दी ही उसने देखा कि एक कुत्ता उसके पीछे दौड़ा आ रहा है उसने तुरन्त ही एक कुलचा अपने पीछे फेंक दिया। वह कुत्ता कुलचा खाने में लग गया और राजा आगे भाग लिया। इसी तरह दूसरे और तीसरे कुत्ते के साथ भी हुआ।

वे तीनों कुत्ते इतने भयानक और खूँख्वार थे कि अगर राजा ने उनको कुलचा न फेंका होता तो वे उसी को खा जाते। शहर पहुँच कर वह अपने महल गया और अपने शाही कपड़े पहन लिये।

फिर उसने अपने सिपाहियों को बुलाया और उनसे कीम्यागर को जा कर मारने के लिये कहा और उसकी पत्नी को उसके पास लाने के लिये कहा। राजा के सिपाहियों ने ऐसा ही किया। इस तरह कीम्यागर मारा गया और उसकी पत्नी को राजा ने अपने जनानखाने की देखभाल करने वाला बना दिया।

इसके बाद से उस राज्य के लोग कम नहीं हुए और देश खुशहाल होता रहा।

31 हाथी दॉत का शहर और उसकी सुन्दर राजकुमारी[51]

एक बार की बात है कि एक राजकुमार शिकार खेलने के लिये अपने पिता के वज़ीर के बेटे के साथ बाहर गया। तो इत्तफाक से उसका तीर एक सौदागर की पत्नी को लग गया। उस सौदागर का घर पास में ही था और उसकी पत्नी उस समय ऊपर वाले कमरे में थी।

राजकुमार ने वह तीर उस मकान की खिड़की की दीवार पर बैठी एक चिड़िया को मारा था पर वह तीर जा कर सौदागर की पत्नी को लग गया। राजकुमार को पता ही नहीं था कि उस कमरे में कोई था वरना वह तीर उस तरफ मारता ही नहीं।

यह न जानते हुए कि वहॉ क्या हुआ था राजकुमार और वज़ीर का बेटा दोनों वहॉ से चले आये। वज़ीर का बेटा राजकुमार को तसल्ली देता चला आ रहा था क्योंकि उससे निशाना चूक गया था।

इत्तफाक से उसी समय सौदागर अपनी पत्नी से कुछ पूछने गया तो उसने उसको फर्श पर लेटे पाया। देखने में वह मरी जैसी लग रही थी और एक तीर उसके सिर से आधा गज की दूरी पर पड़ा हुआ था।

---

[51] The Ivory City and Its Fairy Princess (Tale No 31)

उसको मरा जान कर वह खिड़की की तरफ दौड़ा और चिल्लाया "चोर चोर। उन्होंने मेरी पत्नी को मार दिया।"

उसका चिल्लाना सुन कर तुरन्त ही पड़ोसी वहाँ इकट्ठा हो गये उधर उसके नौकर भी यह देखने के लिये ऊपर आ गये कि क्या मामला था।

पर हुआ यह था कि वह स्त्री मरी नहीं थी केवल बेहोश हो गयी थी। बस उसकी छाती पर एक छोटा सा घाव था जहाँ राजकुमार का तीर छू कर नीचे गिर गया था।

जैसे ही वह होश में आयी तो उसने बताया कि बाहर दो आदमी थे जिनके हाथों में तीर कमान थे। और जब वह खिड़की के पास खड़ी हुई थी तो उनमें से एक ने उसकी तरफ जानबूझ कर उसके ऊपर तीर चलाया था।

यह सुन कर सौदागर राजा के पास गया और जो कुछ हुआ था जा कर उसको बताया। इस बुरे काम को सुन कर राजा बहुत गुस्सा हुआ और बोला कि पता चल जाने पर वह अपराधी को कड़ी से कड़ी सजा देगा।

उसने सौदागर को वापस भेज दिया कि वह उससे यह पूछ कर उसे बताये कि अगर उसने अपराधी को देखा तो क्या वह उसको पहचान सकेगी।

सौदागर की पत्नी ने जवाब दिया — "यकीनन। मैं उसको शहर भर के सब आदमियों में पहचान सकती हूँ।"

सौदागर जब यह जवाब ले कर राजा के पास पहुँचा तो राजा ने कहा — "मैं कल तुम्हारे घर के सामने से इस शहर के सारे आदमियों को जाने के लिये कहूँगा। तुम अपनी पत्नी को अपनी खिड़की के पास खड़ी रहने को कहना ताकि जब यह नीच काम करने वाला वहाँ से गुजरे तो वह उसको पहचान ले।"

अगले दिन इस बात का शाही फरमान निकलवा दिया गया कि शहर के सारे आदमी उस सौदागर के मकान की खिड़की के सामने से हो कर गुजरें। सो सब आदमी जो **10** साल से ऊपर के थे एक जगह इकट्ठा हुए और लाइन बना कर सौदागर के घर की खिड़की के पास से गुजरे।

हालाँकि राजकुमार और वज़ीर का बेटा दोनों ही को इस जुलूस में शामिल नहीं किया गया था पर इत्तफाक से वे दोनों भी भीड़ के साथ उसी समय वहाँ से गुजरे। वे लोग वहाँ तमाशा देखने के लिये आये थे।

जैसे ही वे दोनों उसकी खिड़की के सामने से गुजरे सौदागर की पत्नी ने उन्हें पहचान लिया और राजा को जा कर बताया।

राजा शुरू से ही लोगों के जाते हुए देख रहा था आश्चर्य से बोला — "क्या मेरा अपना बेटा और मेरे वज़ीर का बेटा? इन लोगों ने दूसरों के लिये यह क्या उदाहरण रखा है। इन दोनों को सजा मिलनी चाहिये।"

वज़ीर बोला — "सरकार ऐसा मत कीजिये। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ। इस मामले की पहले ठीक से जॉच कर लीजिये कि ऐसा कैसे हुआ उसके बाद ही कुछ फैसला कीजियेगा।"

फिर वह दोनों नौजवानों की तरफ देखता हुआ बोला — "तुमने ऐसा बेरहम काम कैसे किया?"

जवाब राजकुमार ने दिया — "मैंने अपना तीर एक चिड़िया को मारने के लिये चलाया था जो एक खुली हुई खिड़की की दीवार पर बैठी थी। मेरा निशाना चूक गया। मुझे ऐसा लगता है कि शायद उस खिड़की के पास इस सौदागर की पत्नी खड़ी होगी तो वह तीर उसको जा कर लग गया।

अगर मुझे पता होता कि यह स्त्री या कोई और वहॉ खड़ा है तो मैं उस दिशा में तीर चलाता ही नहीं।"

यह जवाब सुन कर राजा बोला — "ठीक है इस बात पर हम बाद में बात करेंगे। शहर के सब लोगों को जाने दो। अब उनकी हमें यहॉ कोई जरूरत नहीं है।"

शाम को राजा और वजीर दोनों अपने अपने बेटों के बारे में बहुत देर तक बात करते रहे। राजा यह चाहता था कि दोनों को सजा दी जाये पर वजीर का सोचना यह था कि सजा केवल राजकुमार को ही मिलनी चाहिये।

और उसने यह राजा से कहा भी क्योंकि राजा को इस बात पर इतना गुस्सा आ रहा था कि वह अपने बेटे का चेहरा फिर कभी

देखना नहीं चाहता था इसलिये राजकुमार को देश निकाला दे दिया जाये। फिर आखीर में यही फैसला हुआ और राजकुमार को देश निकाला दे दिया गया।

अगले दिन कुछ सिपाही राजकुमार को शहर के बाहर छोड़ने गये। जब वे राज्य की सीमा के पास पहुँच गये तो वजीर का बेटा भी वहाँ पहुँच गया। वह बहुत जल्दी में आया था। उसके साथ चार घोड़ों पर सोने की मुहरों[52] के चार थैले थे।

वह राजकुमार के गले में अपनी बाँहें डाल कर बोला — "मैं आ गया हूँ मेरे दोस्त। मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा क्योंकि मैं तुम्हें अकेला नहीं जाने दे सकता। हम लोग साथ साथ रहे हैं तो हम साथ साथ ही देश से बाहर भी जायेंगे और साथ साथ ही मरेंगे भी। अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेहरबानी कर के मुझे वापस मत भेजना।"

राजकुमार बोला — "एक बार फिर सोच लो मेरे दोस्त कि तुम क्या कर रहे हो। मुझे कई मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। तुम मेरे साथ अपना देश और अपना घर क्यों छोड़ना चाहते हो?"

वजीर का बेटा बोला — "क्योंकि मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ और तुम्हारे बिना कभी खुश नहीं रह सकता।"

---

[52] Muhar is a gold coin.

सो दोनों दोस्त यानी राजकुमार और वजीर का बेटा हाथ में हाथ डाले देश की सीमा से बाहर निकलने के लिये जल्दी जल्दी चल दिये। अपने पिता के राज्य की सीमा पर पहुँच कर राजकुमार ने सिपाहियों को कुछ सोना दिया और उनसे वापस लौट जाने के लिये कहा। सिपाहियों ने राजकुमार से पैसा लिया और वापस लौट गये।

पर वे वहाँ से बहुत दूर नहीं गये बल्कि कुछ चट्टानों और झाड़ियों के पीछे छिप गये ताकि वे यह बात यकीन के साथ कह सकें कि राजकुमार वापस नहीं आया।

दोनों दोस्त चलते रहे और एक गाँव में आ पहुँचे। वह रात उन्होंने वहाँ लगे एक बड़े से पेड़ के नीचे बिताने की सोची। राजकुमार ने आग जलाने की तैयारी की और सोने के लिये बिस्तर तैयार किया जिसे वे अपने साथ ले कर आये थे।

और वजीर का बेटा शाम के खाने का इन्तजाम करने के लिये एक बनिये की एक डबल रोटी बनाने वाले की और एक कसाई की दूकान पर गया। किसी वजह से उसे कुछ देर हो गयी। या तो डबल रोटी तैयार नहीं थी या फिर बनिये के पास सारे मसाले नहीं थे।

करीब आधे घंटे तक इन्तजार करने के बाद राजकुमार का धीरज छूट गया तो वह उठा और उठ कर टहलने लगा और गाँव के बाजार की तरफ देखने लगा।

उसने देखा कि उनके पेड़ के पास से ही एक बहुत साफ सा नाला बह रहा था। उसकी आवाज सुन कर राजकुमार को लगा कि उसको स्रोत वहाँ से ज़्यादा दूर नहीं था तो वह उसके स्रोत को ढूँढने चल दिया।

आगे चल कर उसने देखा कि वह नाला एक बहुत बड़ी झील में से निकल रहा था। उस समय वह झील कमल के फूलों और कई तरह के पानी के पौधों से भरी हुई थी। राजकुमार उस झील के किनारे बैठ गया और क्योंकि उसको प्यास लगी थी सो पीने के लिये उसने अपने दोनों हाथों में झील का पानी लिया।

खुशकिस्मती से उस पानी को पीने से पहले उसने उसे देखा तो उसको उस पानी में एक बहुत ही सुन्दर परी की परछाई दिखायी दी। उसने उसको सचमुच में देखने के लिये चारों तरफ देखा तो उसने एक परी को झील के दूसरे किनारे पर बैठा देखा। उसको देख कर तो वह बेहोश हो कर गिर पड़ा।

उधर जब वज़ीर का बेटा बाजार से लौटा तो उसने देखा कि आग जली हुई थी घोड़े सुरक्षित बँधे हुए थे मुहरों के थैले भी एक ढेर में पड़े हुए थे पर राजकुमार का कोई पता नहीं था। उसकी यह भी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे उसको कहाँ ढूँढे।

उसने कुछ देर तो इन्तजार किया फिर उसने उसको पुकारना शुरू किया। उसका भी कोई जवाब न पा कर वह उठा और नाले

के पास चला गया। वहाँ जा कर उसको राजकुमार के पैरों के निशान मिल गये।

यह देख कर वह वहाँ से लौट आया और मुहरों के थैले और घोड़े ले कर फिर से उधर की तरफ चला। पैरों के निशान के सहारे वह राजकुमार के पास तक पहुँच गया। वहाँ जा कर उसे राजकुमार मरे जैसा पड़ा दिखायी दिया।

उसके मुँह से निकला "उफ़ उफ़।" उसने राजकुमार को उठाया उसके चेहरे और सिर पर पानी छिड़का और बोला — "उफ़ मेरे भाई यह सब क्या हो गया। मेहरबानी कर के मुझे इस हालत में छोड़ कर मरना नहीं। बोलो बोलो राजकुमार कुछ तो बोलो। मैं यह सब सहन नहीं कर सकता।"

ठंडा पानी चेहरे और सिर पर पानी पड़ने से राजकुमार को कुछ होश आया। उसने अपनी आँखें खोलीं और चारों तरफ देखा। वज़ीर के बेटे के मुँह से निकला — "खुदा का लाख लाख शुक्र है कि तुम ज़िन्दा हो। पर मेरे भाई यह मामला क्या है तुम्हें क्या हो गया था।"

राजकुमार बोला — "तुम यहाँ से चले जाओ। मैं तुम्हें कुछ नहीं बताऊँगा। तुम बस यहाँ से चले जाओ।"

वज़ीर का बेटा बोला — "अच्छा ऐसा करते हैं यह जगह छोड़ देते हैं यहाँ से कहीं और चलते हैं। देखो मैं तुम्हारे लिये और घोड़ों

के लिये कुछ खाना ले कर आया हूँ। चलो खाना खा लो फिर यहाँ से चलते हैं।"

राजकुमार बोला — "नहीं मैं नहीं जाऊँगा तुम अकेले ही चले जाओ।"

वज़ीर का बेटा बोला — "नहीं कभी नहीं। मैं तुमको साथ लिये बिना कहीं नहीं जाऊँगा। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम मुझसे इस तरह की बात कर रहे हो। कुछ समय पहले तक तो हम भाई जैसे थे और अब तुम मेरी शक्ल भी देखना नहीं चाहते।"

राजकुमार बोला — "मैंने एक परी देखी है। पर मैंने उसको बस एक पल के लिये ही देखा था। जैसे ही उसने देखा कि मैं उसको देख रहा हूँ उसने अपना चेहरा कमल की पंखुड़ियों में छिपा लिया। ओह कितनी सुन्दर थी वह।

जब मैं उसकी तरफ देख रहा था तो उसने अपने कपड़ों के अन्दर से हाथी दाँत का एक बक्सा निकाला और मेरी तरफ बढ़ा दिया। बस उसी समय मैं बेहोश हो गया। अगर तुम मेरी शादी उस परी से करा दो तो मैं तुम्हारे साथ कहीं भी चलने के लिये तैयार हूँ।"

वज़ीर का बेटा बोला — "मेरे दोस्त तुमने सचमुच में एक परी को देखा है। वह तो परियों की भी परी है। वह कोई और नहीं

बल्कि शहराज़ की गुलज़ार[53] है। मुझे यह बात उसने तुमको जो इशारे किये उनसे पता चली।

उसके कमल की पंखुड़ियों से अपने चेहरे को ढकने से उसका नाम पता चला और तुमको हाथी दॉत का बक्सा दिखाने से उसके घर का पता चला। थोड़ा धीरज रखो और बाकी की बात तुम मेरे ऊपर छोड़ दो। मैं तुम्हारी शादी उससे करा दूॅगा।"

राजकुमार ने जब अपने दोस्त के ऐसे शब्द सुने तो उसको बहुत तसल्ली हुई। वह उठा और उसने खाना खाया और फिर अपने दोस्त के साथ चला गया।

रास्ते में उनको दो आदमी मिले। ये दोनों डाकू थे और डाकुओं के एक गिरोह के थे। यह गिरोह 11 डाकुओं का था। इनकी एक बड़ी बहिन थी जो घर पर रहती थी और इन सबका खाना बनाती थी।

बाकी के 10 डाकू दो दो के समूह में देश में इधर उधर चारों तरफ जाया करते थे और उन यात्रियों को लूटा करते थे जो या तो उनसे लड़ नहीं पाते थे या फिर उन यात्रियों को आराम करने के लिये अपने घर बुलाते थे जो उन दोनों से बहुत ज़्यादा ताकतवर होते थे और वे उनसे लड़ नहीं पाते थे। वहॉ वे सब मिल कर उनसे लड़ लेते थे और उनको लूट लेते थे।

---

[53] Gulizar of Shahr-i-ja – Gulzar means rosy cheeked, and Shahrija means city of ivory

ये डाकू एक बड़े से मकान में रहते थे जिसमें बहुत सारे मजबूत कमरे बने हुए थे। उसके नीचे एक बहुत बड़ा गड्ढा था जहाँ वे उन लूटे हुए लोगों को मार कर उनकी लाशें फेंक देते थे जो भी उनके कब्जे में आ जाते थे।

सो जब उन दो डाकुओं ने राजकुमार और वज़ीर के बेटे को देखा तो वे इनके पास आये और इनसे बड़ी नम्रता से अपने घर आने और रात बिताने की प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि यहाँ से दूर दूर तक कोई और गाँव नहीं है जहाँ आप रात बिता सकें और अब रात भी काफी हो चुकी है।

राजकुमार ने वज़ीर के बेटे से पूछा — "भाई क्या हम इन दोनों भले आदमियों का कहा मान लें?"

वज़ीर के बेटे ने राजकुमार की तरफ टेढ़ी आँखों से देखा जिससे पता चलता था कि वह उनके साथ ठहरना नहीं चाहता था। पर राजकुमार क्योंकि थका हुआ था और उसने यह भी सोचा कि शायद वज़ीर के बेटे को कुछ ऐसे ही गलतफहमी हुई होगी उसने उन लोगों को हाँ कह दी और बोला — "यह आप लोगों की बड़ी मेहरबानी है कि आपने हमको अपने घर बुलाया।"

सो वे चारों उन डाकुओं के घर चल दिये। उन डाकुओं ने उन दोनों यात्रियों को एक कमरे में बिठा दिया और बाहर से ताला लगा दिया। अब ये दोनों यात्री वहाँ बैठे बैठे अपनी किस्मत को कोसने लगे।

वज़ीर के बेटे ने कहा — "अब रोने से कोई फायदा नहीं है। मैं इस खिड़की के ऊपर चढ़ कर देखता हूँ कि यहाँ से बाहर निकलने का कोई रास्ता है कि नहीं।"

यह कह कर वह खिड़की पर चढ़ा और फुसफुसा कर बोला — "हाँ है। इसके नीचे एक गड्ढा है जिसके चारों तरफ ऊँची दीवार है। मैं उसमें कूदता हूँ और जा कर इधर उधर देखता हूँ। तुम तब तक यहीं ठहरो और जब तक मैं लौट कर आऊँ तब तक मेरा इन्तजार करो।"

ऐसा कह कर वह नीचे कूद गया और फिर जल्दी ही वापस आ कर बोला कि उसने एक बहुत ही बदसूरत स्त्री को देखा जो लगता था कि इन लोगों के घर की देखभाल करने वाली होगी।

वज़ीर के बेटे का प्लान यह था कि वह अपनी सब बात इस बदसूरत स्त्री को बतायेगा और उससे वहाँ से निकलने में इस शर्त पर सहायता माँगेगा कि वहाँ से बाहर निकल कर राजकुमार उससे शादी कर लेगा।

इस पर वह उसको अपने कमरे तक ले कर आयेगा। वह यकीनन उनको वहाँ से निकालने के बदले में हमारा वायदा पूरा करने के लिये कहेगी। राजकुमार पहले तो उससे कुछ ना नुकुर करेगा पर फिर राजी हो जायेगा। यह है मेरा प्लान।

राजकुमार ने उसकी यह बात मान ली सो वज़ीर का बेटा उस स्त्री के पास चल दिया। वहाँ पहुँचा तो वह स्त्री रो पड़ी। उसने पूछा — "आप क्यों रोती हैं?"

वह बोली — "मैं यही सोच कर रोती हूं कि अब आप लोगों का समय पूरा हो चुका है।"

वज़ीर का बेटा बोला — "आप रोइये नहीं। बल्कि आप राजकुमार से शादी कर लीजिये। आप आइये और राजकुमार से इस प्लान पर बात कर लेते हैं।"

वह स्त्री वज़ीर के बेटे के साथ चल दी। कमरे में आने के बाद वजीर के बेटे ने राजकुमार से उससे शादी करने के लिये कहा लेकिन राजकुमार ने उससे शादी करने से मना कर दिया। उसने कहा कि वह इस मकान के कमरे में पड़ा पड़ा सड़ जायेगा पर ऐसी स्त्री से कभी शादी नहीं करेगा।

इस पर वज़ीर का बेटा उसके पैरों पर गिर पड़ा और उससे तब तक प्रार्थना करता रहा जब तक वह उससे शादी करने के लिये राजी नहीं हो गया।

राजकुमार की हाँ सुन कर वह स्त्री बहुत खुश हुई और उनको एक चोर दरवाजे से हो कर बाहर निकाल कर ले गयी।

वज़ीर के बेटे ने पूछा — "पर हमारे घोड़े और सामान कहाँ हैं।"

स्त्री बोली — "तुम उनको यहाँ नहीं ला सकते। उनको यहाँ लाने का मतलब है किसी और रास्ते से जाना और किसी और रास्ते से जाने का मतलब है कब्र में पैर देना।"

वज़ीर का बेटा बोला — "पर उनका हमारे साथ होना जरूरी है। हम उनके बिना नहीं जा सकते।"

स्त्री फिर बोली — "ठीक है तो वे भी इसी रास्ते से जायेंगे। मेरे पास एक जादू है जिससे मैं किसी को भी पतला या मोटा बना सकती हूँ।"

सो वज़ीर का बेटा चुपचाप अपने घोड़ों को ले आया और उस स्त्री ने उनके ऊपर जादू पढ़ कर उनको इतना पतला बना दिया कि वे उस तंग रास्ते से गुजर सकें जैसे कोई कपड़ा निकल जाता है। वहाँ से बाहर निकल कर उनको फिर से अपने पहले वाले रूप में ले आया गया।

बाहर निकलते ही वह अपने घोड़े पर चढ़ गया और दूसरे घोड़े की लगाम पकड़ ली। ऐसा ही उसने राजकुमार से भी करने के लिये कहा। राजकुमार भी मौका देख कर तुरन्त ही अपने घोड़े पर चढ़ गया और दूसरे घोड़े की लगाम पकड़ ली। जैसे ही वे दोनों अपने अपने घोड़ों पर चढ़े वे वहाँ से भाग निकले।

उनको भागते देख कर वह स्त्री चिल्लायी — "अरे रुको तो। मुझे भी साथ ले लो मुझे यहाँ अकेला मत छोड़ो। मेरे भाइयों को मेरे इस काम का पता चल जायेगा और वे मुझे मार डालेंगे।"

वज़ीर का बेटा वहीं से चिल्लाया “तो तुम भी हमारे साथ भागो न। देखो हम कोई खास तेज़ नहीं भाग रहे हैं।”

वह स्त्री उनके पीछे जितना तेज़ भाग सकती भागी। फिर भी वह उनसे काफी दूर थी। वज़ीर के बेटे ने जब यह देखा कि वे अब खतरे से बाहर हैं तो वह अपने घोड़े से उतरा और उस स्त्री को पकड़ कर एक पेड़ से बॉध कर उसकी खूब पिटायी की।

वह बोला — “ओ बदसूरत स्त्री। अगर तुझे तेरे भाइयों ने ढूँढ लिया तो तू उनसे कहना कि हम देव थे इसलिये वहॉ से भाग गये।”

चलते चलते वे फिर एक गॉव में पहुँचे और रात को वहीं रुक गये। अगली सुबह वे फिर वहॉ से चल दिये और हर आने जाने वाले से शहराज़ का पता पूछते रहे।

आखिरकार वे इस शहर में आ पहुँचे। यहॉ पहुँच कर वे एक ऐसी बुढ़िया की झोंपड़ी में ठहर गये जिससे उनको लगा कि उससे उनको डरने की कोई जरूरत नहीं है और वहॉ वे शान्ति से रह सकते हैं।

पहले तो उस बुढ़िया को उनका अपने घर में ठहराने का विचार कुछ जमा नहीं पर जब उसने उन दोनों को पानी पिलाया तो राजकुमार ने उसके प्याले में जिसमें उसने उसको पानी दिया था एक मुहर डाल दी और वज़ीर के बेटे ने भी ऐसा ही किया तो इससे

उसका मन बदल गया और उसने उन दोनों को कुछ दिनों के लिये अपने घर ठहरा लिया।

जैसे ही बुढ़िया का अपने घर का काम खत्म हुआ तो वह अपने मेहमानों के पास आ कर बैठ गयी। वज़ीर के बेटे ने ऐसा बहाना किया जैसे वह वहाँ की जगह और लोगों के बारे में कुछ जानता ही नहीं है। उसने बुढ़िया से पूछा कि क्या उस शहर का कोई नाम है।

बुढ़िया बोली — "अरे बेवकूफ। है न। हर छोटे से छोटा गाँव जो किसी भी शहर से बड़ा है जैसा कि यह है उसका नाम है।"

"तो इस शहर का नाम क्या है?"

बुढ़िया बोली — "इस शहर का नाम है शहराज़। क्या तुमको नहीं मालूम? मुझे लगा कि इसका नाम तो दुनियाँ भर को मालूम होगा।"

शहर का नाम सुन कर राजकुमार ने एक गहरी साँस ली। वज़ीर के बेटे ने राजकुमार को इशारे से कहा कि "चुप रहो वरना तुम अपना भेद खोल दोगे।"

वज़ीर के बेटे ने आगे पूछा — "क्या इस देश का कोई राजा भी है?"

बुढ़िया बोली — "हाँ है न। एक रानी भी है और एक राजकुमारी भी।"

"उनके क्या क्या नाम हैं?"

बुढ़िया बोली — "राजकुमारी का नाम गुलज़ार है और रानी का नाम. . . ।

वज़ीर के बेटे ने बुढ़िया की बात काटते हुए राजकुमार की तरफ देखा जो अभी तक पागलों जैसा बैठा था और बोला — "हॉ हम लोग अब सही देश में हैं। अब हम उस सुन्दर राजकुमारी को देख पायेंगे।"

दो दिन बाद ही उन दोनों यात्रियों ने बुढ़िया को बड़ा सजा बजा देखा उसके साफ सुथरे बाल सजे हुए देखे तो वज़ीर के बेटे ने उससे पूछा — "आज यहॉ कौन आ रहा है?"

बुढ़िया बोली — "कोई नहीं।"

वज़ीर के बेटे ने फिर पूछा — "तो फिर आप कहीं जा रही हैं क्या?"

बुढ़िया बोली — "हॉ मैं अपने बेटी से मिलने जा रही हॅू जो राजकुमारी गुलज़ार के पास काम करती है। मैं उससे रोज मिलने जाती हॅू। मुझे उससे मिलने कल भी जाना चाहिये था अगर तुम लोग यहॉ न आये होते तो और मेरा सारा समय तुम लोगों ने न ले लिया होता तो।"

वज़ीर का बेटा बोला — "ख्याल रखना कि तुम हमारे बारे में किसी से कुछ कहना नहीं जिससे राजकुमारी को कुछ पता चले।"

वज़ीर के बेटे ने भी उसको किसी से उनके बारे मे कुछ भी न कहने के लिये इसलिये कहा था कि अगर वह उसको इस बात को

किसी से कहने के लिये मना करेगा तो वह इस बात को वहॉ जा कर जरूर कहेगी और राजकुमारी को उनके आने के बारे में पता चल जायेगा। और यही वह चाहता भी था।

जब बेटी ने अपनी मॉ को देखा तो झूठा गुस्सा दिखाती हुई बोली — "मॉ तुम दो दिनों से क्यों नहीं आयीं?"

बुढ़िया बोली — "मेरी प्यारी बेटी। मेरे घर में दो यात्री एक राजकुमार और एक वज़ीर का बेटा आ कर ठहरे हुए हैं। बस उन्हीं के काम में लगी रही। सारा दिन खाना बनाना और सफाई करना। मैं उन दोनों को समझ ही नहीं पायी। उनमें से एक तो बिल्कुल बेवकूफ सा लगता है। उसने मुझसे इस देश का नाम पूछा इस देश के राजा का नाम पूछा।

ये लोग कहॉ से आ सकते हैं जो इनको यह सब भी नहीं पता। पर ये लोग हैं बड़े और अमीर। वे मुझे हर सुबह शाम सोने की एक एक मुहर देते हैं।"

इसके बाद बुढ़िया वहॉ से चली गयी और राजकुमारी के पास जा कर उससे वही शब्द फिर दोहरा दिये। उनको सुन कर राजकुमारी ने उसको बहुत बुरी तरह से पीटा और उसको कड़ी सजा की धमकी देते हुए कहा कि अगर उसने फिर कभी अजनबियों के बारे में उसके सामने कुछ कहा तो वह उसको बहुत कड़ी सजा देगी।

शाम को जब बुढ़िया घर लौटी तो उसने वज़ीर के बेटे को आ कर सब बताया कि उसको बहुत अफसोस है कि उसने अपना वायदा तोड़ दिया। उसने उसको यह भी बताया कि फिर कैसे राजकुमारी ने उसको पीटा क्योंकि उसने उन दोनों के बारे में उसको बताया था।

राजकुमार उसकी सब बातें सुन रहा था सो उसके मुॅह से निकला "उफ़ उफ़। जब इन आदमियों के बारे में सुन कर ही उसके गुस्से का यह हाल है तो उनको देख कर क्या होगा।"

वज़ीर का बेटा आश्चर्य से बोला — "तुम गुस्से की बात करते हो वह तो तुमको देख कर ही खुशी से फूल जायेगी। मैं जानता हूॅ। उसने जिस तरीके से इस बुढ़िया के साथ बर्ताव किया है उससे साफ पता चलता है कि वह तुमसे कह रही है कि आने वाले अगले काले पाख[54] में तुम उससे जा कर मिलो।"

यह सुनते ही राजकुमार के मुॅह से निकला — "या अल्लाह तेरा लाख लाख शुक्र है।"

अगली बार जब वह बुढ़िया फिर महल गयी तो गुलज़ार ने अपनी एक नौकरानी को बुलाया और उसको उस कमरे में दौड़ कर आने के लिये कहा जिसमें वह उस बुढ़िया से बात करे।

---

[54] Translated for the words "Dark Fortnight". Indian calendar is arranged by Moon and there are two 15-days Paakh (Paksha) in one month – dark fortnight and light fortnight.

उसने उससे यह भी कहा कि अगर बुढ़िया यह पूछे कि क्या मामला है तो वह कहे कि राजा के हाथी पागल हो गये हैं और वे शहर और बाजार की तरफ भाग रहे हैं। रास्ते में जो भी मिलता है वे उन सबको बर्बाद करते जाते हैं।

नौकरानी ने उसका कहना माना और उस कमरे में जा कर उसने वही कहा जो राजकुमारी ने उससे कहने के लिये कहा था। बुढ़िया यह सुन कर डर गयी उसने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि वे हाथी उसकी झोंपड़ी को गिरा दें और उस राजकुमार और उसके दोस्त को मार दें सो उसने राजकुमारी से घर जाने की इजाज़त माँगी जो उसको मिल गयी।

राजकुमारी के पास एक जादू का झूला था जिस पर जब कोई बैठ जाता था तो वह उसको वहीं ले जाता था जहाँ उसके ऊपर बैठने वाला चाहता था। उसने पास खड़ी हुई एक नौकरानी से वह झूला लाने के लिये कहा।

जब वह झूला आ गया तो उसने बुढ़िया को उस पर बैठने और अपने घर जाने की इच्छा प्रगट करने के लिये कहा। बुढ़िया उस पर बैठ गयी और तुरन्त ही अपने घर सुरक्षित पहुँच गयी।

वह घर पहुँच कर यह देख कर बहुत खुश हुई कि उसके मेहमान सुरक्षित थे। वह बोली — "ओह मुझे लगा कि वे कहीं तुम लोगों को मार न दें। राजकुमारी की दासी कह रही थी कि शाही

हाथी पागल हो गये हैं और इधर उधर भाग निकले हैं। मैंने जब यह सुना तो मुझे तुम लोगों की बड़ी चिन्ता हो गयी।

इसलिये राजकुमारी जी ने यह झूला मुझे घर सुरक्षित रूप से आने के लिये दिया। आओ बाहर चलें कहीं ऐसा न हो कि हाथी यहाँ आ कर मेरी झोंपड़ी ही गिरा दें।"

वज़ीर का बेटा बोला — "मुझे विश्वास नहीं होता कि ऐसा हुआ। यह सब बहाना है। वे लोग आपके साथ चाल खेल रहे हैं माँ जी।"

फिर वह राजकुमार के कान में फुसफुसाया — "अब तुम्हारे दिल की इच्छा पूरी होने वाली है। ये सब उसी के इशारे हैं।"

काले पाख के शुरू होने के दो दिन बाद राजकुमार और वज़ीर का बेटा दोनों उस झूले पर बैठे और महल के आँगन में पहुँचने की इच्छा प्रगट की। एक पल में ही वे वहाँ थे। महल के एक दरवाजे के पास राजकुमारी खड़ी हुई थी।

उसकी भी राजकुमार को देखने की उतनी ही इच्छा थी जितनी कि राजकुमार की इसको देखने की। कितना खुशी का मौका था वह।

गुलज़ार बोली — "ओह आखिर मैंने अपने प्रेमी और पति को पा ही लिया।"

राजकुमार भी बोला — "खुदा का लाख लाख शुक्र है कि उसने हमको मिला दिया।"

दोनों ने फिर से मिलने का प्लान बनाया एक दूसरे को चूमा और फिर अलग हो गये – राजकुमार अपनी झोंपड़ी की तरफ चला गया और राजकुमारी अपने महल में चली गयी। दोनों इस मुलाकात के बाद इतने खुश थे जितने कि पहले कभी नहीं थे।

इसके बाद से राजकुमार गुलज़ार से मिलने रोज जाने लगा। वह सुबह को महल चला जाता और शाम को अपनी झोंपड़ी में वापस लौट आता।

एक दिन सुबह को गुलज़ार ने राजकुमार से प्रार्थना की वह हमेशा के लिये वहीं रह जाये क्योंकि उसको राजकुमार का हर शाम को चले जाना अच्छा नहीं लगता था।

उसको हमेशा यही चिन्ता लगी रहती कि कहीं उसके साथ कुछ बुरा न हो जाये – कहीं उसको डाकू न मार डालें या फिर वह कहीं बीमार न पड़ जाये और फिर वह उससे मिल ही न पाये। अब वह उसको देखे बिना नहीं रह सकती थी।

राजकुमार ने उससे कहा भी कि डरने की कोई ऐसी बात नहीं थी और फिर रात को उसको अपने दोस्त के पास लौट जाना ही चाहिये क्योंकि उसने केवल उसी के लिये अपना देश और घर छोड़ा और अपनी ज़िन्दगी खतरे में डाली है। इसके अलावा अगर वह न होता तो वह उससे कभी मिल ही नहीं सकता था।

गुलज़ार उस समय तो यह मान गयी पर उसने अपने मन में यह निश्चय कर लिया कि जैसे ही उसको मौका मिलेगा वह इस वज़ीर के बेटे को अपने रास्ते से हटा कर ही रहेगी।

इस बातचीत के कुछ दिन बाद ही राजकुमारी ने अपनी एक नौकरानी को पुलाव[55] बनाने का हुक्म दिया। उसने उसको बताया कि उसे कैसे बनाना है और उसे पकाते समय कैसे उसमें एक जहर मिलाना है। जैसे ही वह तैयार हो जाये तो उसको ढक देना है ताकि उसकी जहरीली भाप निकल न जाये।

जब वह पुलाव तैयार हो गया तो उसने वज़ीर के बेटे के पास इस सन्देश के साथ भेज दिया कि गुलज़ार तुमको यह पुलाव अपने मरे हुए चाचा के नाम में भेज रही है।

वज़ीर को जब वह पुलाव मिला तो उसने सोचा कि शायद राजकुमार ने उसके बारे में राजकुमारी से कुछ अच्छा बोला होगा इसी लिये उसने उसे याद किया है। सो उसने उसकी वापसी में राजकुमारी को धन्यवाद और सलाम भेज दिया।

जब शाम को खाने का समय हुआ तो उसने पुलाव का वह बर्तन निकाला और एक नदी के किनारे उसे खाने के लिये चला गया। उसने बर्तन का ढक्कन उतार कर घास पर रख दिया और खुद नदी में हाथ धोने चला गया। हाथ धो कर उसने अपनी पूजा की।

---

[55] Pulaav is a dish of rice cooked with a few vegetables and meat too if needed.

जब वह यह सब कर रहा था कि उसी बीच उसने देखा कि ढक्कन के नीचे की घास बिल्कुल पीली पड़ गयी थी। यह देख कर वह आश्चर्यचकित रह गया।

उसको शक हुआ कि उस पुलाव में जहर था सो उसने उसमें से थोड़ा सा पुलाव निकाल कर पास में बैठे कौओं की तरफ फेंका। जैसे ही कौओं ने उसे खाया तो वे तो उसे खा कर एकदम ही मर कर नीचे गिर पड़े।

वजीर के बेटे के मुँह से निकला — "अल्लाह का शुक्र है कि उसने इस समय मुझे मरने से बचाया।"

जब शाम को राजकुमार महल से घर लौटा तो वजीर का बेटा बहुत उदास और दुखी था। राजकुमार ने अपने दोस्त के इस बदलाव को देखा तो उसने उससे पूछा कि इस बदलाव की क्या वजह थी — "तुम क्यों उदास और दुखी हो क्या इसलिये कि मैं रोज महल में इतनी देर देर तक रहता हूँ?"

वज़ीर के बेटे ने तुरन्त जान लिया कि राजकुमार को इस जहर के बारे में कुछ पता नहीं है वह इस चाल से बिल्कुल अनजान है सो उसने उसे सब कुछ बता दिया।

वह बोला — "देखो इस रूमाल में उस बर्तन का बचा कुछ पुलाव है जो राजकुमारी जी ने मुझे सुबह अपने मरे हुए चाचा के नाम पर भेजा था। यह जहर से भरा हुआ है। यह तो अल्लाह का

शुक्र है कि मुझे समय रहते पता चल गया वरना मैं तो आज गया था।”

राजकुमार को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ वह बोला — “मेरे भाई यह काम कौन कर सकता है। ऐसा कौन सा आदमी है जिसको तुमसे दुश्मनी हो।”

वज़ीर का बेटा बोला — “राजकुमारी गुलज़ार। सुनो जब तुम अगली बार उससे मिलने जाओ तो मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम थोड़ी सी बर्फ ले जाना और उससे मिलने से ठीक पहले उसमें से थोड़ी सी बर्फ अपनी दोनों ऑखों में डाल लेना।

इससे तुम्हारी ऑखों में ऑसू आ जायेंगे। उनको देख कर गुलज़ार तुमसे पूछेगी कि तुम क्यों रो रहे हो। तुम उससे कहना कि अचानक आज सुबह तुम्हारा दोस्त मर गया है तुम इसलिये रो रहे हो। और देखो यह शराब और यह फावड़ा भी तुम अपने साथ लेते जाओ। जब तुम अपने दोस्त की मौत की वजह से बेहोश से होने लगो तो तुम उसे यह शराब पीने के लिये कहना।

यह शराब थोड़ी तेज़ है। इसको पीते ही वह बेहोश होने लगेगी और गहरी नींद सो जायेगी। तब तुम यह फावड़ा गर्म करना और उसकी पीठ पर इससे निशान बना देना। यह कर के तुम उसका मोती का हार और यह फावड़ा दोनों अपने साथ ले कर वापस आ जाना।

इस सबको करने में डरना नहीं क्योंकि जब तुम यह सब काम पूरा कर लोगे तो यह तुम्हारे लिये अच्छी किस्मत और खुशी ले कर आयेगा। मैं देखूँगा कि राजकुमारी के पिता और उनका सारा दरबार उससे तुम्हारी शादी के लिये हॉ कर देंगे।”

राजकुमार ने कहा कि ठीक है वह वैसा ही करेगा जैसा उसने उससे करने के लिये कहा है। और उसने वैसा ही किया भी।

अगली रात जब राजकुमार राजकुमारी गुलज़ार से मिल कर उसके महल से लौटा तो राजकुमार और वज़ीर के बेटे ने घोड़े और मुहरों के थैले लिये और एक कब्रिस्तान की तरफ चल दिये जो वहॉ से करीब एक मील की दूरी पर था।

उन लोगों ने यह प्लान बनाया कि वज़ीर का बेटा एक फ़कीर बनेगा और राजकुमार उस फ़कीर का चेला और नौकर बनेगा।

अगली सुबह जब गुलज़ार होश में आयी तो उसको अपनी पीठ में जलन भरा दर्द महसूस हुआ और उसका मोतियों का हार गायब था। उसने तुरन्त ही अपने हार की चोरी की खबर तो राजा को दी पर अपनी पीठ के बारे में उसे कुछ भी नहीं बताया।

राजा ने जब इस चोरी के बारे में सुना तो उसे बहुत गुस्सा आया और उसने अपने राज्य में इस चोरी की घोषणा करवा दी।

घोषणा सुन कर वज़ीर का बेटा बोला यह सब ठीक हो रहा है। मेरे भाई तुम डरो नहीं। तुम यह हार लो और बाजार जा कर इसको बेचने की कोशिश करो। राजकुमार उस हार को ले कर

बाजार में एक सुनार की दूकान पर गया और उससे उसे खरीदने के लिये कहा।

सुनार ने उससे पूछा कि उसको उसका कितना पैसा चाहिये। राजकुमार बोला मुझे इसका पचास हजार रुपया चाहिये। सुनार बोला ठीक है तुम यहीं बैठो और मेरा इन्तजार करो जब तक मैं इसका पैसा ले कर आता हूँ।

राजकुमार वहाँ सुनार का बहुत देर तक इन्तजार करता रहा तब कहीं जा कर सुनार वापस आया। पर साथ में वह कोतवाल और कुछ पुलिस वालों को भी लाया था। कोतवाल ने आते ही राजकुमार को राजकुमारी का हार चुराने के जुर्म में अपनी हिरासत में ले लिया।

कोतवाल ने उससे पूछा कि उसको यह हार कहाँ से मिला। राजकुमार ने उसे बताया कि यह हार मुझे एक फ़कीर ने दिया है जिसके पास मैं काम करता हूँ उसने मुझे यह हार बाजार में बेचने के लिये दिया है। अगर आप मुझे इजाज़त दें तो मैं आपको उस फ़कीर के पास ले चलता हूँ।

कोतवाल राजी हो गया। राजकुमार तब कोतवाल और पुलिस को फ़कीर के पास ले गया जहाँ उसने फ़कीर को छोड़ा था। वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा कि फ़कीर अपनी आँखें बन्द किये बैठा है और अपनी प्रार्थना कर रहा है।

जब फ़कीर की प्रार्थना खत्म हो गयी तो कोतवाल ने उससे पूछा कि उसके पास राजकुमारी का हार कैसे आया।

फ़कीर बोला — "तुम राजा को यहाँ ले कर आओ तब मैं तुम्हें यह सब उन्हीं के सामने बताऊँगा।"

राजा को वहाँ लाया गया। राजा उस फ़कीर को देख कर उसके सामने अपना गुस्सा न दिखा सका कि कहीं ऐसा न हो कि अल्लाह का गुस्सा उसके ऊपर पड़ जाये। सो बड़ी नम्रता से उसने अपने हाथ जोड़ कर उससे पूछा — "आपको मेरी बेटी का यह हार कैसे मिला?"

फ़कीर बोला — "कल रात हम यहाँ पर इस कब्र के पास बैठे हुए थे और अल्लाह की प्रार्थना कर रहे थे कि एक लड़की जो राजकुमारी जैसी पोशाक पहने थी यहाँ आयी और एक कब्र में से एक लाश निकाल कर खाने लगी जिसको कुछ दिन पहले ही दफ़नाया गया था।

यह देख कर मुझे गुस्सा आ गया और मैंने उसकी पीठ पर उस फावड़े से चोट की जो उस समय यहाँ आग में पड़ा था। चोट खा कर वह यहाँ से भागी तो जल्दी में उसका हार नीचे गिर पड़ा। आपको मेरी इस बात पर आश्चर्य तो जरूर हो रहा होगा पर यह साबित करना कोई मुश्किल काम नहीं है।

आप अपनी बेटी को बुलाइये और देखिये कि उसकी पीठ पर फावड़े के जले का निशान है या नहीं। आप खुद जा कर देखिये

और अगर जैसा मैं कहता हूँ वह सच है तो उसे यहाँ लाइये मैं उसको सजा दूँगा।"

यह सुन कर राजा को फ़कीर की बातों पर विश्वास तो नहीं हुआ पर उसके पास और कोई चारा नहीं था सो वह तुरन्त ही महल लौट गया और अपनी बेटी की पीठ देखने के लिये कहा।

दासी ने आ कर राजा को बताया कि फ़कीर की बात सच थी उसकी पीठ पर फावड़े के जले का निशान था। यह सुन कर राजा के गुस्से का पारावार न रहा उसने कहा कि राजकुमारी को तुरन्त ही मार दिया जाये।

दासी बोली — "नहीं नहीं हुजूर। हम इन्हें क्यों मारें। हमको इन्हें उसी फ़कीर के पास भेज देना चाहिये जिसको इनका हार मिला है ताकि वही इनको अपनी मनचाही सजा दे सके।"

राजा राजी हो गया और राजकुमारी को फ़कीर के पास भेज दिया गया। राजकुमारी को देख कर फ़कीर बोला — "इसको एक पिंजरे में बन्द कर दो और पिंजरा उसी कब्र के पास रख दो जिसमें से इसने लाश निकाली थी।"

ऐसा ही किया गया। पिंजरे को एक कब्र के पास रख कर सब लोग वहाँ से चले गये और राजकुमारी उस कब्रिस्तान में फ़कीर और उसके चेले के साथ अकेली रह गयी।

जब थोड़ा अँधेरा हो गया तो फ़कीर और उसके चेले ने अपने अपने रूप बदल लिये और अपने अपने घोड़े और सामान ले कर

उस पिंजरे के सामने आ खड़े हुए। उन्होंने राजकुमारी को पिंजरे में से बाहर निकाला उसकी पीठ के घाव पर मरहम लगाया और उसको राजकुमार के पीछे घोड़े पर बिठा कर वहाँ से भाग लिये।

वे रात भर अपने घोड़ों पर चलते रहे। सुबह होने पर ही वे आराम करने के लिये रुके। वहाँ उन्होंने अपने आगे के प्लान पर विचार किया।

वज़ीर के बेटे ने राजकुमारी को थोड़ा सा वह जहरीला पुलाव दिखाया जो उसने उसके लिये भेजा था और उससे पूछा कि क्या अब भी वह अपने किये पर पछता नहीं रही है।

यह देख कर राजकुमारी रो पड़ी उसने स्वीकार किया कि वज़ीर का बेटा तो उसका सबसे बड़ा सहायक और दोस्त था। उसको जहर भरा पुलाव भेजना उसकी सबसे बड़ी गलती थी।

उसके बाद वज़ीर के बेटे ने अपने पिता के नाम एक चिट्ठी में वह सब लिख कर भेजा जो उनके देश छोड़ने के बाद उनके साथ घटा था। जब वजीर ने यह चिट्ठी पढ़ी तो उसने जा कर राजा को बताया।

उसने उन दोनों को वापस न आने के लिये लिखा और लिखा कि वे गुलज़ार के पिता को एक चिट्ठी लिखें जिसमें यह सब लिखें। इस हुक्म के अनुसार वज़ीर के बेटे ने राजकुमार को गुलज़ार के पिता को एक चिट्ठी लिखवायी।

वह चिट्ठी पढ़ कर गुलज़ार के पिता को अपने वज़ीरों और दूसरे औफीसरों पर बहुत गुस्सा आया कि उनको इतने इज़्ज़तदार लोगों के अपने राज्य में होने का कुछ भी पता नहीं था क्योंकि वह राजकुमार और वजीर के बेटे को अपना धन्यवाद देना चाहता था। उसने अपने कुछ वज़ीरों की सजा का हुक्म सुना दिया कि फलॉ फलॉ तारीख को उनको सजा दी जायेगी।

उसने वज़ीर के बेटे को लिखा कि वह उसके महल आये और उसके महल में आ कर ठहरे। और अगर राजकुमार राजी होंगे तो मैं राजकुमारी की शादी उनसे जितनी जल्दी हो सकेगा उतनी जल्दी कर दूॅगा।

यही तो वे चाहते थे। राजा की यह चिट्ठी पढ़ कर वे बहुत खुश हुए और उन्होंने राजा का बुलावा स्वीकार कर लिया। जब वे वहॉ पहुॅचे तो राजा ने उनका दिल से स्वागत किया।

जल्दी ही राजकुमार की शादी गुलज़ार से हो गयी। राजा ने राजकुमार को भेंट मे बहुत सारे घोड़े हाथी जवाहरात कीमती कपड़े दे कर उनके देश के लिये विदा किया क्योंकि उसको यकीन था कि अब राजा उनका अपने राज्य में स्वीकार कर लेगा।

उनके जाने से पहले की रात जिन वज़ीरों को राजा ने सजा देने का निश्चय किया था उन्होंने वज़ीर के बेटे से राजा से माफी की प्रार्थना की और कहा कि अगर वह उनको राजा से माफी दिलवा देंगे तो वे हर एक उसको अपनी बेटी देंगे।

वज़ीर का बेटा मान गया और उनको माफी दिलवाने में सफल हो गया। वायदे के अनुसार उन वज़ीरों ने अपनी अपनी बेटियों की शादी वज़ीर के बेटे से कर दी।

अगले दिन राजकुमार अपनी पत्नी गुलज़ार के साथ और वजीर का बेटा अपनी कई सुन्दर पत्नियों के साथ कई सिपाही बहुत सारे ऊँट हाथी और घोड़े और बहुत बड़े खजाने के साथ अपने देश चले।

रास्ते में वे डाकुओं के घर के पास से गुजरे तो सिपाहियों की सहायता से उन्होंने उनका मकान तोड़ कर गिरा दिया और वहाँ से उनका बरसों का जोड़ा हुआ खजाना ले कर फिर आगे अपने देश की तरफ चले।

आखिर वे अपने देश आ पहुँचे। राजा ने जब अपने बेटे की सुन्दर पत्नी और इतने सारे खजाने को देखा तो उसने तुरन्त ही उसको अपने राज्य में स्वीकार कर लिया।

बस फिर क्या था फिर तो राजकुमार की ज़िन्दगी में खुशियाँ ही खुशियाँ थी राजकुमार सबका प्यारा हो गया। समय आने पर वह राजगद्दी पर बैठा और बहुत सालों तक उसने खुशी और शान्ति से राज किया।

32 अजीब मॉग[56]

एक बार की बात है कि एक राजा शिकार खेलने के लिये निकला तो रास्ते में उसको एक फ़कीर मिला। उसने उसको सलाम किया और उससे पूछा कि क्या वह उसके लिये कुछ कर सकता है।

फ़कीर बोला — "नहीं बहुत बहुत धन्यवाद पर क्या मैं आपके लिये कुछ कर सकता हूँ?"

राजा ने कहा — "हॉ। मुझे एक ऐसी पत्नी चाहिये जो शक्ल सूरत और लम्बाई में मेरे जैसी हो।"

फ़कीर बोला — "अफसोस कि आपने यह एक बहुत ही मुश्किल मॉग रखी है फिर भी मैं इसे पूरा कर सकता हूँ। पर इस बात का ध्यान रहे कि ऐसी पत्नी बेवफा साबित होगी।"

राजा बोला — "आप इस बात की चिन्ता न करें बस आप मेरी इच्छा पूरी कर सकते हों तो कर दें।"

इस पर फ़कीर उठा और उसने एक कुल्हाड़ी से राजा के सिर के दो हिस्से किये और उन्हें जमीन में गाड़ दिया। फिर वह ज़ोर से बोला — "ओ अल्लाह तू मेरी प्रार्थना सुन और राजा को फिर से दो हिस्सों में ज़िन्दा कर दे – एक राजा खुद और दूसरा एक स्त्री के रूप

---

[56] A Strange Request (Tale No 32)

में बिल्कुल उसी जैसा।" अल्लाह ने उसकी प्रार्थना सुन ली और धरती से पहले राजा निकला फिर उसी के जैसी एक स्त्री निकली।

राजा यह देख कर बहुत खुश हुआ और अपनी नयी पत्नी को ले कर घर आ गया। कुछ समय बाद उसने उसके लिये जंगल में एक नया महल बनवा दिया। अब वह वहाँ उसके साथ रहने के लिये अक्सर जाने लगा। पर अफसोस वह स्त्री तो बेवफा निकली जैसा कि फ़कीर ने कहा था।

एक दिन जब राजा वहाँ नहीं आया तो उसने देखा कि राजा के वज़ीरों में से एक वज़ीर वहाँ से गुजर रहा था। वह एक सुन्दर नौजवान था सो उस स्त्री को उसे देखते ही उससे प्यार हो गया। उसने उसको अपने पास बुलाया और वह उसके पास चला गया। इस तरह से वे अक्सर मिलते रहे और दोनों की दोस्ती गाढ़ी होती गयी।

एक सुबह वे करीब करीब पकड़ लिये गये। राजा अपनी उस पत्नी के पास गया जबकि लोगों को यह मालूम था कि वह कहीं बहुत दूर गया हुआ है। इस तरह उनके पकड़े जाने का पूरा मौका था। इस पकड़े जाने से बचने के लिये उन्होंने अपने न पकड़े जाने का पूरी तरीके से इन्तजाम करने का फैसला किया।

उनका प्लान यह था कि वे कीतल नाम के एक कुम्हार से बात करेंगे जो उनके लिये शहर से ले कर महल तक एक सुरंग खोद देगा। इससे वह वज़ीर वहाँ जब चाहे तब आ जा सकेगा। उन्होंने

ऐसा ही किया। यह काम छिपे तौर पर किया गया सो कुछ समय तक तो यह सब ठीक से चलता रहा पर एक दिन उनकी नीचता की पोल खुल गयी।

एक बार वज़ीर ने एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया जिसमें उसने राजा को भी बुलाया। राजा ने उसका न्यौता स्वीकार कर लिया और उसके घर पहुँच गया। वहाँ वह स्त्री भी अपना वेश बदल कर बैठी हुई थी। लेकिन राजा ने फिर भी उसे पहचान लिया।

उसने सोचा "क्या मैं यह सपना देख रहा हूँ? नहीं यह तो वही है। मैं इसके कपड़ों पर कुछ निशान बना देता हूँ। फिर जब मैं वापस लौटूँगा तब देखता हूँ कि मुझे धोखा लगा या नहीं।"

यह सोच कर उसने उसके दुपट्टे मे हल्दी का निशान लगा दिया और फिर उसके पास से ऐसे गुजर गया जैसे कुछ हुआ ही न हो।

रात को जब वह उसके महल पहुँचा तो वह उसका इन्तजार कर रही थी। उसके दुपट्टे पर अभी भी उसका लगाया हल्दी का निशान मौजूद था।

राजा यह सब देखते ही चिल्लाया — "ओ नीच।" और अपनी तलवार निकाल कर उसके एक ही वार से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया।

अगले दिन उसने अपनी बादशाहत छोड़ दी और फ़कीर बन गया।

33 अन्यायी राजा और नीच सुनार[57]

एक बार की बात है कि एक राजा अपने बागीचे में टहल रहा था कि एक बारहसिंगा उस बागीचे की बाड़ तोड़ कर बागीचे के अन्दर आ कर इधर उधर भागने लगा और बागीचे में लगे फूलों को तहस नहस करने लगा।

यह देख कर राजा को गुस्सा आ गया और उसने अपने नौकरों को बुला कर उसे पकड़ने के लिये कहा। वह खुद भी नंगी तलवार ले कर उसके पीछे भागा। अचानक वह बागीचे से बाहर भाग गया। राजा भी उसके पीछे पीछे अपने घोड़े पर भागा।

राजा उसका पीछा करते करते अपने राज्य की सीमा तक पहुँच गया पर वह उसको पकड़ नहीं सका। उसकी वहाँ से आगे जाने की इच्छा नहीं हुई सो वह वहीं पर रुक गया।

मौसम बहुत गर्म था और उसको प्यास भी लग आयी थी सो वह अपने घोड़े से नीचे उतर गया और उसने नहाने की सोची। वह जब वहाँ नहा रहा था तो किसी नीच आदमी ने उसका घोड़ा और कपड़े चुरा लिये।

अब राजा के लिये तो यह बहुत ही खराब हालत हो गयी। वह अब क्या करे। वह अब अपने महल को कैसे लौटे। वह महल

---

[57] The Unjust King and Wicked Goldsmith (Tale No 33)

को नंगा कैसे जाये। "मैं ऐसा नहीं कर सकता। बहुत दिनों तक सारे लोग मेरी हँसी उड़ाते रहेंगे।" सो उसने पड़ोसी देश में घूमने का विचार किया।

वह उस पड़ोसी देश में घूमता रहा कि घूमते घूमते उसको मोती की एक कीमती माला मिल गयी। वह बोला — "भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि यह माला मुझे मिल गयी। इसको बेच कर अब मैं अपने लिये एक घोड़ा और कपड़े खरीद सकता हूँ। चलूँ चल कर इसको बाजार में बेचने की कोशिश करता हूँ।"

चलते चलते वह उस देश के राजा के शहर पहुँच गया। वहाँ वह एक सुनार के पास पहुँचा और उससे पूछा — "क्या तुम मुझसे एक मोती की माला खरीदोगे। मेरे पास एक कीमती माला है बेचने के लिये। मैं एक नदी पार कर रहा था मुझे यह वहाँ मिल गयी थी।"

सुनार बोला — "देखूँ तो।"

राजा ने वह मोती की माला उसको दिखायी तो वह चिल्ला कर बोला — "ओ चोर इसको तुमने कहाँ से चुराया? मैंने ऐसी दो मालाऐं राजा के लिये बनायी थीं उनमें से एक का पता नहीं चला कि वह कहाँ गयी। ओ चोर तुम ज़रा राजा के पास चलो तो।"

ऐसा कहते हुए उसने पुलिस को बुलाया और उससे उसको राजा के पास ले चलने के लिये कहा। तीनों राजा के पास पहुँचे।

राजा ने सुनार की शिकायत सुनी और हुक्म दिया कि राजा के दोनों पैर काट दिये जायें।

उस राजा की रानी उतनी ही दयालु थी जितना कि राजा बेरहम और अन्यायी था। जब उसने यह सुना तो उसने उससे कहा — "आप इतना बेरहम हुक्म कैसे दे सकते हैं जबकि इस मामले की कोई गवाही नहीं है। और ये सुनार लोग तो होते ही बदमाश हैं।

आप तो जानते ही है कि पैसे के लिये ये लोग कितना झूठ बोलते हैं और कितना धोखा देते हैं। सच कहिये तो मैं तो इस आदमी के कहे पर भी उतना ही विश्वास करती जितना कि सुनार के कहने पर।"

राजा ने उसे डॉट लगायी — "जबान सॅभाल कर बात करो। तुम्हें क्या हक है राजकाज के मामलों में दखल देने का?"

रानी बोली — "मैं चुप नहीं रहॅूगी। कुछ दिनों से मैं आपको दरबार में भी खराब व्यवहार करते देख रही हॅू। आपके सलाहकार सब आपसे नाखुश हैं और आपकी जनता आपसे विद्रोह करने के लिये तैयार है। अगर आप इसी रास्ते पर चलते रहे तो आपका सारा राज्य बर्बाद हो जायेगा।"

राजा रानी की बात सुन कर बहुत गुस्सा हुआ और उससे कमरे के बाहर जाने के लिये कहा। अगली सुबह उसने रानी को उस आदमी के साथ राज्य के बाहर जाने का हुक्म दे दिया जिसके पैर काट डाले गये हों।

रानी ने उसकी इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया उलटे वह ऐसे राजा से पीछा छूट जाने से बहुत खुश थी। वह बिना पैरों वाले आदमी के पास गयी और उसको राजा का हकुम बताया।

फिर उसने उसको एक लम्बी सी टोकरी में बिठाया अपनी कमर पर लादा और एक ऐसी जगह चल दी जहाँ शहर नहीं था। यह वही राजा था जिसके पैर काटने का हुक्म राजा ने दिया था।

वहाँ उसने उसकी एक पत्नी की तरह सेवा की जब तक कि उसके घाव भरे। जल्दी ही वह उसको बहुत अच्छा लगने लगा। उसने भी उसके प्यार का बदला प्यार से दिया तो वह उसकी सचमुच में ही पत्नी बन गयी। कुछ दिनों बाद उसने एक छोटे से बेटे को जन्म दिया।

अपना घर चलाने के लिये वह जंगल से लकड़ी काटती और जा कर उनको शहर में बेच आती।

एक दिन जब वह शहर गयी हुई थी तो उसका पति सो गया और उसका बच्चा जिसको वह उसकी देखभाल में छोड़ गयी थी घुटनों चलते चलते पास के कुँए के किनारे पर पहुँच गया और कुँए में गिर गया।

जब राजा की आँख खुली तो बच्चे को वहाँ न पा कर वह बहुत दुखी हुआ। वह तो बिल्कुल पागल सा हो गया। वह चिल्ला चिल्ला कर रोने लगा — "लगता है कि मेरे बच्चे को किसी जंगली जानवर ने खा लिया है अब मैं क्या करूँ।"

शाम को जब उसकी पत्नी शहर से लौटी तो यह जान कर वह भी बहुत दुखी हुई कि उनका बच्चा वहाँ नहीं था। पर वह एक बहुत ही बहादुर और समझदार स्त्री थी इसलिये उसने खुद भी धीरज रखा और अपने पति को भी समझाया कि हमारी किस्मत में ऐसा ही लिखा था। दुखी मत होइये।

रात को राजा सो नहीं सका वह बच्चे के बारे में ही सोचता रहा और उसकी इच्छा भी करता रहा। यह उसके लिये अच्छा ही हुआ कि वह सो नहीं पाया। क्योंकि रात के तीसरे प्रहर में सूडाब्रोर और बूडाब्रोर[58] नाम की दो चिड़े उनके खुले दरवाजे के पास वाले पेड़ पर आ कर बैठ गये और ये बातें करने लगे।

सूडाब्रोर अपने दोस्त से बोला — "देखो यह दुनियाँ कितनी मुश्किल है। ज़रा देखो तो इस आदमी के साथ क्या हुआ। इसको अपना देश छोड़ना पड़ा और अब यह बेचारा दूसरे देश में भिखारी की तरह रह रहा है जहाँ उसको बड़े अन्यायपूर्ण ढंग से सजा दी गयी। और अब यह अपने सुन्दर से बेटे के दुख में भी परेशान है। इसका बेटा कल दोपहर ही इस कुँए में गिर गया था।"

बूडाब्रोर चिड़ा बोला — "इन बेचारे लोगों को क्या क्या परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं। क्या इनके लिये कुछ नहीं किया जा सकता?"

[58] Sudabror and Budabror birds

सूडाब्रोर बोला — “हॉ हॉ किया जा सकता है। अगर राजा इस कुॅए में कूद जाये तो वह आसानी से बच्चे को बचा सकता है। इसके अलावा उसके पैर भी वापस आ सकते हैं।”

राजा ने उन चिड़ों की बातें सुनी तो उनको सुन कर उसे बड़ा आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी हुई। जैसे ही सुबह हुई उसने अपनी पत्नी को जगाया और उसने उससे रात वाली बात बतायी और उससे सलाह मॉगी। रानी बोली — “आप उन चिड़ों की बात मानें और कुॅए में कूद जायें।”

राजा कुॅए में कूद गया जिससे उसने अपने बच्चे की जान भी बचा ली और अपने पॉव भी वापस पा लिये।

इस घटना के बाद राजा को अपना वजीर मिल गया जो अपने राजा की खोज में इधर उधर मारा मारा फिर रहा था। उससे राजा को पता चला कि उसकी जनता उसका बेसब्री से इन्तजार कर रही है। सो वह अपनी पत्नी और बच्चे के साथ अपने राज्य वापस चला गया। वह फिर से अपनी राजगद्दी पर बैठ गया और पहले की तरह से राज करने लगा।

गद्दी पर बैठते ही सबसे पहला काम उसने यह किया कि अपनी सेना ले कर उस राजा के ऊपर चढ़ाई कर दी जिसने उसके साथ इतना बुरा व्यवहार किया था। वह जीत गया और दूसरे राजा को बहुत शर्म आयी। उसको उससे दया की भीख मॉगनी पड़ी।

उसने उसे बताया कि उस सुनार की वजह से उसे उसके साथ ऐसा व्यवहार करना पड़ा। अब उसको वह जाते ही सजा देगा। राजा ने उसको माफ कर दिया और उसको छोड़ दिया। उसके बाद सारे राज्य में शान्ति और खुशी हो गयी।

राजा उस दूसरे राजा की पत्नी के साथ खुशी खुशी रहा उसके कई और बच्चे हुए। वह काफी दिनों तक ज़िन्दा रहा। जब बूढ़ा हो कर वह मरा तो लोग उसके लिये बहुत रोये।

34 दार्शनिक का पत्थर[59]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार एक राजा फाक परगना[60] में शिकार करने गया। वहाँ दाछीगाम[61] के पास उसने एक बारहसिंगे को देखा तो वह उसके पीछे भाग लिया और कई मील तक उसका पीछा किया पर फिर वह एक जंगल में चला गया और गायब हो गया। राजा अपनी इस बदकिस्मती पर बहुत दुखी और नाउम्मीद हुआ और लौट पड़ा।

जब वह अपने खेमे की तरफ लौट रहा था तो उसने सड़क के किनारे लगी हैज[62] के पीछे से किसी के रोने की आवाज सुनी। उसने उसके अन्दर झाँका कि वहाँ कौन था तो उसने देखा कि वहाँ सत्रह साल की एक बहुत सुन्दर लड़की थी। उसको देख कर वह उसे देखता ही रह गया।

उसने उससे बड़ी नम्रता से पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रही हो?"

---

[59] The Philosopher's Stone (Tale No 34)

[60] Phak Paraganaa

[61] Dachhigaam

[62] Hedge is a long row of dense plants to save the area from people and animals. See its picture above.

वह बोली — "जनाब मैं चीन के एक राजा की बेटी हूँ। मेरे पिता एक लड़ाई में बन्दी बना लिये गये हैं और मैं अपने पिता के दुश्मन की बन्दी बनाये जाने के डर से वहाँ से भाग निकली हूँ।

मैं पहले एक जगह गयी जहाँ मैं डूब जाना चाहती थी पर गाँव वालों को मेरे इरादों का पता चल गया उन्होंने आ कर मुझे बचा लिया। उसके बाद मैं यहाँ चली आयी। आपने मेरी कहानी तो सुन ली अब आप अपनी बतायें।"

राजा बोला — "ओ सुन्दरी। मैं इस देश का राजा हूँ और शिकार करने निकला हूँ। यह मेरी खुशकिस्मती है कि मैंने तुम्हें देख लिया वरना तुम यहाँ पता नहीं कब तक अकेली पड़ी रहतीं।"

यह सुन कर वह लड़की रो पड़ी।

राजा ने फिर पूछा — "सुन्दरी तुम क्यों रोती हो?"

लड़की बोली — "मैं अपने माता पिता और देश के लिये रोती हूँ। मैं अपने लिये भी रोती हूँ। मैं यहाँ क्या करूँगी। मेरा यहाँ कोई घर नहीं है मेरा यहाँ कोई दोस्त नहीं है। बिना घर और दोस्त के मैं कैसे रहूँगी।"

राजा बोला — "तुम रोओ नहीं। आगे से मैं तुम्हारी देखभाल करूँगा। आओ मेरे साथ मेरे महल चलो अबसे तुम वहीं रहना।"

लड़की बोली — "हाँ मैं आपके साथ खुशी खुशी चलूँगी। आप मुझे अगर अपनी पत्नी बनायेंगे तो मैं आपसे शादी भी कर लूँगी। मैं आपको किसी भी चीज़ के लिये मना नहीं कर सकती।"

राजा बोला — "तो चलो प्रिये तब तुम मेरे साथ चलो।"

महल पहुँच कर उन दोनों की शादी हो गयी। राजा अपनी इस चीन वाली पत्नी को धीरे धीरे और प्यार करने लगा। उसने उसके लिये डल झील के पास पाँच मंजिल का एक महल बनवाया और उसके साथ ज़्यादा से ज़्यादा समय बिताने लगा। उससे भी ज़्यादा जितना कि वह अपनी दूसरी पत्नियों के साथ कुल मिला कर बिताता था।

पर उसको यह पता ही नहीं था कि वह किस नीच लड़की के साथ रह रहा था जिससे उसको इतना प्यार हो गया था। और न उसको यह पता था कि वह एक बहुत ही बुरी बीमारी उसको दे रही थी।

धीरे धीरे राजा के पेट में दर्द रहने लगा। उसने कई हकीमों[63] को बुला भेजा। कुछ ने उसको किसी एक बात की सलाह दी कुछ ने किसी और की। पर किसी की दवा और सलाह उसको ठीक नहीं कर सकी।

एक दिन एक जोगी अपने गुरू के लिये दूध गंगा से उसका पानी लाने और हरि पर्वत से मिट्टी लाने के लिये इस देश के ऊपर से उड़ा तो उसने यह शानदार महल देखा जो राजा ने अपनी चीन वाली पत्नी के लिये बनवाया था। कुछ आराम करने के इरादे से वह नीचे उतरा और उस महल में घुस गया।

---

[63] Hakim – a doctor who knows Greek system of medicine.

उसने वह पवित्र पानी एक कमरे में एक कोने में रखा वह पवित्र मिट्टी उसके दूसरे कोने में रखी और एक कीमती मरहम तकिये के नीचे रखा और राजा के बिस्तर पर लेट गया।

इसी बीच राजा आ गया। वह अपने बिस्तर पर एक जोगी को आराम करते देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गया। फिर उसकी निगाह मरहम की उस छोटी सी डिबिया पर गयी जो उसके तकिये के नीचे रखी हुई थी पवित्र पानी एक कोने में रखा हुआ था और दूसरे कोने में पवित्र मिट्टी रखी हुई थी। यह सब देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसके मन में यह इच्छा जाग उठी कि देखूँ कि यह जोगी उठ कर क्या करता है। सो वह वहीं बैठ गया और उसके उठने का इन्तजार करने लगा। उसको जोगी के उठने का बहुत देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा।

पर जब जोगी उठा तो वह तो यह देख कर भौंचक्का रह गया कि न तो वहाँ वह पवित्र पानी था न पवित्र मिट्टी थी और न ही उसकी कीमती मरहम की डिबिया थी। असल में राजा ने उन तीनों को ले लिया था।

जोगी को जागा हुआ देख कर राजा बोला — "ओ जोगी तुम डरो नहीं मैंने वे सब चीज़ें सँभाल कर रख दी हैं। अब तुम मुझे यह बताओ कि तुम यहाँ कैसे और क्यों आये। फिर मैं तुम्हें वे सब दे दूँगा।" जोगी ने उसे सब कुछ बता दिया और राजा ने भी उसकी वे

चीज़ें उसे वापस कर दीं। उसने राजा को फिर सिर झुकाया और महल छोड़ कर चला गया।

वह बहुत जल्दी ही अपने गुरू के पास पहुँच गया। गुरू ने उसके देरी से आने की वजह पूछी तो उसने उनको अपने देरी से आने की वजह बता दी। उसने उनको यह भी बताया कि कैसे वह राजा के बिस्तर में सोता पाया गया और राजा ने उससे कैसे बातचीत की।

गुरू ने जब यह सुना तो बोला — "वह अच्छा आदमी था। मैं उसका आभारी हूँ कि उसने तुम्हें तम्हारा कीमती मरहम और दूसरी चीज़ें वापस कर दीं। चलो मुझे तुम उसके पास ले चलो।"

उस मरहम की सहायता से वे दोनों उस देश के ऊपर उड़े और राजा के पास पहुँचे। जोगी ने राजा से कहा कि उसके गुरू उससे मिलने के लिये और उसे धन्यवाद देने के लिये आये हैं कि वह आपके बहुत आभारी है कि आपने मुझे उनकी चीज़ें वापस कर दीं।

तब गुरू ने कहा — "हॉ मैं आपको धन्यवाद देने के लिये आया हूँ। आप अपनी खुशी से मुझसे कोई भी चीज़ मॉग लें मैं आपको वह दे दूँगा।"

राजा उसके सामने झुकते हुए बोला — "ओ ऋषि मुझे एक रोग लग गया है। मेरा पेट बहुत दर्द करता है। सारे हकीमों की कोई जानकारी उसको ठीक नहीं कर सकी। अगर आप उसको ठीक कर दें तो मैं आपका बहुत आभारी होऊँगा।"

ऋषि ने उसकी तरफ देखते हुए कहा “ठीक है आप मुझे अपना पेट दिखाइये।” कुछ देख कर उसने राजा से पूछा — “क्या आपने अभी अभी कोई नयी शादी की है?”

“हॉ।” कह कर राजा ने उसको अपनी चीनी पत्नी से मिलने के हालात और फिर उससे शादी की बात पूरी तरीके से बता दी।

ऋषि बोला — “मुझे इसी का शक था। अगर आप बिना दवा के चालीस दिन और रहते तो आप मर जाते। पर अब आप सुरक्षित हैं। मैं आपको ठीक कर सकता हूॅ। जो मैं कहता हूॅ आप वही करें तो आपको डरने की कोई जरूरत नहीं है।

आप आज की शाम अपने रसोइये को अपनी पत्नी के खाने ज़्यादा नमक डालने के लिये कहिये और फिर उस कमरे में जहॉ वह सोती है वहॉ यह पक्का कर लीजिये कि पीने के लिये पानी न हो। आप खुद भी सारी रात जागते रहिये और सुबह होने पर मुझे बताइये कि क्या हुआ। आप डरना नहीं आपका कोई नुकसान नहीं होगा।”

इतना कह कर ऋषि और उसका चेला दोनों चले गय। राजा ने ऋषि का कहना माना।

राजा ने देखा कि बीच रात में रानी उठी। उसको प्यास लगी थी। उसने पहले अपने कमरे में पानी खोजा पर पानी न मिलने पर पहले उसने देखा कि उसका पति सोया हुआ है या नहीं फिर उसने एक सॉपिन का वेश रखा और बाहर चली गयी।

वह झील पर पानी पीने के लिये गयी। वहाँ जा कर उसने पानी पिया और पानी पी कर अपने कमरे में वापस आ कर फिर एक स्त्री का रूप रखा और अपने बिस्तर पर सो गयी।

राजा ने यह सब देखा और ऋषि को बताया तो ऋषि बोला — "राजा साहब यह स्त्री नहीं है बल्कि एक वीहा है। अब आप मेरी बात सुनें। अगर किसी साँप पर सौ साल तक किसी आदमी की नजर नहीं पड़ती तो उसके सिर पर एक ताज बन जाता है और वह शाहमार[64] बन जाता है।

और अगर उसके अगले सौ साल तक भी उस पर किसी आदमी की नजर नहीं पड़ती तो वह अजगर बन जाता है। और अगर तीन सौ साल तक उस पर किसी आदमी की नजर नहीं पड़े तो वह वीहा बन जाता है।

वीहा अपने आपको कितना भी लम्बा कर सकता है। उसके पास बहुत ताकत होती है और वह अपनी शक्ल भी बदल सकता है। उसको स्त्री की शक्ल लेना बहुत अच्छा लगता है ताकि वह आदमियों के साथ रह सके। राजन आपकी पत्नी वही है।"

राजा एकदम से चिल्ला पड़ा — "उफ़। काश मुझे यह पहले से मालूम होता। पर इस भयानक जीव से बचने का कोई उपाय है?"

[64] Shahmaar is a special kind of snake which becomes Shahmaar when it is not looksed up on by anybody for 100 years. And if it is not seen by anyother by any man for another 100 years, it becomes a python. And it is not seen by any other man for another 100 years (total of 300 years) he becomes Veehaa. It possesses some special ppwers, especially of taking the shape of a woman.

ऋषि बोला — "हॉ जरूर है पर आपको थोड़ा सब्र करना होगा। आप अपनी पत्नी के पास वैसे ही जाते रहिये जैसे अब तक जाते रहे हैं। क्योंकि अगर उसको शक हो गया तो वह आपको मार देगी। उसकी एक सॉस से ही सारा देश नष्ट हो जायेगा।

इस बीच आप लाख का एक घर बनवाइये और उस पर सफेद रंग की कलई पुतवा दीजिये ताकि उसकी लाख दिखायी न दे। उसमें चार कमरे होने चाहिये – एक बैठने का कमरा एक खाने का कमरा एक सोने का कमरा और एक नहाने का कमरा। खाने के कमरे में एक कोने में एक बड़ा ओवन होना चाहिये जो ढका हुआ हो।

जब यह सब कुछ तैयार हो जाये तो आप बहाना करें कि आप बीमार हैं। आप हकीम से कहलवायें कि राजा को चालीस दिन अकेले रहना है। उससे यह कहलवा कर आप उस लाख के मकान में चले जायें। उसमें उस स्त्री के अलावा और कोई नहीं आयेगा।"

जब यह सब तैयार हो गया तो वह चीनी स्त्री तो बहुत खुश हुई क्योंकि अब राजा कम से कम चालीस दिन के लिये केवल उसी का था। अब वह उसकी बीमारी में जो चाहे कर सकती थी।

ऐसा कुछ दिन तक चला। उसके बाद ऋषि राजा से बात करने के लिये फिर वहॉ आया और राजा से कहा कि एक दिन वह खाने के कमरे का ओवन जला कर रखे और अपनी पत्नी से एक खास रोटी बनाने के लिये कहे।

जब वह यह देखने में लगी हो कि वह रोटी कैसी पक रही है तो वह उसको भट्टी में धक्का दे दे और जितनी जल्दी हो सके उस ओवन का दरवाजा बन्द कर दे ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह बाहर निकल आये और सारे देश को ही नष्ट कर दे।

राजा ने ऐसा ही किया। जब यह सब हो गया तो गर्मी बढ़ाने के लिये उसने घर में भी आग लगा दी। ऋषि ने जब यह सुना कि राजा ने क्या किया तो वह बोला — "यह आपने बहुत अच्छा किया। अब आप अपने महल जाइये और वहाँ दो दिन तक इन्तजार कीजिये। तीसरे दिन आप मेरे पास आइये तो मैं आपको एक आश्चर्यजनक दृश्य दिखाऊँगा।"

तीसरे दिन ऋषि राजा को साथ ले कर उस जगह गया जहाँ वह लाख का घर खड़ा था पर वहाँ तो राख के सिवा और कुछ नहीं था। ऋषि बोला — "राजा साहब ध्यान से देखिये आपको यहाँ एक पत्थर दिखायी देगा।"

राजा ने ध्यान से देखा तो उसको वह पत्थर मिल गया। वह बोला — "हाँ यह रहा पत्थर।"

ऋषि ने पूछा — "यह तो ठीक है पर आप क्या लेना चाहेंगे पत्थर या राख?"

राजा बोला — "पत्थर।"

ऋषि बोला — "ठीक। आप पत्थर ले लीजिये मैं राख ले लेता हूँ।" कह कर उसने वह सारी राख समेटी उसे अपने कपड़े में बाँधा

और अपने चेले के साथ गायब हो गया। उसके बाद राजा अपने महल को चला आया।

उस दिन के बाद से राजा ठीक हो गया। वह पत्थर जो उसने चुना था बाद में वह संगीपारस[65] साबित हुआ जिसके छूने से कोई भी धातु सोना बन जाती है। पर उस राख में क्या गुण था यह राजा को कभी पता नहीं चला क्योंकि वह फिर कभी उस ऋषि और जोगी से मिला ही नहीं।

इसका दूसरा रूप

यह कथा एक और तरीके से भी कही जाती है। एक बार की बात है कि काश्मीर में अली मरदान खान[66] नाम का एक राजा राज करता था।

एक दिन वह शालीमार के पास शिकार खेलने के लिये गया। वहाँ दो आदमी उसके पास आये और उससे बोले — "राजा साहब अगर आप हमारी बात सुन लेंगे तो हमें बड़ी खुशी होगी। हमारी प्रार्थना है कि आप इस जगह से आगे न जायें। कहीं ऐसा न हो कि अजगर आपको निगल जाये। यह अजगर यहाँ अक्सर घूमता रहता है।"

---

[65] It means Touchstone – Paaras stone whose touch makes iron gold.

[66] Ali Mardaan Khaan – although people invariably speak about him as a king but Ali Mardaan Khaan was only the Governor of Kashmir in the Emperor Shah Jehan days (cir. 1650). Read Ali Mardaan Khaan's one other story, some another version, "The Snake Woman and King Ali Mardaan Khaan" in "Tales of the Punjab" written by Flora Annie Steel in 1894. Its Hindi translation is available, translated by Sushma Gupta.

राजा बोला — “आप लोग यह क्या बेहूदी बात कर रहे हैं।”

वे आदमी बोले — “नहीं हम कोई बेहूदा बात नहीं कर रहे हैं। हम आपको सच बता रहे हैं। हमने उसे अपनी ऑखों से देखा है। वह हर शाम पानी पीने के लिये झील के किनारे जाता है और इसी जंगल से गुजरता है। आपको पहले से सावधान करना हमारा फर्ज था बाकी आप जानें। हम आपसे फिर प्रार्थना करते हैं कि आप यहॉ से आगे न जायें।”

“ठीक है।” कह कर राजा ने अपना घोड़ा वापस किया और अपने घर चला गया। घर जा कर उसने अपने वजीरों को जो कुछ उसने आज सुना था वह सब कहने के लिये बुलाया। यह सब बता कर उसने उनसे उनकी सलाह मॉगी कि उस अजगर को कैसे मारा जाये।

उन्होंने उसको सलाह दी कि बहुत सारी भेड़ों की खाल चूने से भर कर उसी रास्ते पर डाल दी जायें जहॉ से वह अजगर रोज पानी पीने जाता था। साथ ही जहॉ वह अजगर पानी पीता था उसी जगह के पास दो गड्ढे खोद दिये जायें जिनमें तेल भरवा दिया जाये।

उनका सोचना यह था कि जब अजगर चूना भरी भेड़ की खाल देखेगा तो सोचेगा कि वे असली भेड़ हैं और उनको निगल लेगा। इसके अलावा जब वह तेल से भरे गड्ढे देखेगा तो उसे लगेगा कि वे पानी से भरे हैं और उनमें से तेल पी कर अपनी प्यास बुझाने की कोशिश करेगा।

इस तरह से उसके पेट में बहुत ज़ोर की जलन होगी जो उसको मार देगी। राजा ने उनकी सलाह मान ली उसको काम में लाया गया और इस तरह से अजगर को मार दिया गया।

अली मर्दान खान उसका ढाँचा देखने के लिये गया और अपने सिपाहियों से उसको जलाने के लिये कहा। उसने दो बूढ़े लोगों की सहायता से उसकी वह गुफा भी ढूँढी जिसमें वह रहता था और उसके अन्दर गया।

वहाँ उसको एक बन्द दरवाजा मिला जिसे उसने खोला। यह दरवाजा एक कमरे में खुलता था। इस कमरे में उसको एक छोटा सा बक्सा मिला और इस बक्से को खोलने पर उसमें रखा एक पत्थर मिला। इत्तफाक से यह पत्थर संगीपारस निकला जिसके छूने से हर धातु सोना बन जाती है। वह उसे उठा लाया।

इसका एक और रूप

एक बार की बात है कि एक आदमी तख्ते सुलैमान[67] पर चढ़ने के लिये चला। उस दिन दिन बहुत गर्म था सो उसको बहुत जल्दी ही प्यास लग आयी। उसने अपनी जेब से एक नाशपाती निकाली और उसे छीलने लगा।

[67] Takhte-Suleimaan – a hill near Srinagar about 1,000 feet above the level of the valley. It is called Sir-j-Sur or Shiv's Head or Shankaracharya.

जब वह नाशपाती छील रहा था तो उसके हाथ से चाकू फिसल गया और उसका हाथ कट गया। उस आदमी ने खून चाकू से साफ करके फिर उसे एक पत्थर पर घिस कर उसका खून साफ कर के अपनी जेब में रख लिया।

पहाड़ी पर पहुँच कर वह वहाँ बैठ गया। वहाँ पहुँच कर उसको भूख भी लग आयी सो उसने एक दूसरी नाशपाती निकाली और अपनी जेब से चाकू निकाला और उसको छीलने ही वाला था कि उसने देखा कि उसका चाकू तो सोने का हो गया था।

"यह कैसे हुआ?"

यह देख कर उसको कोई शक नहीं रहा कि उसने अपना चाकू जरूर ही किसी संगीपारस पर घिस दिया था। वह तुरन्त ही वापस आया पर अफसोस उसको वह पत्थर फिर नहीं मिला। पर हम यह जानते हैं कि वह पत्थर अभी भी जरूर ही वहीं कहीं होगा।

List of the Tales of Folktales of Kashmir

Part 1

1. Seven Legged Beast
2. The Cat Who Became a Queen
3. Good King Hatim
4. Metempsychosis
5. The Charmed Ring
6. The Crow Girl
7. One Laksh Rupees For a Bit of Advice
8. Ogress Queen
9. The Goldsmith and His Friends
10. The Tale of a Princess
11. The Prince Who Was Changed into a Ram
12. Saiyid and Said
13. The Cruel Merchant
14. The Man From Shiraz
15. Shabrang Prince and Thief

Part 2

16. The Troublesome Friend
17. The Wicked Stepmother
18. The True Friendship
19. Three Blind Men
20. All For a Paisa
21. Pride Abased
22. The Two Brothers
23. Base Friend
24. Haya Band and Zuhra Khotan
25. The Clever Jackal
26. A Stupid Boy
27. Four Princes Turned Into Stones
28. Brave Princess
29. The Three Princes
30. The Diligent King
31. The Ivory City and Its Fairy Princess
32. A Strange Request
33. The Unjust King and Wicked Goldsmith
34. The Philosopher's Stone
35. How the Wicked Sons Were Duped

Part 3
36. A Stupid Husband and His Clever Wife
37. The Prayerful Faqir
38. Unity is Strength
39. The Pir of Phattapur
40. The Sagacious Governor
41. Their Only Ruby
42. The Jackal King
43. The Black and White Beards
44. The Story of a Weaver
45. The Robbers Robbes
46. The Young Gambling Merchant
47. The Day Thief and the Night Thief
48. The Cunning Goldsmith
49. How the Princess Found Her Husband
50. The Clever Parrot
51. The Malecontent Cured
52. The Stupid Peasant
53. Karm or Dharm
54. Four Wicked Sons and Their Luck
55. Sharaf the Thief
56. The King and His Treacherous Wazir

Part 4
57. The Shipwrecked Prince
58. Gagar Wol and His Servant Ratun
59. Wicked Queens
60. The Four Princes
61. Jogi's Daughter
62. Gullala Shah
63. Why the Fish Laughed
64. Nagray and Himal

Indian Classic Books of Folktales Translated in Hindi
by Sushma Gupta

12th Cen — **Shuk Saptati.**
No 29 — By Unknown. 70 Tales. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — ।

c1323 — **Tales of Four Darvesh**
No 24 — By Amir Khusro. 5 Tales. Tr by Duncan Forbes.
किस्सये चहार दरवेश

1868 — **Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends**
No 23 — By Mary Frere. 24 Tales. (5th ed 1889).
पुराने दक्कन के दिन या हिन्दू परियों की कहानियाँ

1872 — **Indian Antiquary 1872**
No 34 — A collection of scattered folktales in this journal. 18 Tales.

1880 — **Indian Fairy Tales**
No 30 — By MSH Stokes. London, Ellis & White. 30 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

1884 — **Wide-Awake Stories – Same as Tales of the Punjab**
By Flora Annie Steel and RC Temple. 43 Tales.

1887 — **Folk-tales of Kashmir.**
No 11 — By James Hinton Knowles. 64 Tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं

1889 — **Folktales of Bengal.**
No 4 — By Rev Lal Behari Dey. Delhi : National Book Trust. 22 Tales.
बंगाल की लोक कथाऐं

1890 — **Tales of the Sun, OR Folklore of South India**
No 18 — By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri.
London : WH Allen. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण भारत की लोक कथाऐं

1892 — **Indian Nights' Entertainment**
No 32 — By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन

1894 **Tales of the Punjab.**
No 10 By Flora Annie Steel. Macmillan and Co. 43 Tales.
पंजाब की लोक कथाऐं

1903 **Romantic Tales of the Panjab**
No 31 By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ

1912 **Indian Fairy Tales**
No 28 By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 29 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

1914 **Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from Deccan**.
No 22 By Charles Augustus Kincaid. 20 Tales.
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न्। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales**.**
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियाँ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911.
Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Panjab
By Charles Swynnerton – a collection of short tales given in his two books – "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment" given above – No 31 and 32. **1903**.

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022